उत्तरप्रदेश

जैविक देश

क्यूबा विश्व में 100 प्रतिशत जैविक देश है.

प्रथम

आस्ट्रेलिया 10,500,000 हेक्टेयर में जैविक खेती कर विश्व में आज प्रथम है. ओस्ट्रेलिया अपनी कुल भूमि का मात्र 2.31 प्रतिशत जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है.

द्वितीय

अर्जेन्टीना 3192000 हेक्टेयर में जैविक खेती करके दूसरे है. अर्जेंटीना मात्र 1.89 प्रतिशत जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है.

तृतीय

इटली 1230000 हेक्टेयर में खेती करके तीसरे है. इटली 7.94 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

चौथा

अमेरिका 9,50,000 हेक्टेयर में खेती करके चौथे है. अमेरिका 0.23 प्रतिशत ही जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है. अमेरिका के पास में 936 मिलियन हेक्टेयर में से 177 मिलियन हेक्टेयर उपजाउ भूमि है. अमेरिका में 90,000 केचुआ फार्म कार्यशील हैं और जापान को हजारो डालर के केचुए निर्यात किये गये हैं. अमेरिका वर्मी कल्चर का उपयोग मलमूत्र अवमल तथा कार्बनिक पदार्थों को पुनः चक्रित करने का कार्य व्यवसायिक स्तर पर किया जा रहा है.

अमेरिका में अक्तूबर 1980 से अग्निहोत्र कृ‍ि का कार्य प्रारम्भ किया गया था. 17 एकड़ भूमि पर अग्निहोत्र कृ‍ि का कार्य प्रारम्भ किया गया था.

सेम

सेम की फसल पर अग्निहोत्र कृ‍ि का प्रयोग सबसे पहले किया गया था. श्रीमती जेरी होजेस के द्वारा प्रयोग करने के बाद में पाया गया कि 12 गुना 16 फुट की कुटिया में 4 घंटे अग्निहोत्र हवन करने के बाद में 1989-90 में प्रति 100 वर्गफूट भूमि पर सेम की फसल 43.75 पांउड हुई थी.

रासायनिक खाद की तुलना में वृद्धि

रासायनिक खाद की तुलना में अग्निहोत्र कृ‍ि करने पर 961 प्रतिशत वृद्धि हुई थी. अमेरिका में अग्निहोत्र कृ‍ि पर अनुसंधान करने के लिए हर साल बहुत ही अधिक धन खर्च किया जाता है.

अग्निहोत्र विश्वविद्यालय

अमेरिका में अग्निहोत्र पर गहन अनुसंधान करने के लिए अग्निहोत्र विश्वविद्यालय प्रारम्भ किया गया है. अमेरिका में 4 घंटे महामृत्युंजय यज्ञ हर दिन किया जाता है.

पांचवा

ब्रिटेन 479631 हेक्टेयर में खेती करके पांचवे है. ब्रिटेन 3.96 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

छठवा

उरुग्वे 678481 हेक्टेयर में खेती करके छठवे है. उरुग्वे 4 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

सातवा

जर्मनी 632165 हेक्टेयर में खेती करके सातवे है. जर्मनी 3.7 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है. जर्मनी में 2001 में जैविक खेती 2 प्रतिशत की जाती थी जो आज 7 प्रतिशत की जा रही है.

1974 से ही भारत से अग्निहोत्र को पूरी तरह से समझकर अग्निहोत्र पर बहुत ही गहराई से अनुसंधान कर विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्नित कर चुका है.

पश्चिमी जर्मनी बोडेन्सी संभाग की फार्मास्यूटिकल्स रिसर्च इंस्टीटयूट की प्रमुख श्रीमती मोनिका येले तथा उनके पति श्री बर्थोल्ड येले के द्वारा लगातार अनुसंधान करने के बाद में महत्वपूर्ण निर्णय लिए थे. जर्मनी ने अग्निहोत्र के लिए बहुत अधिक खर्च किया है. रासायनिक खाद एवं जहरीले कीटनाशकों के लगातार प्रयोगों के कारण स्वास्थय पर गंभीर प्रभाव के कारण ही जर्मनी बहुत अधिक परेशान था.

अग्निहोत्र की भस्म का दवा के रुप में प्रयोग भी जर्मनी ने ही विश्व को बताया था. अग्निहोत्र करने की पूरी प्रक्रिया को भी जर्मनी ने सबसे पहले पूरी तरह से समझने का प्रयत्न किया था. अग्निहोत्र की प्रदू-णरोधी क्षमता का अध्ययन कर विश्व के सामने आश्चर्यजनक परिणाम दिखाये. अग्निहोत्र की भस्म का वैज्ञानिक परीक्षण कर अग्निहोत्र भस्म के रोगप्रतिरोधक गुणों को विश्व को बताया था. सबसे पहले जर्मनी ने अग्निहोत्र के गुणों को अच्छी तरह से परखा था. अग्निहोत्र कृ-ि अग्निहोत्र की भस्म से ही की जाती है इसलिए अग्निहोत्र कृ-ि करने के लिए जर्मनी ने वैज्ञानिक आधार तैयार किया था.

आठवा

स्पेन 485079 हेक्टेयर में खेती करके आठवे है. स्पेन 1.66 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

नौवा

कनाडा 430600 हेक्टेयर में खेती करके नवें है. कनाडा 0.58 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

निर्यात

कनाडा अमेरिका को 30,000 डालर के केचुओं का निर्यात हर साल करता है.

दसवा

फ्रांस 419750 हेक्टेयर में खेती करके दसवें है. फ्रांस 1.4 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

25 प्रतिशत जैविक कृ-ि

डेनमार्क में जैविक खेती के फार्मों की संख्या 1989 में मात्र 401 थी जो 2005 में बढ़कर 9300 हो गयी है. आज कुल कृषि का 25 प्रतिशत भाग जैविक खेती के द्वारा किया जाता है.

जापान

जापान 15,000 टन जीवित केचुआ ईल मछली के संवर्धन के लिये आयात करता है. जापान 15,000 टन केचुआ कागज एवं धागा मिलों के व्यर्थ को पुनः चक्रित करने हेतु आयात करता है.

रुस

इस समय रुस के पास 1708 मिलियन में से मात्र 126 मिलियन हेक्टेयर भूमि ही उपजाउ है. बाकी बंजर या बर्फीली है.

चीन

चीन के पास 960 मिलियन हेक्टेयर में से 124 मिलियन हेक्टेयर उपजाउ है.

प्राचीन गोवंश

भारत से विश्व में गयी प्राचीन गोवंश को एक बार फिर से चरम सीमा तक विकसित करने की आवश्यकता है.

हरित क्रांति के नाम पर अधिक अन्न उपजाने के नाम पर रासायनिक खाद का उपयोग चरम सीमा पर पहुंचाया गया है.

पी.एल. 480

रासायनिक खाद का आयात बहुत ही कठिन शर्त पर पब्लिक ला 480 के समझौते के अंतर्गत किया गया.

33000 प्रकार की बीमारियां

रासायनिक खाद के कारण 33000 प्रकार की बीमारियां जमीन में उत्पन्न हुई जिसे रोकने के लिए जहरीले कीटनाशकों का प्रयोग करना पड़ रहा है.

100 प्रतिशत जैविक राज्य

उत्तरप्रदेश राज्य में संगठित स्तर पर बहुत कठोर परिश्रम कर सबसे पहले जैविक बोर्ड बनाकर रासायनिक खाद तथा कीटनाशक पर प्रतिबंध लगाकर गोबर गैस स्लरी, अग्निहोत्र कृ-ि आदि पर ध्यान देकर 100 प्रतिशत जैविक राज्य बनाने पर कतलखानों से मुक्ति मिलेगी.

407 लाइसेंस प्राप्त कतलखाने

देश में 407 लाइसेंस प्राप्त कतलखानों में सबसे अधिक मांस के उत्पादन करने के कारण उत्तरप्रदेश अकाल, बाढ़, ओजोन छेद में वृद्धि, भूकंप, तुफान जैसे 75 प्रकोपों के करण पर्यावरण का बहुत ही तीव्र गति से नाश कर प्रति व्यक्ति को दूध 300 ग्राम से कम दे पा रहा है.

2014 के चुनावों को ध्यान में रखकर केंद्र सरकार को मांस के स्थान पर गो दूध पर ध्यान देने की आवश्यकता है.

रा-ट्रीय अहिंसा मंच 2014 में गोवंश के समर्थन करने वाले उम्मीदवार को ही मत देने के लिए तैयारियां कर रहे हैं.

प्रथम

भारत में उत्तरप्रदेश दूध उत्पादन में 2009 10 में 2.40 करोड टन दूध उत्पादन कर 12 सालों से सर्वप्रथम है. उत्तरप्रदेश में मानव की बढोतरी के अनुरुप दूध नहीं बढ पा रहा है.

विश्व में गो से दूध उत्पादन में विकसित देश बहुत अधिक प्रगति कर चुके हैं इस कारण उत्तरप्रदेश को भैंस के स्थान पर गो से दूध उत्पादन में ध्यान देने की आवश्यकता है.

660 ग्राम

आंध्रप्रदेश दूध उत्पादन में दूसरे रहकर भी आंध्र में 600 ग्राम से थोडा कम प्रति व्यक्ति को दूध पहुंच पा रहा है.

हरियाणा

हरियाणा भी दूध उत्पादन में बहुत ही पीछे रहकर भी उत्तरप्रदेश से अधिक दूध प्रति व्यक्ति को दे पा रहा है. गोमाता के दूध की जितनी आवश्यकता वर्तमान में उत्तरप्रदेश में है उतना दूध उत्पादन नहीं होने के कारण ही अभाव की स्थिति है.

उत्तरप्रदेश गो सेवा आयोग के द्वारा गोवंश के संवर्धन करने के लिए अहिंसा मंत्रालय, कामधेनु नगर, गो अभ्यारण जैसे अनेकों उल्लेखनीय कदम उठाने की आवश्यकता है.

उत्तरप्रदेश में गोवंश की संख्या में वर्तमान में उल्लेखनीय कमी आने के कारण ही राज्य सरकार को गंभीरता के साथ में ध्यान देना अनिवार्य है.

उत्तरप्रदेश में गोवंश विरोधी सरकार का राज्य लगातार 10 सालों से था जिसे बदलना अनिवार्य है.

सरकार की गलत नीतियों के कारण ही कतलखानों को बढ़ावा देने अनुदान के रुप में अपार धन उपलब्ध करवाने के कारण कतलखानों की बाढ़ आ रही है. जिसके कारण ही कसाईयों को सुनहरे अवसर मिल रहे हैं.

केंद्रीय कानून के अभाव में ही भारतीय नस्ल के अच्छे सांढ की भारी कमी उत्पन्न होने के कारण ही दूध का उत्पादन लगातार घट रहा है.

विश्व के विकसित रा-द्रों की तुलना में गोवंश की संख्या अधिक रहने के बावजूद दूध का उत्पादन बहुत ही कम है.

भगवान श्री राम

भगवान श्री राम के समय में गोवंश के विकास चरम सीमा तक पहुंचने के कारण ही उत्तरप्रदेश का विश्व में बोलबाला था.

भगवान श्री कृ-ण

भगवान श्री कृ-ण के समय में सबसे अधिक गोवंश मथुरा के आसपास में नंदगांव बरसाना में रहने के कारण दूध की नदियां उत्तरप्रदेश में बह रही थी.

जनसंख्या वृद्धि के अनुरुप दूध के उत्पादन में वृद्धि नहीं हुई है तथा गाय माता के दूध में बहुत ही अधिक कमी दिखाई दी है. महाभारत काल में मानव की जनसंख्या से गोवंश की जनसंख्या 6 गुना थी.

कार्बन क्रेडिट

कार्बन क्रेडिट के बारे में उत्तरप्रदेश में जागरुकता बहुत ही कम है. भारत ने 1000 करोड़ रु. कार्बन क्रेडिट से प्राप्त कर विश्व में अपना विशे-ा स्थान बनाया है.

कार्बन क्रेडिट के बारे में जागरुकता उत्पन्न करने पर गोवंश स्वावलंबी बन जायेगा.

गोशालाओं में भी कार्बन क्रेडिट के बारे में जानकारी मिलने पर गोशालाएं लाभ की स्थिति में आयेंगी.

गोचर भूमि लगभग समाप्त होने के कारण ही वर्तमान में भार स्वरुप लगने के कारण गोपालन में उल्लेखनीय कमी आयी है.

गोचर भूमि को ब्राजील की तरह ही एक बार फिर से विकसित करने पर भारत दूध उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति कर सकेगा.

विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा गोवंश के संवर्धन करने के लिए निकाली गयी. विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा के बाद अनुकूल परिणाम देखने मिल जायेंगे.

गोमय वस्ते लक्ष्मी

कामधेनु का वरदान गोमय का उपयोग गोबर से वर्तमान में बिजली उत्पादन, जैविक खाद, गोबर गैस, सीएनजी, पंचगव्य, महापंचगव्य, मच्छर भगाने की कोइल, अग्निहोत्र के कंडे, ईंधन के उपले, बर्तन मांजने की राख, एक्जीमा साबुन, नहाने का साबुन, दर्द निवारक तेल, आंखों की दवा, हवन समिधा, गोपाल नस्य, केशवर्धक लोशन, फेस पैक, क्रीम लोशन, अंगराग पावडर, मलहम, मंजन, टाइल्स, कागज, कवेलू, प्लास्टर, डिस्टेम्पर आदि अनेकों आवश्यक उत्पाद तैयार किये गये हैं.

एल.पी.जी.

एल.पी.जी. गैस में सरकार को बहुत अधिक नुकसान है. एल.पी.जी. गैस पर अनुदान देने की स्थिति में सरकार वर्तमान में नहीं है.

गांवों में गोबर गैस के उपयोग को बढ़ाने के लिए एल.पी.जी. के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना आवश्यक है.

पारिवारिक गोबर गैस संयंत्र

उत्तरप्रदेश राज्य पर्यावरण के असंतुलन के कारण जनता के आर्थिक तथा स्वास्थय लाभ के लिए 19,38,000 पारिवारिक गोबर गैस संयंत्र लगाने का लक्ष्य रखा गया हे लेकिन गांवों में एल.पी.जी. गैस पर पूरी तरह से निर्भर होने के कारण ही गोबर गैस के लाभों की जागरुकता के अभाव में मात्र 4,07,966 पारिवारिक गोबर गैस संयंत्र ही लग पाये हैं.

गोबर गैस संयंत्र वर्तमान में पर्यावरण के कारण उत्तरप्रदेश में अनिवार्य है. कार्बन क्रेडिट प्राप्त करने के लिए जनता में जागरुकता का पूरी तरह से अभाव है. 1,69,17,000 गोवंश के गोबर का उपयोग करने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है.

गोपालन में आगे

उत्तरप्रदेश गोपालन में सभी राज्यों में सबसे आगे है. उत्तरप्रदेश में गोबर हर दिन बहुत बड़ी मात्रा में उपलब्ध है. गोबर गैस संयंत्र के लिए भी बहुत ही आगे है.

गोबर गैस स्लरी

गोबर गैस स्लरी से खेती में बढ़ोत्तरी 20 प्रतिशत निश्चित है. उत्तरप्रदेश को 100 प्रतिशत जैविक राज्य बनाने की दिशा में गोबर गैस स्लरी ही मुख्य साधन है. गोबर गैस स्लरी बाय प्रोडक्ट के रुप में गोबर गैस से तीन गुना प्राप्त होती है.

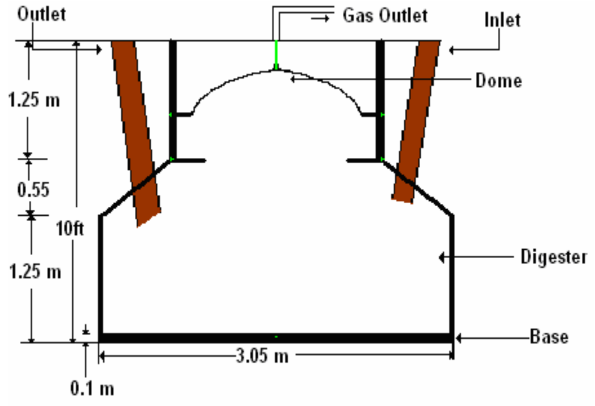

सामुहिक गोबर गैस संयंत्र

गोशालाओं और पांजरापोलों में पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखकर बढ़ती हुई उर्जा की मांग को ध्यान में रखकर गुजरात की तरह ही सामुहिक गोबर गैस संयंत्र की तुरन्त ही आवश्यकता है.

सामुहिक गोबर गैस संयंत्र से कार्बन क्रेडिट प्राप्त होगी. कार्बन क्रेडिट मिलने पर ही एल.पीजी. पर निर्भरता पूरी तरह से समाप्त होगी.

उत्तरप्रदेश के लोगों के अंदर गोवंश के लिए बहुत अधिक लगाव है. उत्तरप्रदेश का व्यक्ति विश्व में कहीं पर है तो उसकी पहचान गोवंश के सम्मान से है.

नकली दूध

उत्तरप्रदेश में नकली दूध का उत्पादन बहुत ही अधिक किया जा रहा है. उत्तरप्रदेश सरकार नकली दूध को रोक पाने में असमर्थ है.

मानव की जनसंख्या में वृद्धि होने के कारण दूध की मांग निरन्तर बढ़ रही है.

गोवंश की संख्या में कमी होने के कारण असली दूध का उत्पादन प्रभावित हो रहा है.

नकली दूध में असली दूध मिलाने के कारण आसानी से पकड़ में नहीं आता है. नकली दूध असली दूध की तुलना में सस्ता बिकता है.

नकली दूध से दही, छाछ, मक्खन, घी, मावा, दूध पावडर जैसी बहुत सारी वस्तुएं तैयार कर उत्तरप्रदेश से पूरे भारत में बेची जा रही है.

2 करोड़ लीटर नकली दूध प्रतिदिन उत्पादन किया जा रहा है.

नकली दूध बनाने के लिए गलत चीजें उपयोग की जाती हैं. नकली दूध बहुत ही चालाकी के साथ में असली दूध के साथ मिलाया जाता है.

अखिल विश्व गायत्री परिवार तपोभूमि मथुरा तथा आंवलखेड़ा में गोवंश संवर्धन करने के लिए जयति जय गोमाता, गोपालन एवं गोशाला प्रबंधन संदर्शिका पुस्तक का प्रकाशन किया गया है.

गोशालाएं तेजी के साथ में गांव गांव में खोल रहे हैं. हर घर में गोपालन करने का प्रयत्न कर रहे हैं.

बकरी

बकरी से आधे खर्च में भी गाय पालना संभव है. केरल की वैचूर नस्ल बकरी से आधे खर्च में विकसित करना संभव है.

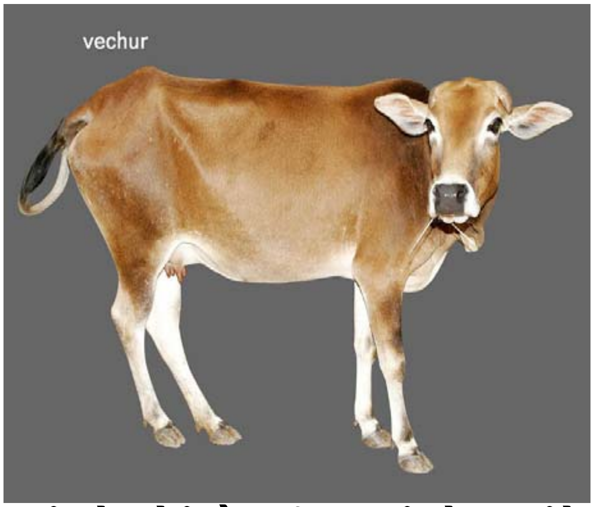

बकरी चोर होती है इसलिए बकरी के दूध पीने पर मानव के मन में चोरी की भावना विकसित होती है. बकरी से मात्र 991 टन दूध मिल रहा है.

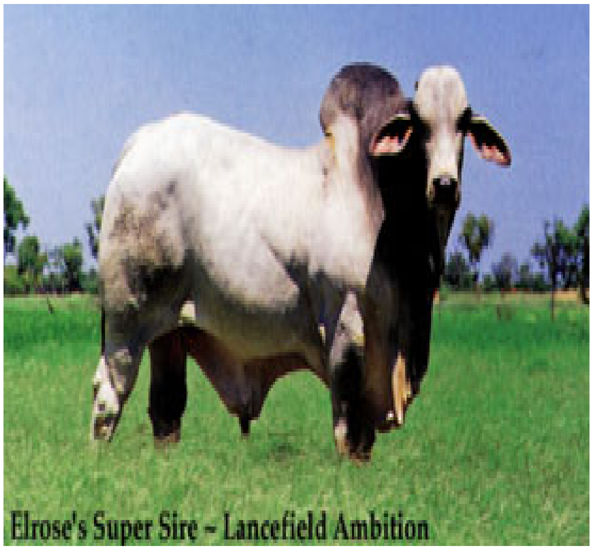

नस्ल परिवर्तन

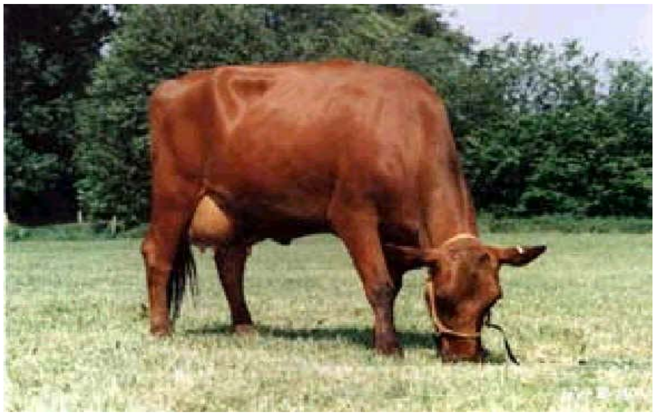

आयातित वर्णसंकर सांढ से कृत्रिम गर्भाधान करवाकर देशी नस्ल को वर्णसंकर नस्ल में पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया है.

संकर नस्ल के दूध का उत्पादन 16,34,000 वर्णसंकर जानवरों से मात्र 1429 टन है.

ए-1

विश्व में किये गये अनुसंधानों से यह साबित हो गया है कि वर्णसंकर जानवरों से प्राप्त ए-1 दूध मानव के लिए अच्छा नहीं है.

संकर नस्ल पर पूरा जोर

उत्तरप्रदेश सरकार ने संकर नस्ल के विकास पर ही सबसे अधिक जोर दिया है.

ए–2

देशी नस्ल 1,69,17,000 गोवंश से मात्र 3014 टन दूध मिल रहा है. देशी नस्ल की गायों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बहुत अधिक होने के कारण ही देशी गाय के दूध को अमृत कहा गया है.

प्रदर्शनी

उत्तरप्रदेश में समय समय पर गोवंश संवर्धन करने के लिए बहुत ही बड़े स्तर पर प्रदर्शनी राज्य सरकार के द्वारा राजधानी में आयोजित की जाती हैं.

प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए दूर दूर से लोग आते हैं. विजेताओं को बहुत ही अच्छे पुरुस्कार दिये जाते हैं. गोवंश के संवर्धन पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाता है. बढ़िया देशी सांढों का विकास किया गया है. सबसे अधिक पुस्तकें गोवंश पर प्रकाशित की जा रही हैं.

देशी नस्ल से ए-2 दूध मिल रहा है.

संकर की तुलना में देशी नस्ल से अधिक दूध मिल रहा है. वर्तमान में केंद्र सरकार के द्वारा देशी नस्ल के विकास करने के लिए गंभीरता के साथ प्रयत्न किया जा रहा है.

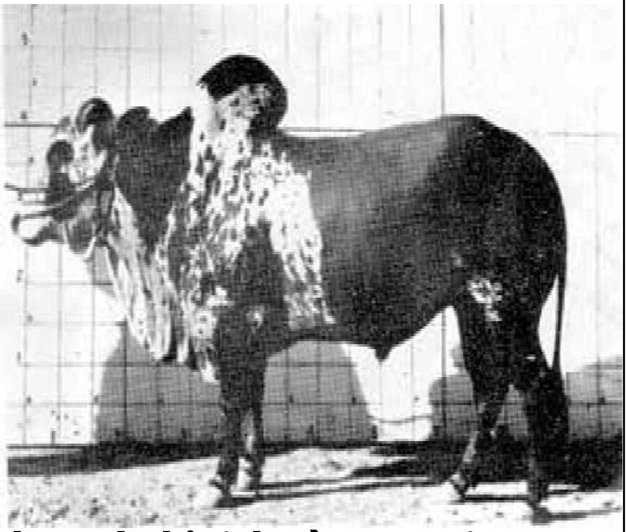

पूरे विश्व में कोई भी देश भैंस का दूध पीना पसंद नहीं कर रहा है. विकसित देश सिर्फ भारतीय नस्ल की गायों के विकास करने में लगे हुए हैं.

भारत सरकार 64 सालों से भैंस पालन पर पूरा जोर दे रही है. भैंस का दूध सबसे अधिक मंहगा बिक रहा है.

9 प्रजातियां

9 प्रजातियां विकसित करके आज अधिक दूध प्राप्त करने के लिए कार्य कर रही है.

सरकार के जबरदस्त प्रयत्नों के कारण ही भैंस से 10512 टन दूध मिल रहा है.

भैंस के दूध का मूल्य वसा के आधार पर तय करने के कारण ही बहुत ही अधिक है.

उत्तरप्रदेश के कुल दूध उत्पादन में सबसे अधिक भागीदारी भैंस की है.

सुलतानपुर

प्राचीन समय में सुलतानपुर में गोचर भूमि की अधिकता के कारण हमेशा हरी हरी कोमल घांस भरपेट मिलने के कारण ही गोवंश सुखी एवं प्रसन्नचित्त था.

लोगों के अंदर गोवंश महाविज्ञान का संपूर्ण ज्ञान था. गोवंश का पूजन एवं अर्चना सुबह के समय वेद मंत्रों के साथ में की जाती थी.

गोपा-टमी के दिन सामुहिक पूजन करने के कारण मेले का वातावरण रहता था. गोमय का उपयोग स्नान करने के लिए किया जाता था.

गोमय से निवास का पवित्रीकरण किया जाता था. गोमूत्र का उपयोग पीने के लिए किया जाता था. गोमूत्र से नहाने का कार्य किया जाता था.

सुलतानपुर के लोग निरोगी एवं दीर्घायु थे. हर परिवार प्रतिदिन हवन अवश्य करता था.

बरसात भी अच्छी होने के कारण गोवंश को साफ जल मिलता था. दूध एवं दूध से बने दही, छाछ, मक्खन, घी, व्यंजन, पकवान का उपयोग सदैव दैनिक भोजन में किया जाता था.

सुलतानपुर गोवंश के संवर्धन करने के लिए हमेशा जागृत है. अखिल विश्व गायत्री परिवार के द्वारा सुलतानपुर में गोवंश के संवर्धन करने के लिए विशाल क्षेत्र में गोवंश संवर्धन केंद्र मौजूद है.

नेमि-ारण्य

पिंजरापोल गोशाला सोसायटी

कामधेनु, सुरभि, नंदनी, बहुला आदि सात ऋ-ियों की गायें यहां पर सुरक्षित रखी गयी हैं.

हनुमंत मंशाराम गोशाला बिसवां

ऋ-ियों के आर्शीवाद से यहां पर परम पूजनीय कपिला की सेवा की जा रही है.

नैमि-ारण्य गोशाला मिश्रिख

नेमी-ारण्य में 88000 ऋ-ि मुनियों के द्वारा गोमाता का अमृत रुपी दूध पीकर श्रीमद भागवत पारायण किया गया है इसलिए इस तीर्थ क्षेत्र का विशे-ा महत्व है. सूत एवं सौनक ऋ-ियों के द्वारा इस पवित्र क्षेत्र में निरन्तर निवास कर भगवतनाम लिया गया था. वर्तमान में भी यहां पर ऋ-ियों के द्वारा श्रीमद भागवत पारायण किया जा रहा है. भारत के प्रसिद्ध वक्ता समय समय पर श्रीमद भागवत करवाने के लिए यहां पर आते रहते हैं. गोमाता का दूध पीकर संत बहुत ही कठोर तपकर रहे हैं. नेमी-ारण्य सीतापुर के पास में रहने के कारण पूरे विश्व से भक्त दर्शन करने के लिए आते हैं. 3 गोवंश संवर्धन केंद्रों में देशी गोवंश बचाया गया है.

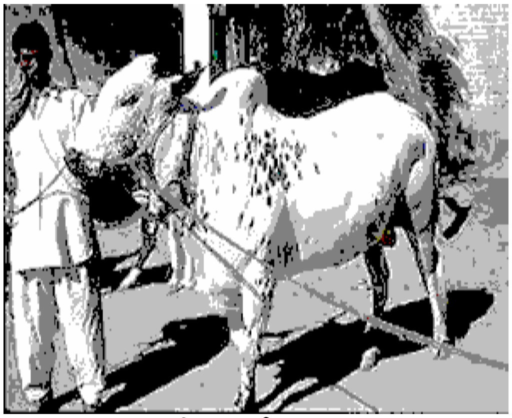

जिला सीतापुर

सीतापुर में आंख का दवाखाना है तथा आंख के उपचार करवाने के लिए दूर दूर से लोग आते रहते हैं. सीतापुर में गोवंश के संवर्धन करने के लिए उदारतापूर्वक दान बाहर से आने वाले दर्शन करने वालों के द्वारा दिया जाता है.

रानीखेत

रानीखेत में गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए जबरदस्त प्रयत्न चल रहा है.

रामपुर

रामपुर में उत्साही युवाओं के द्वारा गोवंश संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए संगठित प्रयत्न चल रहा है.

उरई

उरई बहुत ही जागृत एवं सक्रिय क्षेत्र हे तथा गोवंश के संवर्धन संरक्षण करने के लिए निरन्तर गतिविधियां चल रही हैं.

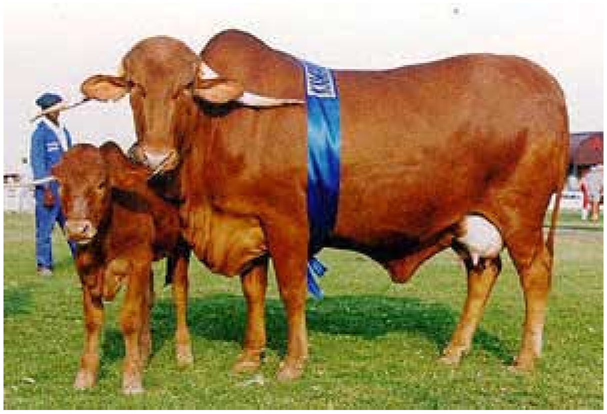

नवाबगंज

सरजू गोशाला

सरजू गोशाला का गठन गोवंश के विकास करने किया गया है. सरजू गोशाला धीरे धीरे आदर्श गोशाला बन रही है. सरजू गोशाला गोवंश के विकास करने के कारण ही आसानी से गो दूध के साथ में नियमित गोमूत्र तथा गोबर भी दे रही है. उत्साह के साथ में गोवंश के लिए उदारतापूर्वक दान दिया जा रहा है.

मुरादाबाद

मुरादाबाद गोवंश के लिए हमेशा ही समर्पित है तथा गोवंश के संवर्धन करने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार कार्य कर रही है.

मिरजापुर

मिरजापुर अखिल विश्व गायत्री परिवार के माध्यम से गोवंश के संवर्धन करने के लिए दिव्य कार्य कर रहा है. मिरजापुर में सम्पन्नता रहने के कारण ही परिजन गोवंश संरक्षण करने के लिए आक्रामक हैं. मिरजापुर के परिजन पूरी तरह संगठित स्तर पर अपार धन लगाकर 5 दिनों के सम्मेलनों में गोवंश साहित्य, वीडियो सीडी, डीवीडी बिक्रीकर जागृति उत्पन्न की जा रही है.

महोबा

महोबा में रा-ट्रीय स्वयं सेवक संघ एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार गोवंश संवर्धन करने के लिए सक्रिय है.

महूरानीपुर

provided by Dr Alberto Zorloni

श्री राघव गो सम्वर्धनशाला

1997 में श्री बाबा राम दास ब्रहमचारी अध्यक्ष के द्वारा श्री राधव गो सम्मवर्धनशाला कुरैंचा नाका, मउरानीपुर जनपद-झांसी 284204 दूरभा-ा 05178-260062 मोबाइल 9453665817, 9415950057 गोरक्षा तथा गो सेवा करने के लिए स्थापित कर चुके हैं.

4 एकड़ भूमि पर 83 पेड़ लगाकर लगभग 5 लाख खर्च कर 4 कर्मचारी 184 गोवंश की सेवा कर रहे हैं.

श्री रमेश चन्द्र मिश्र जी प्रबधंक, मंत्री 09453665817 गोपाल गंज, मउरानीपुर 79 सदस्यों के साथ में गोबर गोमूत्र से अर्क, मंजन, शैम्पू तैयार कर रहे हैं. गोबर गैस प्लांट 45 घन मीटर का है. गोबर एवं गोमूत्र से मात्र 70 हजार रु. प्राप्त हुआ है.

श्री शान्ति निकेतन धनु-ाधारी 0945950057, 05178260062 मंदिर, परवारीपुरा मउरानीपुर आटा चक्की 5 होर्स पावर समरसिबल 25 किलो वाट का है.

गोवंश शरण गृह तैयार करने के लिए आवश्यक धनराशि के लिए प्रयत्नशील हैं.

महूरानीपुर में रा-ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार गोवंश के संरक्षण करने के लिए बहुत ही अधिक सक्रिय हैं. समय समय पर प्रदेश स्तर पर गोवंश संरक्षण सम्मेलन आयोजित किये जा रहे हैं.

कालपी

जालोन गोशाला समिति कालपी

कालपी गोवंश के संवर्धन करने के लिए हमेशा जागृत है. जालोन गोशाला समिति कालपी का गठन प्राचीन गोवंश को बचाने किया गया है. कालपी में गोवंश के संवर्धन करने के लिए उल्लेखनीय धन खर्च किया जा रहा है.

जगदीशपुर

प्राचीन समय में गोचर भूमि की अधिकता के कारण ही गोवंश चरम सीमा पर था. गोवंश के महाविज्ञान का उपयोग हर घर में किया जाता था. गोवंश के कारण ही जगदीशपुर सम्पन्नता के लिए प्रसिद्ध रहा है. जगदीशपुर अच्छी सम्पन्नता रहने के कारण गोवंश संवर्धन करने के लिए पूरी तरह से सक्रिय है.

हमीरपुर

हमीरपुर में गोवंश के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं. अखिल विश्व गायत्री परिवार एवं संघ के कार्यकर्ता संगठित स्तर पर गोवंश संरक्षण करने के लिए गोवंश केंद्र चला रहे हैं.

हरदोई

गोपाल गोशाला धियर महोलिया

भगवान श्री कृ-ण को प्राणों से भी अधिक प्रिय धोरी, धूमर एवं बहुत सारी कामधेनु गायें यहां पर मौजूद हैं.

कृ-ण गोशाला माधेगंज

साक्षात कामधेनु में देवता के दर्शन हो रहे हैं.

राधाकृ-ण गोशाला शाहाबाद

हरदोई में गोवंश के लिए अपार प्रेम है इसलिए वर्तमान में गोवंश संरक्षण करने के लिए अपार धन खर्च किया जा रहा है.

फतेहपुर

नंदगोशाला बिन्दकी

फतेहपुर बहुत ही बहादुर लोगों का क्षेत्र है तथा गोवंश के संरक्षण करने के लिए आक्रामक हैं.

फतेहगढ़

फतेहगढ़ गोवंश के संवर्धन करने के लिए बहुत ही आगे है.

एटा

एटा गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए संगठित है तथा हमेशा उदारता के साथ धन लगा रहे हैं.

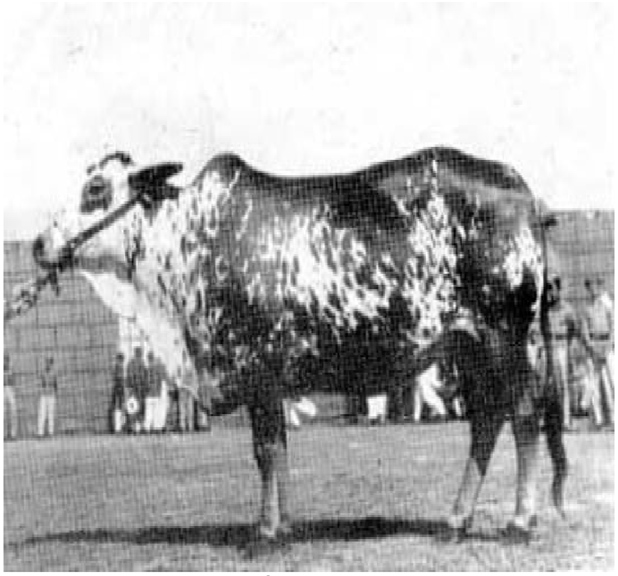

बिठुर

आरोग्यधाम गोशाला बिठुर

हरिधाम आश्रम

ब्रहमलीन स्वामी श्री प्रकाशानन्द जी सरस्वती के द्वारा 1974 में इस गोशाला की स्थापना की गयी है. गंगाजी निकट होने के कारण पानी की सुविधा है. 12 माह साफ पानी मिल रहा है. 8 माह हरा चारा मिल रहा है. गो दुग्ध का उपयोग साधु एवं संतो के लिए किया जाता है. गोबर का उपयोग गोबर गेस संयंत्र में किया जाता है. गोशाला में 8 गायें, 1 सांढ, 2 बछड़े तथा 5 बछिया हैं. गायें हरियाणा, साहीवाल नस्ल की गायें हैं.

प्राचीन समय से ही बिठुर गोवंश के लिए पूरी तरह से जागृत था. विशाल मेले गोवंश के लगाये जाते थे. गोचर की भूमि में गोवंश के घूमने फिरने एवं हरी हरी घांस अपनी इच्छा के अनुसार ग्रहण करने के कारण गोवंश पूरी तरह से प्रसन्नचित्त एवं आनन्द में रहते थे. गोधन से लोगों की सम्पन्नता का मूल्यांकन किया जाता था. गोमाताएं भरपूर दूध देती थी. गोमाताएं 20 बच्चे देती थी. गोपा-टमी के दिन सामुहिक पूजन एवं अर्चना की जाती थी. गावलाव प्रजाति का विकास मराठाओं के द्वारा किया गया था. गावलाव प्रजाति वर्तमान में नागपुर के आसपास पायी जाती है. वर्तमान में बिठुर में गोवंश संवर्धन करने के लिए सदैव लोग आगे रहते हैं.

बिजनौर

बिजनौर प्राचीन समय से गोवंश के संवर्धन करने के लिए प्रसिद्ध है. गोवंश चरम सीमा पर मौजूद था. श्री टेकचंद जी विश्व हिंदु परि-ाद के सक्रिय कार्यकर्ता हैं तथा वर्तमान में गोवंश संरक्षण करने के लिए अपार धन लगाकर कार्य कर रहे हैं.

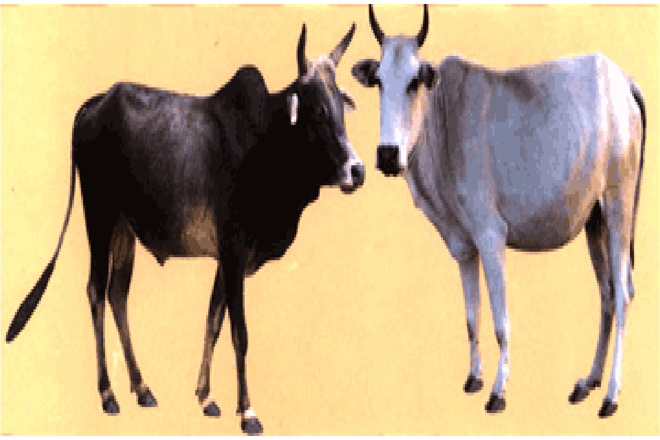

बांदा

गोपाल गोशाला

भगवान श्री कृ-ण के द्वारा 5 साल की आयु में गोपा-टमी के दिन गोचारण करने के लिए प्रारम्भ किया गया था. भगवान कृ-ण की परम्परा को यहां पर कायम रखा गया है.

नरसिंह गोशाला पेलानी

भगवान श्री नरसिंह जी का जन्म हिरण्यकश्यपु के विनाश करने के लिए हुआ था. कामधेनु के साक्षात दर्शन यहां हो रहे हैं.

मुकुन्द गोशाला मुजौली

प्राचीन समय में गोवंश की संख्या भरपूर थी. गोवंश के कारण सम्पन्नता चरम सीमा पर थी. गोवंश आधारित कार्य की प्रधानता थी. गोधन के कारण लोगों को सम्मान मिलता था. अधिक दूध देने के लिए गोमाता का विकास किया गया था. गोवंश महाविज्ञान का उपयोग किया गया था. बांदा गोवंश संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए सक्रिय है.

बलिया

अखिल विश्व गायत्री परिवार ने गायत्री शक्तिपीठ में गोवंश के संवर्धन करने के लिए सघन अभियान चलाया है. बलिया में सम्पन्नता बहुत ही अच्छी है तथा गोपालन में बहुत ही आगे है तथा दूध उत्पादन में भी उल्लेखनीय सफलता मिल चुकी है. बलिया में गोमाता के दूध का उपयोग चरम सीमा पर है. गोवंश महाविज्ञान पूरी तरह से विकसित है तथा अच्छी नस्ल के सांढ तैयार किये जा रहे हैं. गायमाताएं बहुत ही अधिक दूध देती हैं. गोबर का उपयोग गोबर गेस तैयार करने के लिए किया जाता है. हरे चारे के लिए बहुत अधिक भूमि में जैविक कार्य चल रहा है. बलिया में लोग गोवंश के लिए विशे-ा लगाव रखते हैं. गोशाला का संचालन भी सुंदर ढंग से किया जा रहा है.

उन्नाव

अलानसंस 90,000 टन वार्-िाक क्षमता का पूर्णतः एकीकृत कतलखाना चला रही है. भैंस, भेड़, बकरी के साथ में गोपनीय ढंग से गोवंश बहुत बड़ी मात्रा में कट रहा है.

उन्नाव दूध उत्पादन करने के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है तथा उन्नाव में गोमाताएं बहुत ही अधिक दूध दे रही हैं. गोशाला अधिक क्षेत्रफल में विकसित की गयी है तथा उदारता के साथ दान आ रहा है. गोशाला से दूध बीमार तथा कमजोर लोगों को कम मूल्य पर दिया जा रहा है. गोमूत्र का उपयोग असाध्य रोगों को दूर करने के लिए दवा के रुप में किया जाता है. गोवंश रक्षा करने के लिए ताकतवर तथा साहसी लोग मौजूद हैं. अच्छे सांढ वैज्ञानिक ढंग से तैयार किये गये हैं. उन्नाव के मूल निवासी गोमाता के दूध के निरन्तर सेवन करने के कारण ही दीर्घायु तथा पूरी तरह से निरोगी हैं. उनका कद उंचा तथा भरपूर होता है.

शाहजहांपुर

शाहजहांपुर दूध उत्पादन करने के लिए प्रमुख केंद्र है तथा गोपालन का कार्य गोशाला के माध्यम से किया जाता है.

प्रतापगढ़

आंवले के कारण वर्तमान में प्रतापगढ़ पूरे विश्व में प्रसिद्ध है. प्रतापगढ़ दूध उत्पादन करने के लिए मुख्य केंद्र है तथा गोवंश के विकास करने के लिए गोशाला है.

जौनपुर

जौनपुर दूध उत्पादन करने के लिए बहुत ही आगे है तथा गोवंश के विकास करने के लिए उदारता के साथ धन खर्च किया जा रहा है. गोशाला में नस्ल सुधार करने के लिए अच्छे सांढ तैयार किये गये हैं.

आजमगढ़

आजमगढ़ दूध उत्पादन के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है. गोवंश के प्रति लोगों का लगाव सबसे अधिक है. अपने परिवार के रुप में घरों में गोवंश को रखा जाता है. गोशाला बहुत ही पुरानी है तथा बहुत अधिक हरी घांस उगायी जा रही है. गोमूत्र का उपयोग दवा के लिए किया जाता है. गोमूत्र का उपयोग अपने निवास में पवित्रीकरण करने के लिए किया जाता है. गोबर का उपयोग नहाने के लिए किया जाता है. गोपालन करने के लिए संतुलित आहार की व्यवस्था की गयी है.

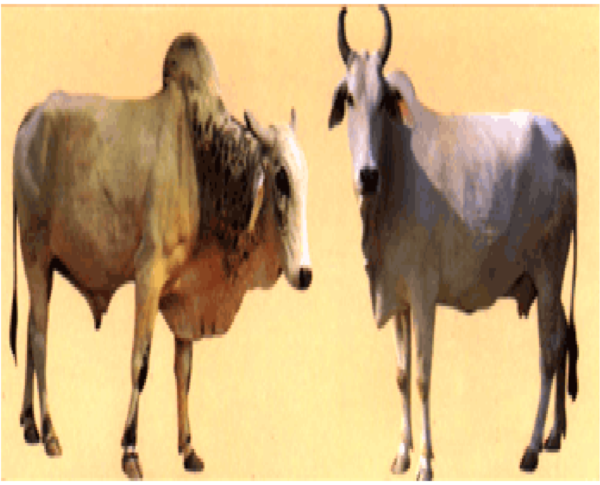

बाबूगढ़

केटल ब्रीडिंग फार्म बाबूगढ़ में उत्तरप्रदेश सरकार के द्वारा हरियाणा नस्ल का संवर्धन किया जा रहा है.

हस्तीनापुर

केटल ब्रीडिंग फार्म हस्तीनापुर में हरियाणा नस्ल का संरक्षण करने के लिए प्रयत्न किया जा रहा है.

नीलगांव

केटल ब्रीडिंग फार्म नीलगांव में हरियाणा नस्ल का संवर्धन किया जा रहा है.

सइदपुर

केटल ब्रीडिंग फार्म सइदपुर में हरियाणा नस्ल का संवर्धन किया जा रहा है.

बहादुरगढ़

केटल ब्रीडिंग फार्म बहादुरगढ़ में हरियाणा नस्ल का संवर्धन किया जा रहा है.

लखीमपुर

थारपारकर नस्ल, खेरीगढ़ नस्ल का संवर्धन करने के लिए सेंट्रल केटल ब्रीडिंग फार्म पोस्ट बोक्स 63 अंदेशनगर खेरी लखीमपुर उ.प्र. 262701 दूरभा-ा 05872-52835 में कार्य किया जा रहा है.

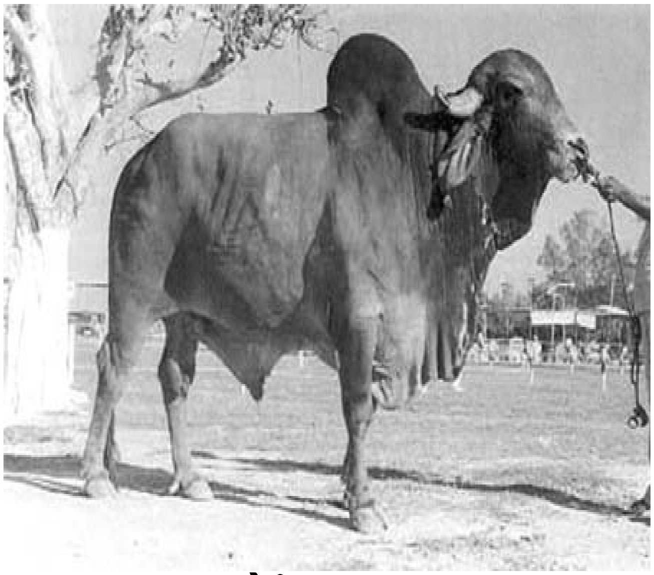

नैनीताल

इंडियन वेटनरी रिसर्च इंस्टीटयूट यहां पर सक्रिय है. डा. रामस्वरुपसिंह चौहान मोबाइल 09412288343 निदेशक के पद पर हैं. राजकीय पशु फार्म हेमपुर नैनीताल में पोनवार नस्ल का संवर्धन किया जा रहा है.

अलीगढ़ जिला

हिंद एग्रो इंडस्ट्रीज

1,20,000 टन वार्-िक क्षमता वाला पूर्णतः एकीकृत कतलखाना हिंद एग्रो इंडस्ट्रीज चला रही है.

अलीगढ़

अखिल विश्व गायत्री परिवार

अखिल विश्व गायत्री परिवार गोवंश के संवर्धन करने के लिए सबसे अधिक सक्रिय है.

अलीगढ़ में विशाल भूमि पर गोशाला में गोवंश संवर्धन किया जा रहा है. अलीगढ़ का मूल नाम हरीगढ़ है. हरीगढ़ में एक समय में गोवंश चरम सीमा पर था.

दादों

डा. सती-ा यादव युवा एवं पूरी तरह से समर्पित आयुर्वेद चिकित्सक एवं समर्पित गोवंश सेवक डाकघर दादों जिला अलीगढ़ उत्तरप्रदेश 202133 मोबाइल 09368314533 गोवंश संवर्धन करने के लिए पूरे भारत के गोवंश सेवकों के संपर्क में हैं तथा 15 सालों से लगातार गो ग्रास योजना को पूरी तरह से बढ़ावा दे रहे हैं.

गोचर भूमि पर अवैध कब्जे को पूरी तरह से दूर करने के लिए बहुत ही जबरदस्त आंदोलन चला रहे हैं. गोवंश पर तैयार सभी वीडियो सीडी एवं साहित्य भी एकत्रित कर रहे हैं. इंटरनेट पर वेबसाइटों का अध्ययन कर जानकारी एकत्र कर उसका उपयोग गोवंश संवर्धन करने के लिए कर रहे हैं.

नियमित अग्निहोत्र कर लोगों को भी नियमित अग्निहोत्र करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं. अग्निहोत्र के रा-ट्रीय सम्मेलन में भाग ले रहे हैं. विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा में उनकी अहम भूमिका है. पंचगव्य औ-धियों को अलीगढ़ जिले के सभी आयुर्वेद चिकित्सकों को गो विज्ञान अनुसंधान केंद्र नागपुर से मंगवाकर नियमित रुप से बहुत बड़ी मात्रा में बेच रहे हैं.

जिला संत कबीर नगर

मुखलीसपुर

श्री रमेश कुमार द्विवेदी गायत्री गोशाला गीरडीह, मझौरा, डाकघर मुखलिसपुर निवास गायत्री शक्तिपीठ खलीलाबाद जिला संत कबीर नगर मोबाइल 09837417827 के द्वारा गोवंश संवर्धन का कार्य किया जा रहा है.

जिला गोंडा

हनुमान गोशाला भगवतीगंज

गोवंश के संरक्षण के लिए प्रयत्न जारी हैं.

बलरामपुर

बलरामपुर गोशाला सोसायटी

कामधेनु को यहां पर सुरक्षित रखा गया है.

नीलगांव

गायत्री तपोभूमि गोशाला

अखिल विश्व गायत्री परिवार यहां पर साक्षात कामधेनु के लिए हर तरह से सक्रिय है.

बड़गांव

संगठित होकर कामधेनु की साधना की गयी है.

करनैलगंज

गोपाल गोशाला

श्री तिलकराम तिवारी जी श्री गायत्री गोशाला ग्राम सकरौरा डाकघर करनैल गंज जिला गोंडा में गोवंश संवर्धन का कार्य किया जा रहा है.

जिला बहराइच

झिंगरीपुल

श्री लाडिली प्रसाद वर्मा मां भगवती गोशाला झिंगरीपुल, परसेंडी जिला बहराइच में गोवंश संवर्धन का कार्य चल रहा हे.

बहराइच

राजलक्ष्मी गोशाला निन्दीपुर

भंडारा

जुगलीना गोशाला नानपारा

श्री आरपीएन श्रीवास्तव जी श्रीराम गोशाला गायत्री शक्तिपीठ निकट सीतापुर नेत्र चिकित्सालय बहराइच मोबाइल 93352668541 में गोवंश संवर्धन का कार्य चल रहा है.

जिला फैजाबाद

साकेत गोशाला अयोध्या

भगवान श्री राम के अपार गोवंश प्रेम के कारण कामधेनु के अस्तित्व को सुरक्षित रखने के लिए प्रयत्न जारी हैं.

भगवंत गोशाला डुहिया टांडा

कामधेनु में देवताओं के दर्शन करने की भावना यहां पर प्रबल है.

नरसिंह गोशाला बीकापुर

बरवा

श्री गोकरणनाथ वर्मा जी युग निर्माण गोशाला गायत्री युगचेतना विस्तार केंद्र गायत्री नगर अरकुना चौराहा डाकघर बरवा 224182 मोबाइल 09936148175 में गोवंश संवर्धन का कार्य चल रहा हे.

जिला आंबेडकरनगर

धौरुआ

श्री राम प्रसाद वर्मा गायत्री गोशाला डाकघर धौरुआ द्वारा मालीपुर 224001 निवास 107 अंगूरीबाग, आवास विकास कोलोनी फैजाबाद 09451291180 गोवंश संवर्धन का कार्य कर रहे हैं.

जिला गाजियाबाद

गाजियाबाद

आर्यन उद्योग

श्री गोपाल कृ-ण अग्रवाल जी 9350782679, 0120-4158819 आर्यन उद्योग, डी-140, बुलन्दशहर रोड, गाजियाबाद 201009 गोशालाओं को आत्मनिर्भर करने के लिए आसवन यंत्र के विक्रेता हैं.

गोशालायें भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड से वित्तीय सहायता प्राप्त कर असाध्य रोगों को पूरी तरह से दूर करने के लिए आसवन यंत्र से अर्क तैयार कर गोशालायें नारी संजीवनी, बाल पाल रस, प्रमेहारी, घनवटी, आसव, पंचगव्य, नेत्र बिंदु, कान की दवा, नाक की दवा आदि बहुत सारी महो-ाधियां तैयार कर सकती हैं.

श्री गोपाल कृ-ण अग्रवाल जी आसवन यंत्र के साथ में गोशाला में निर्मित समिधा, धूप, अगरबत्ती, मच्छर भगाने के लिए कोइल, गोमूत्र फिनाइल, पंचगव्य निर्मित मूर्तियां श्री गणेश जी, श्री लक्ष्मी जी भी बेच रहे हैं.

श्री गोपाल कृ-ण अग्रवाल जी गौसेवक हैं तथा बहुत ही जागरुकता के साथ में मार्गदर्शन करने के लिए सदैव तत्पर हैं.

प्रेमशंकर पंचायती गोशाला

श्री सुरेश सिंघल जी अध्यक्ष 7500283404 प्रेशंकर पंचायती गोशाला सिकला रोड, चंडी मंदिर के पीछे में, पिलखुआ गाजियाबाद में 200 गाय रखने की क्षमता वाली गोशाला में 7 लाख खर्च कर 6 बीघा भूमि पर वर्तमान में 170 देशी गोवंश रखकर 8 कर्मचारी 155 लीटर दूध उत्पादन कर रहे हैं.

32 रु. लीटर के मूल्य पर दूध बेच रहे हैं. पकड़ी हुई गायों को संरक्षण देना चाहते हैं इसलिए जमीन बढ़ाना चाहते हैं.

नंदी पार्क

नंदी एक समस्या

भारत में महानगरों में वर्तमान में भगवान महादेव के वाहन नंदी बहुत बड़ी समस्या बन गये हैं. महानगरों में आवारा नंदी आज लोगों की दुर्धटना का मुख्य कारण बन गये हैं.

समाधान का अभाव

नंदी की इस गंभीर समस्या से छुटकारा पाने के लिए महानगरों में कोई स्थायी समाधान नहीं है. नंदी पार्क एकमात्र मोडल है.

अलद्या मोर्डन कतलखाने

महानगरों में लाइसेंस प्राप्त अलद्या मोर्डन कतलखाने कार्यरत हैं. अलद्या मोर्डन कतलखानों में आवारा नंदी मांस के लिए लंबे समय से कट रहे हैं.

उपेक्षा

आमतौर पर भारत में लोगों के द्वारा नगर में आवारा घूमने वाले सांडों को समस्या के रुप में ही माना जाता है. सांढों की ओर कोई ध्यान देने के लिए तैयार नहीं है.

सांडो का प्रयोग

मगर बेकार समझे जाने वाले इन सांडों का प्रयोग यदि गाजियाबाद के नंदी पार्क की तरह किया जाये तो वर्तमान में नस्ल सुधार के लिए नंदी की कमी पूरी तरह से समाप्त की जा सकती है.

500 नंदी

गाजियाबाद में महापौर श्रीमती दमयंती गोयल के द्वारा 60 एकड़ भूमि पर 14 लाख रु. की फेंसिंग लगाकर नंदी पार्क में 260 नंदी हैं जो बहुत जल्दी 500 से अधिक हो जायेंगे.

काला नंदी

काले नंदी में सूर्य की सातो तरंगे सोख लेने के कारण विशे-ा उर्जा होती है. काले नंदी का हमारे यहां पर विशे-ा महत्व है.

निर्यात

ब्राजील भारत से गीर, साहीवाल, लाल सींधी, अंगोल, गुजराती, खिल्लारी जैसी प्रजातियों के नंदी आयात कर 1 करोड से अधिक गोवंश तैयार कर कई देशों को नंदी निर्यात कर रहा है.

5 करोड़

भारत में इंडियन कांउसिल ओफ एग्रीकल्चर यानी आई.सी.ए.आर. नंदी के विकास के लिए नंदीशाला लगाने के लिए 5 करोड़ देने के लिए तैयार है.

नगर आयुक्त

नगर आयुक्त श्री अजय शंकर पांडे 3 सालों से नंदी पार्क की योजना को सफल बनाने के लिए जी जान से लगे हैं.

देखभाल

धीरे धीरे नगर के लोगों को अपनी जिम्मेदारी का अहसास होने लगा है. अनेक संगठन भी इन नंदी की देखभाल करने के लिए आगे आने लगे.

गुड़

सर्दियों में इन नंदी को गुड़ खिलाने के लिए नंदी पार्क में भारी भीड़ लगने लगी है.

शनि

ज्योति-नों के द्वारा नवग्रहों में सूर्य के पुत्र तथा यम के भाई न्याय के देवता तथा भाग्य के कारक शनि के महत्व को बताया गया है.

शनि पर तेल

भारत में भक्तों के द्वारा अपने क-टों से मुक्ति पाने के लिए शनिवार के दिन सुबह से रात्रि के समय में बहुत बड़ी मात्रा में शनि पर बहुत ही श्रद्धा के साथ में तेल चढ़ाया जाता है.

नयी शुरुआत

नंदी पार्क में नगर के शनि मंदिरों में से तेल पुजारियों से एकत्र कर नंदी को पिलाने की भी शुरुआत की गयी है.

अवलोकन

नंदी पार्क देखने के लिए भारत से मेयर का प्रतिनिधि मंडल भी पहुंच चुका है.

आवारा नंदी अक्सर सड़क पर लोगों को घायल कर देते थे.

रोजगार

सांडों की देखभाल करने के लिए 25 आदमियों को रखा गया है.

आवारा नंदी नंदी पार्क में आपस में लड़ते थे तथा एक दूसरे को घायल कर देते थे. धीरे धीरे नंदी पूरी तरह से शांत हो गये.

हाइड्रोलिक सिस्टम

आवारा नंदी को सड़क पर से पकड़ने के लिए 2 ट्रकों में हाइड्रोलिक सिस्टम लगाया गया जिससे कार्य बहुत ही आसान हो गया है.

सवा मन सोना

नंदी यदि सही ढंग से पाले गये तो पूरी आयु 25 साल तक जीवन जीते हैं. नंदी के पेट में सवा मन सोना होता हे ऐसी हमारी मान्यता है.

देखभाल

नंदी की लगन के साथ में देखभाल की जाये तो एक नंदी अपने जैसे 100 नंदी तैयार करता है.

संरक्षण एवं संवर्धन

भारत में वर्तमान में कृत्रिम गर्भाधान करने के लिए बहुत ही दुर्लभ लंबे सींगो वाले 7000 सालों पुराने अंकोल तथा अंकोल वाटसी नंदी का पूरी तरह से अभाव है.

गोमय वस्ते लक्ष्मी

गोमय वस्ते लक्ष्मी यानी गोमय में आठ प्रकार की लक्ष्मी आठ प्रकार के ऐश्वर्य के साथ में विराजमान है. गोमय कामधेनु का वरदान है.

गोमय का उपयोग

नंदी अपने पूरे जीवन में 1 लाख किलो गोमय देते हैं. कामधेनु का वरदान गोमय का उपयोग गोबर से वर्तमान में बिजली उत्पादन, जैविक खाद, गोबर गैस, सीएनजी, पंचगव्य, महापंचगव्य, मच्छर भगाने की कोइल, अग्निहोत्र के कंडे, ईंधन के उपले, बर्तन मांजने की राख, एक्जीमा साबुन, नहाने का साबुन, दर्द निवारक तेल, आंखों की दवा, हवन समिधा, गोपाल नस्य, केशवर्धक लोशन, फेस पैक, क्रीम लोशन, अंगराग पावडर, मलहम, मंजन, टाइल्स, कागज, कवेलू, प्लास्टर, डिस्टेम्पर आदि अनेकों आवश्यक उत्पाद तैयार किये गये हैं.

स्वावलंबन

नंदी वर्तमान में पूरी तरह से स्वावलंबी हो गये हैं. नंदी को उसकी असाधारण उर्जा के उपयोग करने के लिए विशे-ा रुप से प्रशिक्षित किया जा रहा है.

उर्जा का सदुपयोग

नंदी अपने लिए चारा काटने, पानी निकालने और इनवर्टर चार्ज कर बिजली का संचय कर रहे हैं.

कंपोस्ट

नंदी के गोबर से नंदी कंपोस्ट बाजार में बहुत अच्छे दाम पर बिक रही है.

प्रजनन

नंदी प्रजनन के लिए 2 सौ रु. प्रति गाय के हिसाब से लिया जा रहा है. प्रतिदिन चार पांच गायें प्रजनन के लिए पहुंच रही हैं.

श्री कृ-ण गोशाला कैलाशनगर

1904 में इस गोशाला की स्थापना की गयी है. आदर्श गोशाला के रुप में इस गोशाला को जाना जाता है. गोवंश की संख्या 301 है. हरियाणा, साहीवाल अच्छी भारतीय नस्लें हैं. गोमाताएं बहुत ही अधिक दूध दे रही है गोमाता का दूध गोशाला से बीमार व्यक्ति एवं बालकों को मिल रहा है. जर्सी तथा वर्णसंकर नस्लें भी मौजूद हैं. वर्तमान में चारे की व्यवस्था बाहर से करनी पड़ रही है.

गाजियाबाद में बहुत ही सुंदर गोशाला मौजूद है. गोपा-टमी के दिन वैज्ञानिक जानकारियों के साथ में स्मारिका का प्रकाशन कर निःशुल्क वितरण किया जाता है. गोवंश संवर्धन के साथ गोवंश रक्षण करने के लिए संगठित प्रयत्न चल रहा है. बहुत ही बढ़िया नस्ल के सांढ तैयार किये गये हैं. नस्ल सुधार का कार्य प्रगति पर है.

. बीमार व्यक्तियों को पूरी तरह से अच्छा करने के लिए पंचगव्य शिविर लगाये गये हैं. पंचगव्य महो-ाधियों के बहुत ही अच्छे परिणाम मिलने के कारण मांग चरम सीमा पर है.

पंचगव्य औ-ाधि तैयार करने का संपूर्ण प्रशिक्षण भारतीय जरव जंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से दिया जा रहा है.

गोवंश को स्वावलंबी बनाने के लिए गोबर से अग्निहोत्र करने के लिए कंउे, सभी प्रकार की जैविक खादें, गोबर से गोबर गैस, गोमूत्र से तैयार दवाएं बहुत बड़ी मात्रा में तैयार की जा रही हैं. समय समय पर रा-ट्रीय स्तर पर विशाल सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं. रा-ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वारा बहुत ही उत्साह के साथ संगठित होकर गोवंश संवर्धन का कार्य किया जाता है.

सौलाना

श्री राकेश कुमार वर्मा गायत्री गोशाला सौलाना डाकघर धौलाना में गोवंश संवर्धन कर रहे हैं.

जिला मुजफरनगर

उकावली

श्री रविन्द्र प्रताप गोशाला साधना कुंज ग्राम उकावली डाकघर बुढ़ाना दूरभा-ा 01392-234724 मोबाइल 09219960299 गोवंश संवर्धन कर रहे हैं.

जिला पीलीभीत

रमपुरा फकीरे

मां भगवती गोशाला ग्राम नवदिया मकसूदपुर डाकघर रमपुरा फकीरे जिला पीलीभीत में गोवंश संवर्धन किया जा रहा है.

जिला औरैया

श्री राम रघुबीर गौशाला समिति

2001 में श्री कैलाश कुमार तिवारी जी अध्यक्ष तथा श्री रमेश चन्द्र तिवारी जी मंत्री 9528213964 के द्वारा गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए देशी गोवंश की नस्ल सुधार करने के लिए ग्राम कुदरकोट औरैया में श्री राम रघुबीर गौशाला समिति की स्थापना की गयी है.

वर्तमान में देशी नस्ल के 2 सांड गोशाला में हैं. दूध से हर साल 2,16,000 रु. मात्र मिल रहा है. वर्तमान में मात्र 10,800 लीटर दूध उत्पन्न हो रहा है. वर्तमान में दूध मात्र 20 रु. लीटर बेच रहे हैं.

नस्ल सुधार करने के लिए अच्छे सांडों की आवश्यकता है. दूध का उत्पादन नस्ल सुधार करने पर बढ़ जायेगा तथा आदर्श गोशाला के रुप में गोशाला बनाने के लिए जैविक खादों का विस्तार करने की योजना है.

गोमूत्र से अर्क तैयार कर वर्तमान में मात्र 1,50,000 रु. हर साल प्राप्त करते हैं. गोमूत्र से हर तरह की महो-ाधि तैयार करने की आवश्यकता है.

जैविक खेती को प्रोत्साहन देने के लिए गोबर तथा गोमूत्र का उपयोग कर कई प्रकार की जैविक खादें तैयार कर रहे हैं.

250 गायों की क्षमता वाली गोशाला में 2 एकड़ भूमि पर 15 पेड़ लगाकर एवं 3 एकड़ में बरसीम, चरी, हर ऋतु की सब्जी लगाकर 162 देशी गोवंश की सेवा 5 कर्मचारी कर रहे हैं.

विवेकानन्द श्री कृ-ण सहार गौशाला समिति

1992 में गोऋ-ि स्वर्गीय श्री निहालचन्द्र जी तनेजा एवं श्री उमेश चन्द्र जी पोरवाल के द्वारा देशी गोवंश के संरक्षण करने के लिए 3 बीघा भूमि पर 20 पेड़ लगाकर ग्राम सहार जिला औरैया 206248 मोबाइल 9406144790, 9424262229 में विवेकानन्द श्री कृ-ण सहार गौशाला समिति स्थापित की थी.

वर्तमान में गोशाला के सामने प्रमुख समस्या व्यक्ति की है. गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए खाद तथा धूप बनाने की योजना है.

वर्तमान में देशी गोवंश 116, दोगले गोवंश 13 हैं. साल का दस लाख रु. खर्च है. चरी तथा बरसीम उत्पन्न कर गायों को खिला रहे हैं. दूध का भाव 30 रु. है.

श्री प्रेम नारायण कपूर जी अध्यक्ष 9336604949, डा. कमल किशोर गुप्ता जी उपाध्यक्ष 9838072625, श्री सममीर विश्नोई जी मंत्री 9936579850, श्री राजकुमार वधावनजी को-ाध्यक्ष 9415128921 विश्व हिंदू परि-द के 80 सदस्यों तथा 4 सहयोगियों के साथ में देशी गोवंश के संवर्धन करने के लिए संध-र् कर रहे हैं.

औरैया

अखिल विश्व गायत्री परिवार तथा विश्व हिंदु परि-द के द्वारा गोवंश संवर्धन करने के लिए नगर के बीचो बीच बहुत ही सुंदर गोशाला चलायी जा रही है. गायत्री प्रज्ञापीठ में गोवंश संवर्धन करने के लिए बहुत सारी गतिविधियां चलायी जा रही हैं. बाहर से विशे-ज्ञों के मार्गदर्शन में गोवंश सेवकों को बहुत ही ठोस परिणाम लाया जा रहा है.

अजीतमल

जनता बायो गैस

जनता बायो गैस संयंत्र राज्य परियोजना संस्थान अजीतमल जिला ओरैया उत्तरप्रदेश के द्वारा 1978 में तैयार किया गया है. जनता बायो गैस की तकनीक चीन के बायो गेस पर आधारित है. 2 से 10 घनमीटर तक के बायो गैस बनाये जा सकते हैं.

अजीतमल में रा-ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वारा गोवंश संवर्धन संरक्षण करने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार का सहयोग लिया जा रहा है.

रसुलपुर

डा. अशोक कुमार ढाका जी इटावा गोवंश चिकित्सक सरकारी अधिकारी के सहयोग से श्री महेन्द्र प्रताप सिंह भूतपूर्व सरपंच रसुलपुर निकट अटसू के द्वारा किसान विद्यालय खोलकर जैविक खेती एवं गोवंश संवर्धन का कार्य बहुत ही पहले से किया जा रहा है. गोवंश पर बहुत सारे अनुसंधान किये गये हैं. गोवंश पर किसानों को मार्गदर्शन करने के लिए नई तकनीक अपनायी गयी हैं. अग्निहोत्र कृ-ि के माध्यम से किसानों को अधिक फसल उत्पन्न करने के लिए प्रेरित किया गया है.

आईटीसी की मदद से किसानों के लिए कंप्यूटर पर सीडी एवं डीवीडी दिखाई जा रही है. किसानों के सभी प्रशिक्षणों में भाग लेकर विश्व किर्तीमान बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं. 1966 में एक एकड़ में अधिकतम गेंहू उत्पन्न कर विश्व का ध्यान आकर्-ित किया है. गन्ने के विश्व किर्तीमान को बनाने के लिए 2002 में प्रयत्न किया गया है. किसानों को अग्निहोत्र से जैविक खेती करने के लिए 18 एकड़ भूमि पर विभिन्न जड़ी बूटी तथा फल, फूल आदि पर प्रयोग करके प्रत्यक्ष मार्गदर्शन दिया जा रहा है.

जिला इटावा

इटावा

श्री सिद्ध गुफा जीव रक्षा गोशाला

2001 में ब्रहमचारी श्री शम्भू नाथ जी अध्यक्ष 9219941663 ने इटावा रेल्वे स्टेशन से 2 किलोमीटर दक्षिण में प्रसिद्ध टिक्सी मंदिर तथा सुमेर सिंह किला के पास में ग्वालियर रोड, इटावा 206001 में श्री सिद्ध गुफा जीव रक्षा गोशाला की स्थापना पुलिस द्वारा कसाईयों से छुड़ाये गये गोवंश की सेवा करने के लिए की थी.

श्री देवर्-िा द्विवेदी सचिव 9412572668 वर्तमान में 151 देशी गोवंश, 14 दोगले गोवंश के लिए 2 एकड़ भूमि पर 20 पेड़ लगाकर एवं 1.5 एकड़ भूमि पर चरी, मक्का, बाजरा, बरसीम, जई उगाकर नस्ल सुधार कर रहे हैं.

11 सदस्यों तथा 3 सहयोगियों के साथ में गोझरण अर्क, कीटनाशक, केंचुआ खाद बना रहे हैं. मात्र 1,04,000 रु. हर साल प्राप्त हो रहे हैं.

7045 लीटर दूध हर साल होता है. दूध का मूल्य मात्र 25 रु. लीटर है.

पैसों की कमी के कारण ही वर्तमान में गोशाला को स्वावलंबी बनाने के लिए गाय के गोबर तथा गोमूत्र के सभी उत्पाद तैयार करने का कार्य नहीं कर पा रहे हैं.

श्री सिद्धगुफा संवाई दिव्य योग संस्थान 1977 से ब्रहमचारी श्री शम्भूनाथ जी के निर्देशन में योगासन, नेति, प्राणायाम, दिव्य ध्यान, साधना आदि कार्य चल रहा है. गोशाला की योजना भी संस्थान के उददेश्यों में निहित थी. गोशाला के द्वारा कुल 733 गोवंश को बचाया गया है. 2000-01 में 121, 2003-04 में 72, 2004-05 में 160, 2005-06 में 118, 2006-07 में 61, 2007-08 में 16, 2008-09 में 78, 2009-10 में 32, 2010-11 में 08, 2011-12 में 67 गोवंश बचाये गये हैं.

गहरे नाले के कारण गोशाला की भूमि लगातार कटती जा रही है. गोशाला की पक्की बांउन्ड्री बनाना अत्यंत आवश्यक है.

वर्तमान गोशाला में सभी गोवंश सुविधापूर्वक नहीं रह पाते हैं तथा बीमार गोवंश को स्वस्थ गोवंश से अलग रखने हेतु आवास की व्यवस्था करने के लिए पक्की गोशाला का विस्तार करना आवश्यक है.

भूसा गोदाम की व्यवस्था करना जिससे फसल पर सस्ता भूसा खरीद कर रखा जा सके.

इटावा के दक्षिण किनारे पर काफी गोवंश हैं लेकिन यहां पर राजकीय पशु चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध नहीं है.

यदि दो कमरे का पशु केंद्र गोशाला परिसर में निर्मित किया जाये तथा पशुपालन विभाग एक पशुधन प्रसार अधिकारी की नियुक्ति कर दे जनता के साथ साथ गोशाला के गोवंश की चिकित्सा एवं कृत्रिम गर्भाधान की सेवा उपलब्ध हो सकेगी.

वर्तमान में मेजर आर.सी. मिश्र जी को-ाध्यक्ष 9359601541 गोशाला का संचालन कर रहे हैं. पूर्व प्रोफेसर जनता कोलेज बकेवर की देखरेख में ज्वार, हरी चरी, बरसीम, जई आदि लगाकर वर्-ा भर हरे चारे की व्यवस्था की गयी है.

ललितपुर

ललितपुर मध्यप्रदेश की सीमा से लगा बहुत ही महत्वपूर्ण केंद्र है. जैन संगठन के नेतृत्व में अखिल विश्व गायत्री परिवार के सहयोग से गोशाला प्रारम्भ कर गोवंश संवर्धन का कार्य बाहर से विशे-ाज्ञों को बुलवाकर उनका मार्गदर्शन तथा प्रशिक्षण का कार्यक्रम बहुत लंबे समय से उत्साह के साथ में चल रहा है.

गोकुल

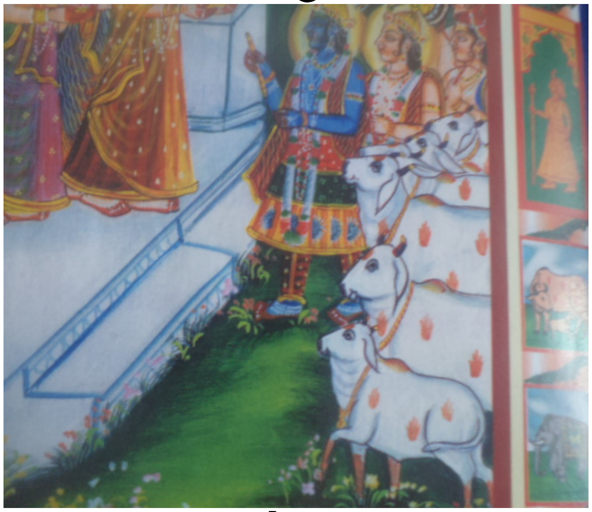

गोधन

गोकुल का महत्व व्रज में सबसे अधिक माना गया है. गोकुल में गोधन भगवान श्री कृ-ण के समय में चरम सीमा पर था.

चरम सीमा पर गोधन

गोकुल में गोधन एक बार फिर से चरम सीमा पर होगा.

प्रेरणा

भगवान श्री कृ-ण की लीला निरन्तर होने के कारण ही गोकुल को भागवतकार बहुत अधिक वर्णन कर सुनने वालों को एक बार गोकुल आने के लिए प्रेरित करते हैं.

लीला

गोकुल में आज भी सारस्वत कल्प के समान ही नित्य भगवान श्री कृ-ण साक्षात लीला करते हैं.

आरती

आचार्य श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य के वंशज श्री चीनू बावा यहां पर मौजूद हैं तथा वै-णवों का मार्गदर्शन श्री यमुना जी की आरती संध्या के समय बहुत ही संदर तरीके से कर तथा प्रवचन के माध्यम से कर रहे हैं.

8 करोड़

श्री चीनू बावा नित्य उत्सव एवं मनोरथ करवाते हैं. उनके दर्शन करने के लिए पूरे विश्व से हर साल 8 करोड़ वै-णव आ रहे हैं.

दामोदरदास हरसानी जी की बैठक

श्री दामोदरदास हरसानी जी की बैठक श्री गोकुलनाथ जी की बैठक के पास में श्री ठकराणीधाट पर है. आप यहां पर नित्य बिराज रहे हैं.

ललिता सखी

लीला में दामोदरदास जी भगवान की ललिता सखी हैं. श्री महाप्रभुजी श्री दामोदरदास जी के ह्रदय में बिराज कर सदैव ही वै-णवों पर कृपा कर रहे हैं.

अंतरंग सेवक

श्री महाप्रभुजी के साथ में पृथ्वी परिक्रमा के समय में तीनों बार साथ में रहकर श्री महाप्रभुजी की सेवा की है. श्री दामोदरदास जी श्री महाप्रभुजी के अंतरंग सेवक हैं. श्री महाप्रभुजी ने कलियुग में दामोदरदासजी को सर्वप्रथम ब्रहम संबंध देकर जीव को सेवा का अधिकार दिया है.

ब्रहम संबंध

वर्तमान में वल्लभकुल के आचार्य दामोदरदासजी के भाव से ही जीवों को ब्रहम संबंध दे रहे हैं.

माध सुद 4 संवत 1531 को आपका जन्म हुआ है. आप भूतल पर 76 साल तक रहे हैं. आप श्री गुंसाई जी के समय में भी वै-णवों को मार्गदर्शन करते रहे हैं. आपका लीला में प्रवेश संवत 1607 में हुआ है.

रधुनाथलाल जी की बैठक

श्री गुंसाई जी के पांचवे पुत्र श्री रघुनाथजी की बैठक है. कारतिक सुद 12 संवत 1611 बुधवार को अडेल में प्रकट हुए हैं. बचपन में आपने श्री गुंसाई जी के 108 नाम की रचना श्री नाम रत्नाख्य स्त्रोत श्री महाप्रभुजी एवं श्रीनाथजी के आर्शीवाद से की है.

श्री गोकुलचंद्रमाजी

श्री गुंसाई जी के प्रति बहुत ही अधिक आसक्ति रहने के कारण ही श्री गुंसाई जी ने अपना चित्र चित्रकार

के पास से बनवाकर दिया है. श्री गोकुलचंद्रमा जी के स्वरुप की सेवा आपने की है.

कामवन

वर्तमान में श्री गोकुलचंद्रमा जी का स्वरुप कामवन में है.

श्री रामचंद्र

आप 18 पुराणों तथा 18 उपपुराणों में प्रवीण हैं. आपने सर्वोत्तम स्त्रोत, श्री पुरु-ोत्तम सहस्त्रनाम एवं -ोडश ग्रंथ पर टीका लिखी है. आपका उपनाम श्री रामचंद्र भी है.

श्री राम चरित्र मानस के रचियता श्री तुलसीदास जी को उनके भाई श्रीनंददास जी के साथ में श्री गुंसाई जी के पास में आने पर उनके आराध्य श्रीराम के स्वरुप में उनकी पत्नी जानकी के साथ में दर्शन दिये थे.

जय गोपाल

आपके पांच पुत्र हुए है जिनमें से श्री गोपाललालजी ने जय गोपाल के नाम से संप्रदाय चलाया है.

श्री यदुनाथलाल जी की बैठक

श्री गुसांई जी के छठवे पुत्र श्री यदुनाथजी की बैठक है. आपका प्राकटय अडेल में चैत्र सुद 6 संवत 1615 को हुआ है. आपमें ज्ञान धर्म प्रकट बिराज रहा हैं.

बालकृ-णजी से प्रेम

आपके वर्तमान वंशजों में भी यह गुण साक्षात प्रगट है. आपको गुंसाई जी के तीसरे लाल श्री बालकृ-णजी से विशे-ा प्रेम था इसलिए आपने श्री बालकृ-णलालजी के स्वरुप की सेवा श्री द्वारकाधीश के साथ में की है.

आपके पांच पुत्र हैं. आपके वंशज वर्तमान में सूरत वड़ोदरा में श्री बालकृ-णजी की सेवा कर रहे हैं. बचपन से ही अध्ययन के प्रति विशे-ा रुचि थी.

आयुर्वेद

अनेक शास्त्रों तथा संप्रदाय के ग्रंथों के अध्ययन के साथ में आयुर्वेद का अध्ययन किया. मंदिर वस्त्र सेवा हमेशा करते थे.

वल्लभ दिग्विजय ग्रंथ

संवत 1658 में गुजरात में चाणोद में श्री वल्लभ दिग्विजय ग्रंथ पूर्ण किया है. 45 व-ा की आयु में ही नित्य लीला में प्रवेश किया.

श्री घनश्यामलाल जी की बैठक

श्री गुंसाई जी के सातवे पुत्र श्री घनश्याम जी की गोकुल में बैठक है. आपका प्राकटय मथुरा में कारतक वद 13 संवत 1628 को हुआ. आपका उपनाम श्री प्राणवल्लभ है. आप में वैराग्य का गुण था. आप परम विद्वान थे. आप मदनमोहन जी की सेवा करते थे.

उ-णकाल के समय में आप नेत्र बंद कर सारी रात पंखे की सेवा करते थे. एक समय कोई आपके सेव्य दोनों स्वरुपों को रात्रि के समय में पधरा गया.

सदेह लीला

सूर्योदय के समय में शंखनाद के समय में आपको स्वरुपों के दर्शन न होने पर बहुत ही अधिक विरह हुआ तथा आप अन्न जल का त्याग कर सात दिनों तक भूतल पर बिराज कर सदेह लीला में पहुंच गये.

श्री गोकुलनाथजी आपके पास में रोज आते थे. श्री धनश्यामजी एक बुंद जल तथा प्रसादी की सखड़ी का एक कण लेते थे. श्री गुंसाई जी के द्वारा की गयी मधुरा-टक की टीका का अवगाहन करते थे. आप सदैव सेवा में ही बिराजते थे. आपको एक भी देह धर्म बाधा नहीं करता था. आपका अलौकिक स्वरुप था.

श्री गुंसाई जी की पहली बैठक

श्री नवनीतप्रिया जी के मंदिर में श्री गुंसाई जी की बैठक है. संवत 1642 में श्री गुंसाई जी ने गोविंदस्वामी के साथ में सदेह सुंदरशीला के पास में श्रीनाथजी की नित्यलीला में प्रवेश किया है.

सम्मान

श्री गुंसाई जी को उनकी गो सेवा की अदभुत भावना के कारण गोस्वामी के सम्मान से अकबर बादशाह ने सम्मानित किया था. गोस्वामी का ही अपभ्रंश गुंसाई हुआ तथा श्री विठठलनाथजी को हमेशा ही विश्व में श्री गुंसाई जी के नाम से ही जाना जाता है.

गोस्वामी

आज भी श्री गुंसाई जी के वंशज गोस्वामी बालक के नाम से पहचाने जाते हैं. अकबर बादशाह ने श्री गुंसाई जी को न्यायधीश का सम्मान दिया है. श्री गुंसाई जी को शाही वेशभू-ाा से भी सम्मानित किया था.

अलोकिक चमत्कार

अकबर बादशाह अलौकिक चमत्कारों के कारण श्री गुंसाई जी से बहुत ही अधिक प्रभवित था. एक बार अकबर ने श्री गुंसाई जी को बहुत ही मूल्यवान रत्न भेंट किया था. श्री गुंसाई जी ने रत्न यमुना जी में पधरा दिया था.

अकबर बादशाह के द्वारा वापस रत्न मांगने पर अकबर को यमुना में हाथ डालकर रत्न निकालने के लिए श्री गुंसाई जी ने कहा. जब अकबर ने यमुना जी में हाथ डाला तो अनेको रत्न निकल आये. अकबर यह देखकर दंग रह गया.

अकबर बादशाह की भेंट

श्री गोकुल श्री गुंसाई जी को अकबर बादशाह के द्वारा भेंट किया गया है. श्री गुंसाई जी को अकबर बादशाह दीक्षितजी कहता था. श्री गुंसाई जी ने अकबर बादशाह को पूर्ण पुरु-ोत्तम के रुप में दर्शन दिये हैं.

जन्मा-टमी के दिन अकबर बादशाह वेश बदलकर बीरबल के पीछे नवनीतप्रिया जी के मंदिर में दर्शन करने आया. श्री गुंसाई जी के अलावा किसी ने अकबर को नहीं पहचाना.

श्री गुंसाई जी नवनीतप्रियाजी को बहुत ही आनन्द में पालने में झुला रहे थे. छितस्वामी बहुत ही उत्साह के साथ में नवनीतप्रिया जी के सामने यह पद गा रहे थे कि प्रिय नवनीत पालने झुले श्री विठठलनाथ झुलावे.

श्री गुंसाई जी ने अकबर को जब दर्शन कर वापस जाने लगा तब गुप्त रीत से महाप्रसाद दिलवाया. अकबर को ऐसे दर्शन हुए कि विठठलनाथ पालने में बैठे हैं तथा नवनीतप्रियाजी उनको झुला रहे हैं.

श्री गुंसाई जी गोकुल में रहकर मथुरा के विश्रामधाट के चौबों के अग्रणी छितस्वामी जो बहुत ही चालाक तथा ठग थे को भी बहुत ही कड़ी परीक्षा खोटा रुपया तथा खोटा नारियल असली बनाकर अपना सेवक बना लिया है.

श्री गुंसाई जी के सेवक बनने के बाद में छितस्वामी के जीवन में बहुत ही चमत्कारिक परिवर्तन हुए थे.

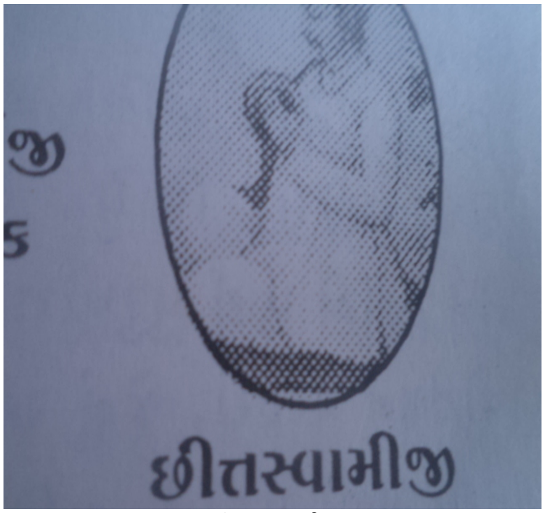

छितस्वामी

छितस्वामी बीरबल के पुरोहित थे. हर साल बीरबल के यहां पर व-र्षासन लेने के लिए आते थे. बीरबल के द्वारा छितस्वामी के इस पद जे वसुदेव किए पूरण तप सोई फलफलित श्री वल्लभदेह गाने पर शंका उत्पन्न की गयी.

बीरबल ने छितस्वामी को कहा कि मैं तो वै-णव हूं. आप बादशाह के सामने यह पद न गायें. बादशाह मलेच्छ है. बादशाह के पूछने पर आप उसे क्या उत्तर देंगे? छितस्वामी बीरबल से नाराज होकर कहा कि मेरे लिए तो तू मलेच्छ है इसलिए आज से उसका मुंह न देखने की प्रतिज्ञा करते हैं.

श्री गुंसाई जी ने छितस्वामी को गोकुल में अपनी अदभुत संगीत कला से परिचय करवाकर पद गाने के लिए प्रेरित किया है. छितस्वामी के पद विश्व में आज भी अ-टसखा के पदों के नाम से जाने जाते हैं.

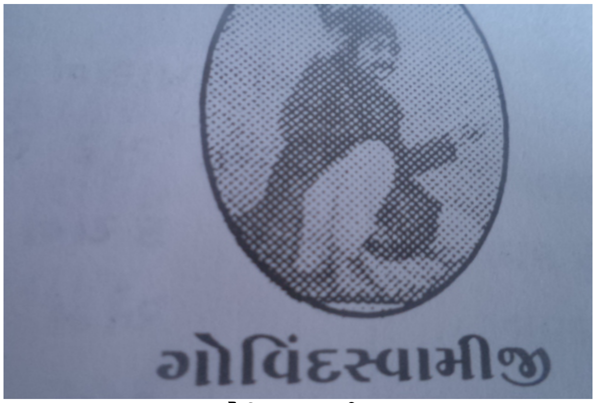

गोविंद स्वामी

गोविंदस्वामी गोकुल में श्री गुंसाई जी के सबसे प्रिय सेवक बने हैं.

गोविंदस्वामी ने श्री गुंसाई जी से संगीत की दिव्यकला को प्राप्त कर अदभुत पद तेयार किये.

अकबर स्वयं तानसेन के द्वारा गोविंदस्वामी के पद की तारीफ सुनकर वे-ा बदलकर नवनीतप्रिया जी के मंदिर में सुनने के लिए आया था.

गोविंद दास

गोविंदस्वामी सेवक बनने के बाद में गोविंददास के नाम से जाने गये.

श्री गुंसाई जी यहां पर साक्षात बिराज रहे हैं. वै-णवों को अदभुत अनुभव नित्य यहां पर हो रहे हैं. महाअलौकिक सुख वै-णवों को आज भी गुंसाई जी से मिल रहा है. इसलिए वै-णवों ने श्रीगोकुल में ही नित्य वास कर गुंसाई जी के दर्शन करने का आग्रह किया है.

इसलिए तो वै-णवों ने गाया है कि मानिकचंद प्रभु सर्वदा, श्री गोकुल करत विहार. सदा व्रज में ही करत विहार. युग युग राज करो श्रीगोकुल. यह सुख भजन प्रताप तेज तें छीन इत उत न टेरो. ऐसे भगवदीयन ने अनेक बधाईन में गाया है. आप सदा सर्वदा गोकुल में बिराजमान हैं.

श्री गिरधर जी एक समय संध्यावदन गादी के सामने बैठकर कर रहे थे. तब श्री गोकुलनाथजी ने श्री गिरधर जी को विनंती की कि आप गादी पर बिराजकर संध्यावदन क्यों नहीं कर रहे हैं? तब श्री गिरधर जी ने गोकुलनाथजी को कहा कि मुझे गादी पर श्री गुंसाई जी के दर्शन संध्यावदन करते हुए होते हैं. श्री गुंसाई जी के दर्शन यहां पर श्री गोकुलनाथ जी, श्री गिरधर जी को सदैव संध्यावदन करते हुए हैं.

श्री हरिराय जी की पहली बैठक

श्री हरिराय जी की बैठक गोकुल में श्री विठठलनाथ जी के मंदिर में है. एक बार श्री महाप्रभुजी के बड़े भाई श्री केशवभटटजी श्री गुंसाई जी के पास में आये तथा अपने मठ के लिए उनसे एक पुत्र की मांग की.

श्री गुंसाई जी ने एक दिन का समय अपने चाचाजी से मांगा. लेकिन दूसरे दिन श्री गुंसाई जी के सातों पुत्रों ने गोकुल में सेवा त्यागकर केशवभटट जी के साथ में जाने से साफ मना कर दिया.

तब श्री कल्याणरायजी को श्री केशवभटट को देने का निश्चिय किया गया. श्री कल्याणराय जो उस समय मात्र 10 साल के थे रात भर डर के मारे नहीं सोने के बाद में श्री गुंसाई जी से विनंती की कि मुझे गोकुल छोड़कर कहीं नहीं जाना है. श्री गोकुल के अलैकिक महत्व का एक पद श्री गुंसाई जी के सामने गाया.

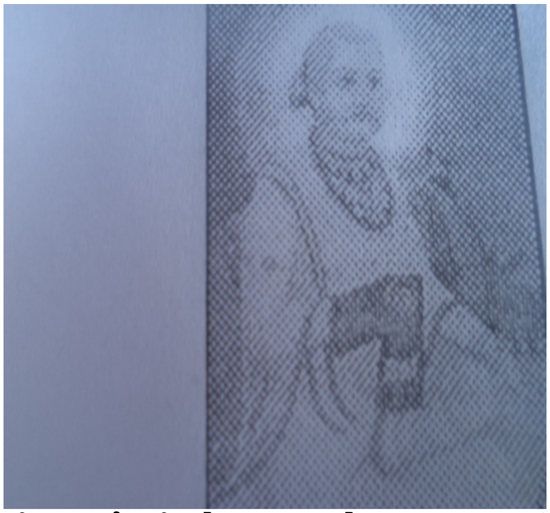

श्री गुंसाई जी ने प्रसन्न होकर अपना चर्वित तांबुल देकर श्री कल्याणरायजी को अभय वचन दिया. श्री गुंसाई जी के आर्शीवाद के कारण श्री गुंसाई जी के सदेह ही संवत 1642 में नित्य लीला में प्रवेश करने के बाद 5 साल बाद श्री हरिरायजी के रुप में श्री कल्याणराय जी के यहां पर श्री गुंसाई जी ने ही श्री गोकुल में भादरवा सुद पंचमी संवत 1647 को अवतार ग्रहण किया है.

अपने पिता श्री कल्याणरायजी के पास में समग्र शास्त्र, श्रीमद भागवत, सर्वोत्तम का अध्ययन किया था. अपनी कुशाग्र बुद्धि से ब्रहमवाद का ज्ञान प्राप्त किया था.

श्री विठठलनाथजी के मंदिर में श्री हरिरायजी श्री गोकुलनाथजी के पास में 10 साल की आयु से ही भगवदवार्ता श्रवण करते थे. साम्प्रदायिक भावना व्यवहार इतिहास श्री गोकलेशजी के सहवास से समझ लिया.

बचपन से ही भगवान तथा भक्तों के चरित्र श्रद्धापूर्वक सुनना पसंद था.

हरि, गुरु, वै-णवों का आदर करना तथा उनमें समानता का भाव रखना मुख्य था. वै-णवों के साथ में मिलकर सत्संग एवं भगवतवार्ता करते थे. श्रीमद भागवत तथा श्री सर्वोत्तम का सतत पाठ करना नित्य क्रम में था.

श्री गोकुलनाथ जी से आपने 8 साल की आयु में ही ब्रहम संबंध लिया है. श्री गोकुलनाथजी में आपकी गुरुभक्ति दृढ तथा अद्वितीय थी. प्रथम पवित्रा गोकुलनाथजी को पवित्रा बारस के दिन भेट करते थे. भोजन करने के पूर्व श्री महाप्रभुजी श्री गुंसाई जी या कोई भी सेव्य स्वरुप, निधि, स्वगुरुचरण का चरण स्पर्श करने का जीवन भर का नियम था.

उस समय में वै-णवों ने भी नियम लिया था कि चलकर 2 से 3 किलोमीटर तक श्री गुंसाई बालक के चरण स्पर्श कर भोजन करते थे.

श्री गोकुलनाथजी के भोजन करने के बाद में श्री हरिरायजी भोजन करते थे. श्री गोकुलनाथजी के नित्य लीला में प्रवेश करने पर श्री हरिरायजी को बहुत ही अधिक दुःख हुआ था. श्री हरिरायजी ने कई दिनों तक विप्रयोग में भोजन नहीं किया था.

श्री हरिरायजी को भगवद आज्ञा हुई कि आप श्री सर्वोत्तम जी के सतत जप करे. श्री हरिरायजी ने तीन महारात्रि तक श्री सर्वोत्तम जी का पाठ किया जिससे श्री महाप्रभुजी ने प्रकट होकर अपने प्राकटय का कारण समझाया तथा निजानंद का दान किया.

तब से श्री हरिरायजी श्री महाप्रभुजी के स्वरुपानंद में मानसी में मस्त रहते थे. श्री हरिरायजी को मानसी पराभक्ति सिद्ध हो गयी थी. हरिरायजी मानसी सेवा में मस्त रहते थे.

श्री महाप्रभुजी के पवित्र वंश में जन्म लेने के कारण श्री हरिरायजी सदैव ही मर्यादा का पालन करते थे. आपकी मान्यता थी कि सत्कर्म तथा दान करने से मानव की आयु बढ़ती है.

श्री हरिराय जी की मान्यता थी कि हरि गुरु वै-णव की निंदा कभी नहीं करनी चाहिए.

आदर्श त्याग भावना का उदाहरण परस्त्री गमन आदि विचार का त्याग करना आवश्यक है. परस्त्री के संबंध से भगवान से चित्त दूर होता है. इसलिए परस्त्री को मन से भी ग्रहण नहीं करनी है. अनायास यदि परस्त्री का प्रसंग आता है तो परस्त्री को दूर रहने का उपदेश देना चाहिए.

ब्रहम संबंध लेने के बाद में असमर्पित वस्तुओं का पूरी तरह से त्याग करना अनिवार्य है.

गृहस्थाश्रम केवल भगवत सुख के लिए आवश्यक है. 24 साल की आयु में आपने विवाह किया था. वहुजी

बहुत ही सुन्दर तथा अलौकिक प्रतिभा तथा भाव सम्पन्न थी.

श्री बहुजी दीर्घायु तथा सेवा के लिए पूरी तरह से समर्पित थी. श्री हरिरायजी के चार पुत्र श्री गोविन्दजी, श्री विठ्ठलरायजी, श्री छोटाजी, श्री गोराजी थे.

श्री हरिरायजी सुबोधिनीजी के मर्मज्ञ थे तथा उनकी रचनाओं में भी भावगंभीरता देखने को मिली है. 1677 में माला तिलक संबंधी विवाद भी श्री हरिरायजी ने देखा तथा श्री गोकुलनाथजी ने माला तिलक के विवाद को जिस कुशलता के साथ में हल किया है वह भी देखा है.

मुगलों के भारत में आक्रमण के कारण ही श्री गोकुल पर भी खतरा दिखने लगा था.

औरंगजेब के द्वारा 1726 में श्री गिरीराजजी तथा श्री गोकुल में 2 मंदिरों श्रीनाथजी तथा श्री गोकुलनाथजी की छतों को तोड़ने का कार्य किया गया था. श्री हरिरायजी की इच्छा भवि-य में होने वाले उपद्रव के पूर्व श्री विठ्ठलनाथजी को मेवाड़ पधराने की थी.

श्री हरिरायजी ने गोकुल छोड़ने के लिए श्री विठ्ठलनाथजी से विनंती की थी लेकिन श्री विठ्ठलनाथजी ने मना किया. श्री विठ्ठलनाथजी की सेवा श्री हरिरायजी करते थे.

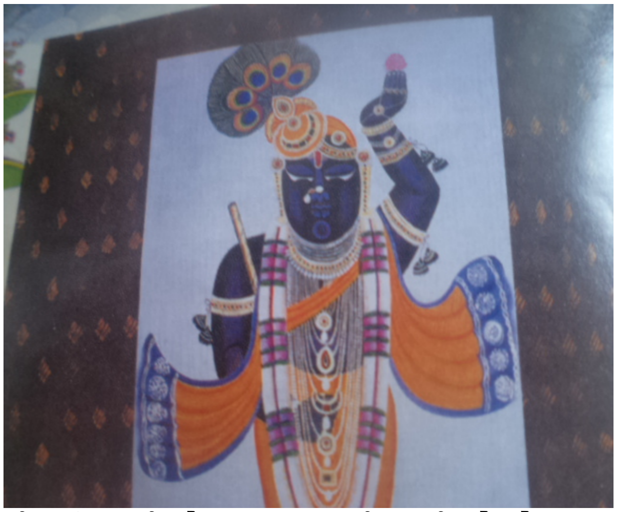

श्री हरिरायजी ने एक बार श्रीनाथजी के मेवाड़ पहुंचने के पूर्व श्री विठ्ठलनाथजी को मेवाड़ पहुंचाने के लिए विनंती की. श्री विठ्ठलनाथजी ने श्री हरिरायजी के दुःख को देखकर श्री गोकुल छोड़ने की अनुमति दी.

कलियुग में अपने धर्म को सुरक्षित रखने के लिए गंभीरता के साथ में विचार करने के बाद में श्री हरिरायजी ने पहली बार अपने सेव्य स्वरुप के साथ में गोकुल से 1715 में सुरक्षित स्थान मेवाड़ में उदयपुर के महाराणा के आमंत्रण पर श्रीनाथद्वारा के लिए प्रस्थान किया.

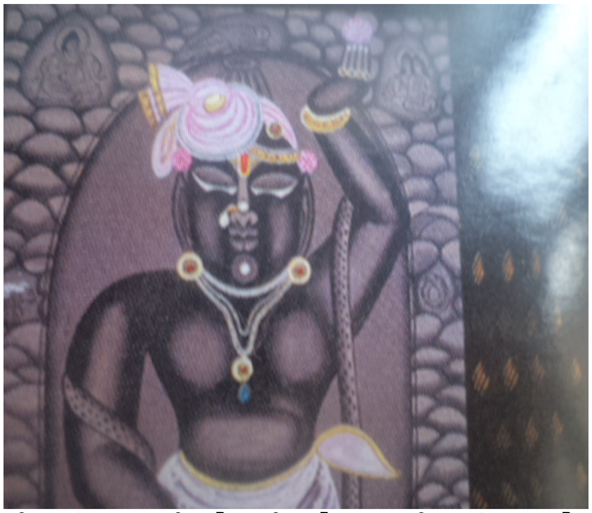

श्री हरिराय जी ने श्री गोकुल की महिमा को अपने पदों में वर्णन किया है. जैसलमेर में श्री गिरधारी जी के मंदिर में श्री गोकुल का विरह होने के कारण बहुत ही बैचेन रहते थे.

श्री गोकुल में सबसे अधिक समय रहकर 175 ग्रंथ संस्कृत में लिखे हैं. वै-णवों के समझने तथा अपने आचरण में उतारने के लिए श्री हरिरायजी के द्वारा लिखित संस्कृत भा-ाा के ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद भी किया गया है.

कलियुग में अन्याश्रय का त्यागकर श्री हरिरायजी के ग्रंथ भक्तिमार्ग में ले जाने के लिए अदभुत हैं. श्री हरिरायजी ने वै-णवों के लिए सरल उपाय बताया है.

श्री निजाचार्य-टकम उपजाति, श्री वल्लभ पंचाक्षर स्त्रोतम, श्री वल्लभभावा-टकम, श्री प्रभाता-टकम, श्री गोकुलेश सेवाहिकम, श्रीमद गोकुलचन्द्र-टकम, श्री नवनीतप्रिया-टकम, श्री भुजंगप्रयाता-टकम, श्री स्मरणा-टकम, श्री स्वप्रभुविज्ञप्तिः, श्री द्वितीया स्वप्रभु विज्ञप्तिः, श्री कृ-णचरण विज्ञप्तिः, दैन्या-टकम, मध्यान्हलीला, श्री गोकुलप्रवेशलीला, प्रमाणिका-टकम, श्री गिरधररा-टम, प्राथना-टकम, श्री गोपीजनवल्लभा-टकम, द्वितीय श्रीकृ-णशरणा-टकम, श्रीकृ-णशरणा-टकम, नैवेद्यसम्बन्धि स्त्रोतम, मूलरुपसंशयनिराकरणम, प्रातर्युगलस्मरणम, पु-टिमार्गलक्षणानि, पु-टिपथमर्मनिरुपणम, ब्रहमसंबंधवाक्यकठिनांशविवेचनम, अ-टाक्षरमंत्रपूर्वपक्षनिराशः, स्वमार्गीयसाधनरहस्यम, भक्तिमार्गपु-टिमार्गत्वनिश्चयः, भक्तिदवैविध्यनिरुपणम, स्वमार्गीयभक्तिदवैविध्यविवेकः, स्वमार्गीयमुक्तिदवैविध्यनिरुपणम, स्वमार्गीयस्वरुपस्थापनप्रकारः, स्वमार्गीयसेवाफलरुपनिर्णयः, श्री मत्प्रभोश्रिचिन्तनप्रकार, पु-टिमार्गीयस्वरुपनिरुपणम, स्वमार्गीयशरणसमर्पणसेवादिनिरुपणम, गद्यार्थ, अ-टाक्षरमन्त्रार्थ, दुःसंगविज्ञानप्रकार निरुपणम, निवेदनतात्पर्यार्थः, सर्वात्मभावनिरुपणम, अ-टाक्षरशरणमंत्रपूर्वपक्षनिराशः, मधुरा-टकतात्पर्यम, भगवतप्रादुर्भावसिद्धान्तः, प्रभुप्रादुर्भावविचारः, श्रीमत्प्रभुप्राकटयहेतुनिर्णयः, चतुःश्लोकी, प्रातःस्मरणम, श्री यमुना विज्ञप्ति, विज्ञप्ति, मार्गस्वरुपनिर्णय, स्वमार्गीयकर्तव्यनिरुपणम,

23 भा-ााओं में श्री हरिरायजी के द्वारा ग? ण्वं प? की रचना की है. व्रज भा-ाा में गद्य एवं पद्य के रुप में उल्लास, श्रीनाथजी के चरण चिन्ह, नित्यलीला आदि 44, 41 शिक्षा पत्र, भावभावना, लीलाभावना, श्री महाप्रभुजी की आदि प्राकटय भावना, श्री वल्लभकुल के स्वरुपों की भावनार्थ, रहस्यभावना की रचना, 84 वचनामृत, 84 तथा 252 वै-णवों की वार्ता के गूढ़ भावों पर भावप्रकाश द्वारा प्रकाश डालकर कुल 300 ग्रंथों की रचना की है.

श्री हरिराय जी को शिक्षासागर के नाम से जाना जाता है. 41 शिक्षापत्र सत्संग के लिए सर्वश्रे-ठ है. सत्संग हमारी प्राथमिक आवश्यकता है. शिक्षापत्र पढ़ने के कारण संतो-ा, शांति, मार्गदर्शन मिलता है.

गुजराती, पंजाबी, मारवाड़ी में धोड़पद प्रसिद्ध हुए हैं. श्री हरिरायजी को हरिराय महाप्रभु के नाम से जाना जाता है. श्री हरिरायजी को श्री गुंसाई जी के चर्वित तांबुल के कारण ही प्रभुचरण के नाम से भी संबोधित किया जाता था. श्री हरिराय जी यहां पर नित्य बिराज कर वै-णवों को दर्शन देकर उनके सभी अलौकिक मनोरथ पूरे कर रहे हैं.

श्री हरिराय जी ने श्री गोकुल में भगवदरस में मस्त होकर श्रीमद भागवत सप्ताह की है. श्रीमद भागवत सप्ताह के समय महाअलौकिक रस उत्पन्न कर सभी वै-णवों को परम आनन्द प्रदान किया है.

श्री हरिराय जी ने भूतल पर 125 सालों तक बिराजकर गोवंश के संवर्धन करने सबसे अधिक कार्य किया है. श्री निरोध लक्षण ग्रंथ की टीका आपने यहां पर सबसे पहले की है. आपके कृपापात्र सेवक हरजीवनदास के साथ मिलकर रहस्य वार्ता करते थे.

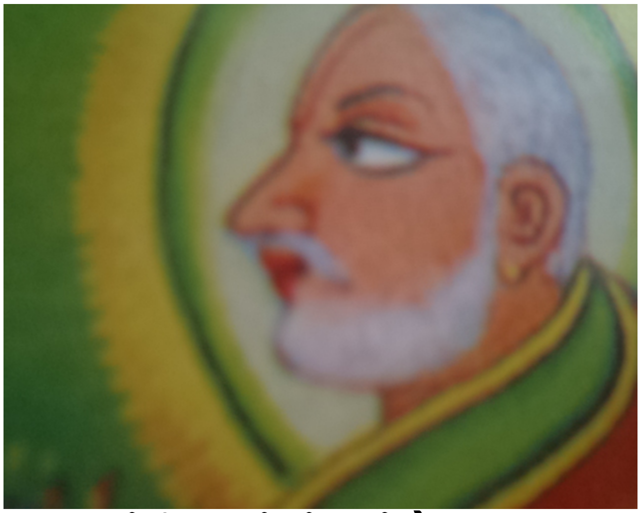

श्री गिरधर जी की पहली बैठक

श्री गिरधर जी की बैठक गोकुल में श्री गोकुलनाथजी के मंदिर में गुंसाई जी की बैठक के पास में है. श्री गिरधर जी श्री गुंसाई जी के प्रथम पुत्र हैं. श्री गुंसाई जी श्री गिरधरजी को गोवर्धन कहते थे. श्री गिरधरजी के 120 वचनामृत प्रसिद्ध हैं.

श्री गिरधर जी 6 अलौकिक गुणों से परिपूर्ण थे. 6 गुणों के धारण करने के कारण ही नरभू-ाण कहा गया है. श्री गुंसाई जी के समान ही श्री गिरधरजी भी धर्म धुरंधर थे. धर्मी गुण प्रकट था तथा बाकी गुण गुप्त थे.

श्री गिरधरजी में अलोकिक सामर्थ्य होने के कारण ही श्री नवनीतप्रियाजी श्री गिरधरजी के माथे बिराजे हैं.

चार वेद 18 पुराण तथा 6 शास्त्र के जानकार होने के कारण ही श्री गिरधरजी परम विद्वान वक्ता थे. 1624 में श्रावण माह में बीरबल के आग्रह करने पर मथुरा में अकबर के सामने पंडितो के साथ में शास्त्रार्थ किया था.

6 जीवों को ही आपने ब्रहम संबंध दिया था तथा ब्रहम संबंध के बाद जीव लीला में प्रवेश कर गये थे. श्री गुंसाई जी ने श्री गिरधरजी को आगे ब्रहमसंबंध देने से मना कर दिया था. आपके कुल 40 सेवक थे.

श्री गिरधर जी कारतक सुद बारस 1557 के अडेल में जन्मे थे तथा श्री महाप्रभुजी के वंश में कल्पवृक्ष के समान थे. आप गौर वर्ण के थे तथा श्वेत धोती एवं उपरणा धारण करते थे. स्वभाव धीर गंभीर एवं विचारशील होने के कारण एकांत प्रेमी थे.

आठ साल की आयु में श्री गुंसाई जी के द्वारा काशी में भव्य समारोह कर श्री गिरधरजी का यज्ञोपवित संस्कार चेत्र सुद 5 को किया था.

गोपालपुर में श्रीनाथजी के सामने श्री गुंसाई जी ने श्री गिरधरजी को ब्रहमसंबंध दीक्षा दी थी. श्रीनाथजी की श्रंगार की सेवा श्री गुंसाई जी ने श्री गिरधरजी के हाथों से करवायी थी.

मागसर सुद 15 संवत 1615 में श्री माधवभटट की सुपुत्री श्री भामिनी जी के साथ में श्री गिरधर जी का विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ था. विवाह संस्कार के बाद बहुत ही आनन्द के साथ में सपरिवार श्री गुंसाई जी के द्वारा श्रीनाथजी का छप्पनभोग किया गया था. श्री गोपालपुर में भामिनी जी को श्री गुंसाई जी ने ब्रहमसंबंध दिया था.

1618 में श्री रुक्ष्मणीजी के लीला में प्रवेश करने के बाद में श्री भामिनीजी ने बहुत ही छोटी आयु में घर का सभी कार्य संभाल लिया था. 3 साल के यदुनाथजी के लालनपालन का कार्य श्री गुंसाई जी ने श्री भामिनी जी को दिया था.

1632 में श्री पदमावती जी के नित्यलीला में प्रवेश करने के कारण 4 साल के श्री धनश्यामजी के लालनपालन करने का भी कार्य श्री भामिनी जी को दिया गया था.

श्री गुंसाई जी के छठे लाल श्री यदुनाथजी तथा सातवे लाल श्री घनश्यामजी की बहुत ही अच्छी सेवा की थी. श्री गुंसाई जी ने श्री भामिनी जी को उनकी सेवा से प्रसन्न होकर वंश चलने का आर्शीवाद दिया था.

श्री गिरधरजी का वंश आज भी श्रीनाथद्वारा में श्रीनाथजी तथा श्री नवनीतप्रियाजी की सेवा कर रहा है.

श्री गिरधरजी के पुत्र आसो सुदी 15 श्री मुरलीधरजी, श्रावण सुदी 15 श्री दामोदरजी, पो-ा वद 6 श्री गोपीनाथजी का प्राकटय हुआ है.

महावद 7 1665 को श्री गिरधरजी ने श्री दामोदरजी को श्रीनाथजी तथा श्री नवनीत प्रिया जी का स्वरुप पधरा दिया था.

1616 में महावद 13 के दिन श्री गुंसाई जी के साथ में जगन्नाथजी के दर्शन करने के लिए पुरी गये थे.

1637 को श्री गुंसाई जी के साथ में द्वारका गये थे. तीन बार ब्रज परिक्रमा की थी.

80 व-र्ा 1 माह 5 दिन तक भूतल पर रहकर श्रीनाथजी की सेवा कर गोवंश के संवर्धन करने मार्गदर्शन किया. मागसर वद 2 1677 को श्री गिरधरजी श्री मथुरेशजी के मुखारविंद में श्रंगार करते हुए सदेह प्रवेश कर गये थे.

श्री गुंसाई जी एक बार विचार करने लगे कि मायावादी तो हमारे सामने आते नहीं हैं. मायावादी गोवंश विरोधी हैं. मायावादी तो आगे बहुत ही उपद्रव करेंगे. हमारे पास पृथ्वी परिक्रमा करने का अवकाश तो है नहीं.

श्री गिरधर जी ने श्री गुंसाई जी से पूछा कि आप क्या विचार करने लगे. तब श्री गुंसाई जी ने कहा कि हमारे सामने मायावादी आते नहीं हैं. श्री गिरधर जी ने कहा कि पुरु-ोत्तम के सामने मनु-य की क्या सामर्थ्य है जो सामने आकर बैठ सके.

श्री गिरधर जी श्री गुंसाई जी के सामने बैठकर मायावादी की तरह ही प्रश्न करने लगे तब श्री गुंसाई जी ने विस्तार से उत्तर दिये. प्रश्न उत्तर के बाद में विद्वन्मंडन ग्रंथ यहां पर प्रगट हुआ है. श्री गुंसाई जी श्री गिरधर जी पर बहुत ही प्रसन्न हुए हैं.

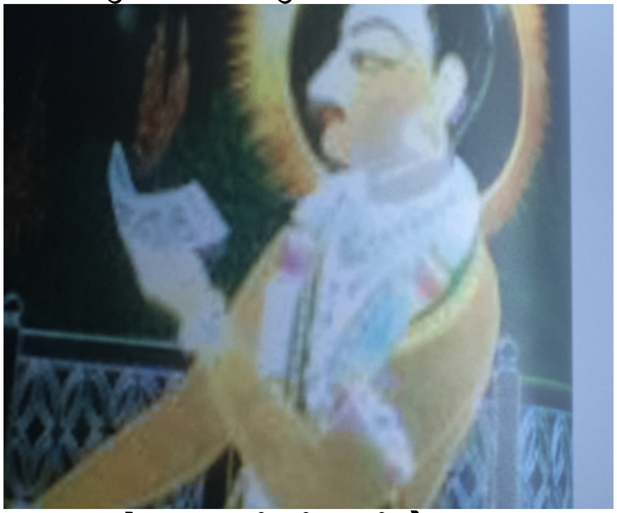

गोकुलनाथ जी की पहली बैठक

श्री गोकुलनाथ जी की बैठक श्री गोकुल में श्री गोकुलनाथजी के मंदिर में है. श्री गोकुलनाथजी एक बार ही श्री गोकुल के बाहर गुजरात में वै-णवों के अपार प्रेम के कारण ही 1 साल के लिए पधारे हैं.

1677 में माला तिलक के बारे में विवाद होने पर श्री गोकुल से बादशाह जाहगीर के पास में काश्मीर में श्री गोकुलनाथजी को जाना पड़ गया था.

श्री गोकुलनाथ जी यहां पर साक्षात बिराज रहे हैं. मागसर सुद 7 संवत 1608 से महावद आठम 1697 तक कुल 89 व-र्ा, 2 माह तथा 17 दिनों तक भूतल पर बिराजकर 84 252 वै-णव वार्ता, हास्य प्रसंग, वचनामृत आदि बहुत सारा साहित्य सिद्धांत को समझाने के लिए प्रगट किया है.

श्री गोकुलनाथ जी ने वै-णवों पर कृपा करने के लिए गुंसाई जी से पु-िट मार्ग का सिद्धांत पूछा. तब श्री गुंसाई जी ने पु-िटमार्ग का सिद्धांत कहा.

श्री गोकुलनाथ जी अपनी बैठक में बैठकर सिद्धांत के बारे में गंभीरता के साथ में विचार करने लगे. श्री गोकुलनाथ जी के परम प्रिय कल्याणभटट जी आये और सा-टांग दंडवत प्रणाम किया. चार घंड़ी बाद आपने कल्याणभटट की ओर देखा और पूछा कि कब आये?

श्री गोकुलनाथ जी ने कल्याणभटट को कहा कि मैं गुंसाई जी के पास में गया था और उनसे पु-िट मार्ग का सिद्धांत पूछा. आपने पु-िटमार्ग का सिद्धान्त कहा. पु-िटमार्ग की रीति तो महा कठिन है कछु बनती नांही.

पु-िट मार्ग के सिद्धांतों को वै-णवों को समझाने के लिए श्री गुंसाई जी से पूछकर गोकुलनाथ जी ने जो कहा है 24 श्लोक में कल्याणभटट ने लिखा है.

श्री गोकुलनाथ जी के 24 वचनामृतों में वै-णवों के लिए उपलब्ध है. श्री गोकुलनाथ जी के द्वारा तुलसी की माला तथा तिलक धारण करने की रक्षा करने के लिए मुसलमानों का कठोर विरोध किया गया था.

माला एवं तिलक के रक्षणहार श्री गोकुलनाथ जी के वंशज श्री सुरेश बावा श्री भी यहां पर बिराजकर नित्य उत्सव कर रहे हैं. जय जय श्री गोकुलेश के जयकारे के साथ में श्री गोकुलनाथ जी को मानने वाले गोवंश के संवर्धन करने के लिए अपार दान देकर धन्य हो रहे हैं.

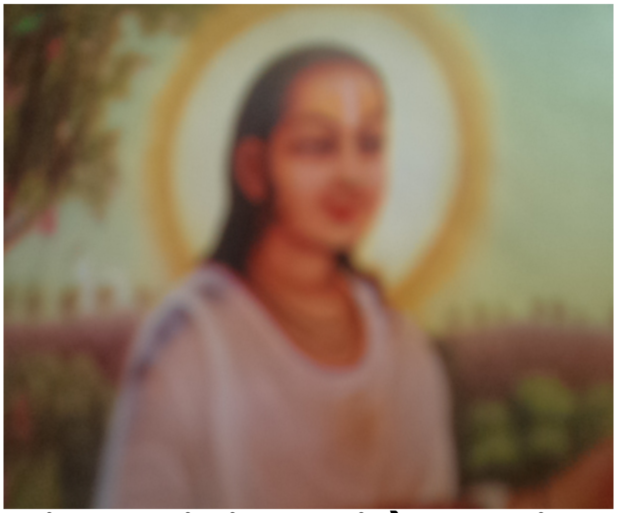

श्री महाप्रभु जी की प्रथम बड़ी बैठक ठकराणी धाट के बाजू में

पहली सबसे महत्वपूर्ण भीतर की बड़ी बैठक है तथा श्री महाप्रभु जी साक्षात यहां पर बिराज रहे हैं इसलिए गोकुल में प्रतिदिन हजारों वै-णव परिक्रमा करते हुए आते रहते हैं. 84 बैठकों में यह पहली बैठक है. यहां पर आप नित्य भोजन करते तथा कथा कहते.

वृन्दावन के बड़े बड़े महंतों ने विचार किया कि श्रीनाथजी की सेवा हम करें. तब श्रीनाथजी ने उनको आज्ञा की कि मेरी सेवा तो मेरा स्वरुप ही करेगा. मेरी सेवा आचार्य श्री करेंगे. आपको भगवद भजन का अधिकार है इसलिए आप भगवद भजन से अपना उद्धार करें.

महंतों ने श्री आचार्य जी की परीक्षा लेने के लिए अपना एक वै-णव श्यामानंद श्री गोकुल में भिजवाया. उसके पास में एक श्रीशालीग्राम जी का स्वरुप बटुआ में था. बटुआ को छोकर के वृक्ष के नीचे टंगा कर श्री आचार्य जी का दर्शन करने भीतर गया.

दर्शन कर वापस बटुआ लेने गया तब बटुआ वहां पर नहीं था. आचार्य जी को कहा कि मेरा बटुआ आपके सेवकों ने चुरा लिया है. आचार्य जी ने कहा कि हमारे सेवक तुम्हारा बटुआ क्यों लेंगे? तुम बटुआ जहां पर रखा था वहीं देख लो.

छोकर बटुओं से भर गया था. उसने आचार्य जी को कहा कि इतने बटुओं में से बटुआ मेरा कौन सा है?

तब आचार्य जी ने श्यामानंद को कहा कि तू अपने इ-ट को पहचानता नहीं है? तू बाहर जाकर देख तो सही.

श्यामानंद बाहर जाकर दंग रह गया क्योंकि तब वहां पर मात्र एक ही बटुआ था. वह अपना बटुआ लेकर महंतों के पास गया तथा श्री आचार्य जी ईश्वर हैं इसलिए उनके द्वारा श्री आचार्य जी की परीक्षा लेने पर श्यामानंद के सामने चमत्कार करने पर मंहतों ने अपना विचार बदल लिया.

लीली परिक्रमा के समय में भी वल्लभकुल के आचार्यों के द्वारा वै-णवों के साथ में मिलकर भव्य उत्सव मनाया जाता है. लीली परिक्रमा के समय में हजारों की संख्या में वै-णव गोवंश के लिए उदारता के साथ में धन दान करते हैं.

श्री महाप्रभु जी वल्लभाचार्य की गोविन्दघाट की 2 री बैठक गोविन्द घाट के बाजू में मुखिया जी श्री सुरेश भाई 9358706176 श्री अमित भाई 9675613532

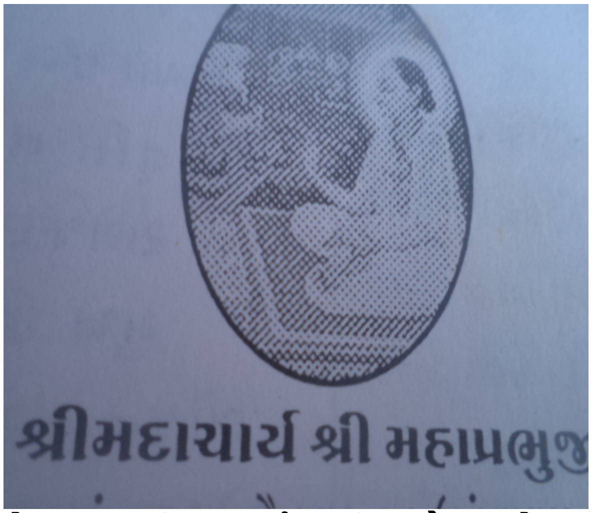

गोकुल व्रज परिक्रमा मार्ग पर स्थित है एवं गोकुल में श्री महाप्रभु जी वल्लभाचार्य की दूसरी बैठक गोविंदघाट पर है. यहां पर श्री महाप्रभु जी साक्षात बिराज रहे हैं.

गोविन्दघाट पर श्री महाप्रभु जी के द्वारा गोविन्दघाट एवं ठकुरानीघाट के बारे में दोनों बराबर है कौन सा गोविन्दधाट है कौन सा ठकुरानीधाट है यह पता नहीं लगता है.

दामोदरदास हरसानी जी को बतलाने पर साक्षात श्री यमुना महारानी जी के द्वारा स्त्री रुप धारण कर महाप्रभु जी को बतलाया कि आपके दक्षिण में ठकुराणीघाट है तथा छोकर के नीचे जहां आप बिराज रहे हैं वह गोविन्दघाट है.

आचार्य जी ने दामोदरदास को कहा कि यमुना जी परम उदार हैं क्योंकि हम रंचक दुविधा में पड़े तो तुरन्त ही प्रगट हो गये और हमारा मार्गदर्शन किया.

तब दामोदरदास ने पूछा कि गोविंदघाट तथा ठकुराणीघाट का क्या अभिप्राय है? श्री स्वामिनी जी की हद रावल से ठकुराणीघाट तक है तथा श्री ठाकुर जी की हद महावन से गोविंदघाट तक है.

छोकर का वृक्ष ब्रहम स्वरुप है. गोवंश के दृ-टिकोण से गोविन्दघाट की बैठक वै-णवों के लिए मील का पत्थर है.

आप रात्रि के समय में विश्राम कर रहे थे. पास में ही दामोदरदास भी लेटे हुए थे. तब आपके मन में चिंता हुई कि मेरा प्राकटय तो भूतल पर हो गया है तथा दैवी जीवों के उद्धार करने के लिए हुआ है. मायामत का खंडन कर भक्ति मार्ग की स्थापना करनी है. सकल तीर्थों को सनाथ करना है.

जीव तो दो-ों से भरा हुआ है तथा पुरु-ोत्तम तो गुणनिधान हैं. जीव का संबंध ब्रहम के साथ में कैसे होगा?

यह चिंता होने पर यमुना जी की पुलिन में साक्षात श्रीनाथजी प्रगट हो गये तथा आचार्य के निकट पधार कर कहा कि तुम चिंता क्यों करते हो?

तुम तो सर्वकरण समर्थ हो. तब आचार्य जी ने कहा कि जीव कहां और आप कहां? जीव का आपसे संबंध कैसे संभव है?

श्रीनाथ जी ने कहा कि आप नाम देंगे उसके दो-ा सेवा में समाप्त हो जायेंगे. आप जिसका ब्रहम संबंध करवायेंगे मैं उसका अंगीकार अवश्य ही करुंगा.

सूत के पवित्रा धोती उपरना केसर में रंग कर श्रावण सुद एकादशी के दिन तैयार कर रखे थे तथा मिश्री भी सिद्ध कर रखी थी वह श्रीनाथ जी को धरी.

आचार्य जी ने दामोदरदास को कहा कि तुम ने कुछ सुना? दामोदरदास ने कहा सुना तो लेकिन समझा नहीं. आचार्य जी ने कहा कि ठाकुर जी ने ब्रहम संबंध की आज्ञा की है. तब दामोदरदास ने सबसे पहले ब्रहम संबंध करने के लिए विनंती की.

श्री महाप्रभुजी ने दामोदरदास हरसानी जी को श्रावण सुद द्वादशी की सुबह सबसे पहले ब्रहम संबंध दिया था तथा कहा था कि यह मार्ग तेरे लिए ही प्रगट किया है इसलिए यह बैठक ब्रहम संबंध की बैठक भी कहलाती है. श्री महाप्रभुजी 4 माह बिराज कर श्री सुबोधिनीजी का प्रारम्भ यहां पर किया है.

श्री गुंसाई जी की बड़ी 2 री बैठक

श्री महाप्रभु जी के सामने श्री गुंसाई जी की दूसरी बैठक है. जब तक नवनीतप्रिया जी का मंदिर नहीं बना था तब तक महाप्रभुजी के मंदिर में बिराजे थे. श्री गुंसाई जी ने कहा कि नीव खोदने के लिए मूहर्त बहुत ही अच्छा है. तब यादवेन्द्रदास ने जब सुना कि अभी मूहर्त बहुत ही अच्छा है इसलिए सारी रात में मंदिर की नींव खोद दी. सुबह के समय श्री गुंसाई जी जागे तो रज के बड़े बड़े ढेर देखे. यादवेन्द्रदास से पूछा कि नींव कौन से मूहर्त में खोदी है? यादवेन्द्रदास ने कहा कि आपने जब कहा कि मूहर्त बहुत ही अच्छा है तब नींव खोदी है. गुंसाई जी यह सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुए. वर्तमान में श्री गुंसाई जी साक्षात बिराज रहे हैं.

प्रिय नवनीत पालने झूले श्री विठठलनाथ झुलावे. यह कीर्तन इस बैठक में गाया गया है. श्री विठठलनाथजी ने श्री नवनीतप्रियाजी को पालने में झुलाये हैं.

उस समय नंदमहोत्सव के अलौकिक दर्शन सभी भगवदीयों को करवाये हैं.

श्री महाप्रभु जी की शैया मंदिर की 3 री बैठक

गोकुल की तीसरी श्री महाप्रभु जी की बैठक द्वारकानाथ जी के मंदिर के पास में है. एक समय श्री महाप्रभुजी शैयामंदिर की बैठक में पौढे थे तब वहां पर द्वारकानाथजी का मंदिर नहीं बना था. उस समय एक योगेश्वर ने श्री महाप्रभुजी को कहा कि यहां पर सात मंदिर बनेंगे.

श्री गोकुल यहां पर बसेगा. द्वारकानाथ जी के मंदिर के नीचे द्वापर के समय से तपस्या कर रहे योगी ने श्री महाप्रभु जी से विनंती की थी कि मुझे आज मेरी तपस्या का फल मिल गया है इसलिए यहां से तपस्या करते हुए नहीं हटाया जाये. श्री महाप्रभु जी ने उन्हें आर्शीवाद दिया था कि तुम्हें यहां से कोई नहीं हटायेगा.

द्वारकानाथ जी का मंदिर बनने पर श्री द्वारकेशजी ने योगी की कुटिया निकलने पर सोलह हाथ नींचे जाने के लिए कहा फिर मंदिर बन गया. मंदिर बनने के बाद में राजभोग के महाप्रसाद में कीड़े निकलने लगे. श्री द्वारकेशजी ने श्री गोकुलनाथजी से पूछा कि महाप्रसाद में कीड़े क्यों निकल रहे हें?

श्री गोकुलनाथजी ने कहा कि श्रीनाथजी को पूछकर बताउंगा.

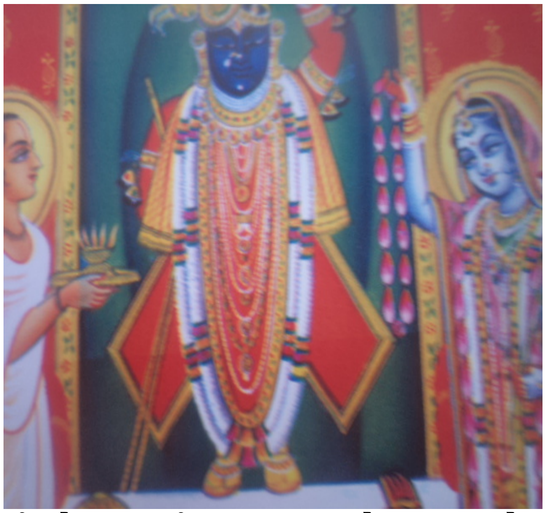

श्री गोकुलनाथजी नाथद्वारा पधारे तब राजभोग के बाद शैयामंदिर के द्वार पर खड़े रहे तथा श्रीनाथजी से सारा वृतांत कहकर पूछा तब श्रीनाथजी ने जैसे कर्म किये हैं वैसा फल मिल रहा है. श्री द्वारकानाथजी श्री मथुरेश जी के पास में बिराजे.

वृंदावन
पंचगव्य

मोबाइल 08126699133 में राजस्थान पथमेडा में पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. की सभी वस्तुएं उपलब्ध हैं.

श्री महाप्रभु जी की 4 थी बैठक बंसीवट मुकाम
वृंदावन मुखिया श्री पुरु-गेत्तम 9897979326

श्री महाप्रभुजी वल्लभाचार्य की बैठक वंसीवट के पास में है. परिक्रमा करने आने पर यहां पर वै-णव अदभुत एवं दिव्य दर्शन करने आते हैं. यहां पर महाप्रभु जी साक्षात बिराज रहे हैं.

गोपालदास गोड़िया कृ-णचैतन्य के सेवक थे. कृ-णचैतन्य ने एक शालीग्राम का स्वरुप पधरा दिया था. सेवा करने पर मुकुटकाछिनी का श्रंगार करने के लिए मन में बहुत अधिक ताप रहता था. श्री महाप्रभुजी के पास में गोपालदास गोड़िया कृ-णचैतन्य जी के कहने पर गया.

दूसरे स्वरुप पधराने के लिए विनंती की. श्री महाप्रभुजी ने कहा कि श्री ठाकुरजी सभी कुछ करने में समर्थ हैं. दूसरे स्वरुप की आवश्यकता नहीं है. यही स्वरुप तेरी भावना के अनुरुप दर्शन देगा. गोपालदास ने स्वरुप का नाम राधारमण रखा.

श्री महाप्रभुजी से सेवक करने के लिए विनंती की तब महाप्रभुजी ने कहा कि इस जन्म में कृ-णचैतन्य जी का सेवक है इसलिए अगले जन्म में तेरा अंगीकार होगा. अगले जन्म में गोपालनागा के रुप में सेवक बना.

यहां पर श्री महाप्रभुजी के द्वारा सखड़ी प्रसाद लेने के लिए कहा तब प्रभुदास जलोटा के द्वारा स्नान के बाद सखड़ी प्रसाद लेने की बात करने पर श्री महाप्रभु जी के द्वारा पदमपुराण के 2 श्लोक वृंदावन महात्म्य के कहे. वृक्ष वृक्ष वेणुधारी एवं पत्ते पत्ते में चतुर्भुज दिखलाकर वृंदावन का स्वरुप दर्शन प्रभुदास को करवाया है. दर्शन करने के बाद में प्रभुदास ने महाप्रसाद लिया.

श्री गुंसाई जी की 3 री बैठक

वृंदावन में वंसीवट में श्री महाप्रभु जी की बैठक के पास में श्री गुंसाई जी की बैठक है. एक ढढेरो भगवदस्वरुप लेकर श्री गुंसाई जी के पास में आया. श्री गुंसाई जी के देखते ही पुरु-गेत्तम की क्रीडा करने लगे. कोई तो वेणुनाद करने लगे. कोई घुटने पर चलने की लीला करने लगे.

यहां पर श्री गुंसाई जी ने पुरु-गेत्तम होकर अपनी दृ-िट से पुरु-गेत्तम स्वरुप होता है यह वृंदावन के महंत को बतलाया. यह अदभुत महात्म्य देखकर अनेक जीव आपके सेवक बने हैं.

वै-णव गोचारन का महत्व समझकर दर्शन करने अवश्य आते हैं. वै-णवों को अदभुत अनुभव होता है. यहां पर साक्षात गुंसाई जी बिराज रहे हैं.

श्री गुंसाई जी ने भगवान की गोचारन लीला को सुबह के समय वन में पधारते समय विप्रयोग होता है तथा वन से संध्या के समय गोचारन से वापस पधारते समय संयोग रस का दान करते हैं.

श्री गोकुलनाथ जी की 2 री बैठक

श्री गोकुलनाथ जी की बैठक वृंदावन में वंसीवट के पास में श्री महाप्रभु जी की बैठक के पास में है. वै-णवों को यहां पर श्री गोकुलनाथ जी के अदभुत दर्शन हो रहे हैं. यहां पर आपने श्रीमद भागवत सप्ताह की है. कल्याणभटट आदि भगवदीय आपके साथ में थे. तब हरिवंश प्रभृति जैसे संत महंत सप्ताह सुनने के लिए आते थे. वल्लभा-टक की टीका आपने यहां पर की है.

श्री दामोदरदास जी की दूसरी बैठक

श्री महाप्रभुजी, श्री गुंसाई जी, श्री गोकुलनाथजी की बैठक के पास में वंशीवट में दामोदरदास हरसानी जी की बैठक है. यहां पर श्री दामोदरदास जी साक्षात बिराज रहे हैं.

वृंदावन में भगवान कृ-ण की दिव्य लीला 5235 सालों से निरन्तर चल रही है.

भगवान कृ-ण की दिव्य लीला का निरन्तर अनुभव वहां रहने वाले संतों को हो रहा है. भगवान की भक्ति से मन के विकार पूरी तरह से दूर हो जाते हैं.

तुलसी वन

वृंदावन यानी तुलसी का वन कहलाता है. वर्तमान में तुलसी का महत्व विश्व में वृंदावन में सबसे अधिक है. विश्व में वृंदावन भक्ति के लिए सबसे अधिक प्रसिद्ध रहने के कारण एक बार देखने की इच्दा हर व्यक्ति की रहती है. वृंदावन में गोवंश के लिए विश्व के हर देश के समर्पित

लोग आते रहते हैं. दूध पर रहकर बहुत ही कठोर तप पर चल रहे हैं. दूध से बने व्यंजन मिलने के कारण ही प्रसाद के रुप में ग्रहण करने की भावना है. भागवतकार गोवंश के महत्व को वृंदावन से विश्व के हर कोने तक पहुंचाने के लिए संकल्पित हैं.

वृंदावन में श्री राधा जी का महत्व बहुत ही अधिक है. वृंदावन में आपस में मिलने पर राधे राधे करते हैं.

7,000 मंदिर

वृंदावन बहुत ही प्राचीन तीर्थ है तथा 7000 मंदिर मौजूद रहने के कारण ही पूरे विश्व में मौजूद धार्मिक व्यक्ति अपनी भावना के अनुसार बहुत बड़ी संख्या में दर्शन करने आते हैं.

गोवंश हर मंदिर में बहुत बड़ी संख्या में मौजूद है. गोवंश के संवर्धन करने के लिए लोग अपनी भावना के अनुसार दान करते रहते हैं. मंदिरों में बाहर से आने वाले व्यक्तियों के लिए रहने तथा भोजन की बहुत ही अच्छी व्यवस्था है.

वृंदावन में 12 माह भगवान की कथा एवं कीर्तन चालू रहती है. वृंदावन में हर मंदिर में गोशाला मौजूद है. गोशालाओं के विकास करने के लिए उदारता के साथ में दान दिया जाता है.

वृंदावन शोध संस्थान

वृंदावन में गोवंश का सम्मान करने के लिए वृंदावन शोध संस्थान मौजूद है. वृंदावन शोध संस्थान में विद्वान अपने विचार रखकर परिवर्तन करने के लिए प्रयत्नशील है. वृंदावन का अंग्रेज मंदिर बहुत ही प्रसिद्ध है.

इस्कोन मंदिर

अंग्रेज मंदिर में गोवंश संवर्धन का कार्य बहुत अच्छी तरह चल रहा है. वृंदावन में पूरे विश्व के गोवंश विशे-ज्ञ आकर अपने विचार रखते हैं. वृंदावन में गोवंश की गतिविधि 12 माह बहुत ही अच्छी तरह चल रही है.

पंचायती गोशाला

वृंदावन में पंचायती गोशाला में गोवंश संवर्धन एवं संरक्षण करने का कार्य बहुत ही लंबे समय से समर्पित गोवंश सेवकों के द्वारा किया जा रहा है.

जिला मथुरा

विश्रामघाट

श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य जी की 5 वी बैठक

यहां पर श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य जी साक्षात बिराज रहे हें. संवत 1549 भाद्रपद सुद 12 शरद ऋतु के समय उजागर चौबे को अपना पुरोहित बनाया तथा लिखकर दिया. विश्रामधाट में स्नान कर नियम लिया तथा उजागर चौबे के माध्यम से लीली परिक्रमा की भी आपने नीव रखी थी. मधुवन के लिए प्रस्थान किया.

महाप्रभु जी के साथ में व्रजयात्रा करने के लिए वासुदेवदास छकड़ा यादवेंन्द्रदास कुंभार, गोविंद दुबे माधव भटट काश्मीरी, सूरदास जी, परमानंददासजी साथ में थे. भगवान श्री कृ-ण की दिव्य लीलाओं का दर्शन करवाया था.

छीतु चौबे के माध्यम से विश्राम घाट की बैठक में हिंदुओं को मार्गदर्शन मिल रहा है. गोवंश के संरक्षण करने के लिए यह बैठक बहुत ही महत्वपूर्ण है. भगवान श्री कृ-ण ने कंस को मारकर इस घाट पर विश्राम किया था इस कारण विश्रामघाट नाम पडा है.

श्री महाप्रभुजी जब विश्रामधाट की बैठक पर पधारे तब वहां पर उजाड़ वन था. पास में स्मशान था. भूतेश्वर में बस्ती थी. श्री महाप्रभुजी को श्रीमद भागवत करने के लिए ग्लानी हुई इसलिए कृ-णदास मेघन को आज्ञा की कि जहां तक जल छिरका जायेगा वहां तक बस्ती हो जायेगी.

तब कृ-णदास मेधन ने कमंडल का जल असकुंडा से लेकर सूर्यकुंड तक छिरका. श्री महाप्रभुजी के प्रताप के कारण ही बस्ती उतने में बस गयी तथा स्मशान की भूमि ध्रूवधाट पर चली गयी.

जब आचार्य जी मथुरा पधारे तब सिकंदर लोधी के आदेश पर काजी ने आसुरी मंत्र लिखकर एक यंत्र विश्रामघाट में लगा दिया था जिसके नीचे हिंदु के जाने पर पर चोटी कट जाती थी तथा दाढ़ी उग जाती थी.

श्री महाप्रभुजी तथा उनके सभी सेवक यंत्र के नीचे से स्नान करने के लिए पधारे तब विश्रामघाट पर लगाये मुसलमान के यंत्र का प्रभाव नहीं हुआ. यह बात सभी को पता लग गयी.

जब श्री आचार्य जी ने सात दिनों के लिए श्रीमद भागवत पारायण किया तब जितने भी हिंदुओं ने यंत्र के नीचे से निकलकर यमुना जी में स्नान किया तब भी यंत्र का प्रभाव नहीं हुआ.

श्री आचार्य जी मथुरा से मधुवन के लिए पधारने लगे तब सभी चौबों ने श्री आचार्य जी का अलौकिक प्रभाव देखकर मुसलमानों के द्वारा हिंदुओं को परेशान करने के प्रयत्न का समाधान करने श्री महाप्रभु जी के पास में आकर वै-णवों ने विनंती की थी कि यंत्र यहां से हटवा दिया जाये. महाप्रभु जी ने वै-णवों को कहा कि काजी को कहो कि गोकुल के फकीर पधारे हैं इसलिए आप यंत्र उठा लें.

काजी ने कहा कि यह यंत्र बादशाह के द्वारा लगवाया गया है इसलिए बादशाह के कहने पर ही वापस होगा. चौबों ने आचार्य जी को आकर सभी समाचार कहे.

श्री महाप्रभु जी ने तब श्रीहस्त से एक यंत्र लिखकर वासुदेवदास छकड़ा तथा केशवभटट को देकर कहा कि दिल्ली के जितने दरवाजे हैं उस पर यंत्र लगाकर आ जाओ. यंत्र के कारण मुसलमानों के दाढ़ी समाप्त होकर चोटी उग जाती थी.

यह बात बादशाह को पता चली तब बादशाह ने यंत्र हटाने के लिए प्रयत्न किये तो यंत्र हाथ में नहीं आया. बादशाह ने यंत्र के बारे में पता लगवाया तो हलकारों ने बताया कि मथुरा के दो फकीर आये हैं उनने यह यंत्र रखा है.

तब बादशाह ने महाप्रभु जी को विनंती करवायी कि यंत्र यहां से उठा लिजिये. केशव भटट ने जबाव दिया कि मथुरा में विश्रामघाट पर से यंत्र पहले आप उठा लें तब हम दिल्ली पर से यंत्र उठा लेंगे.

बादशाह मन में बहुत ही डर गया तथा कहा कि हम यंत्र मथुरा से मंगवा लेते हैं. हलकाराओं के द्वारा मथुरा से यंत्र मंगवा लिया तथा पत्र आचार्य जी के सेवकों को दिया तब दिल्ली से यंत्र उठवा लिया.

श्री महाप्रभु ने संध्यावदन का जल छिड़ककर कहा कि विश्रामधाट पर अब यदि कभी यंत्र मुसलमान लगायेंगे तो नि-फल हो जायेगा.

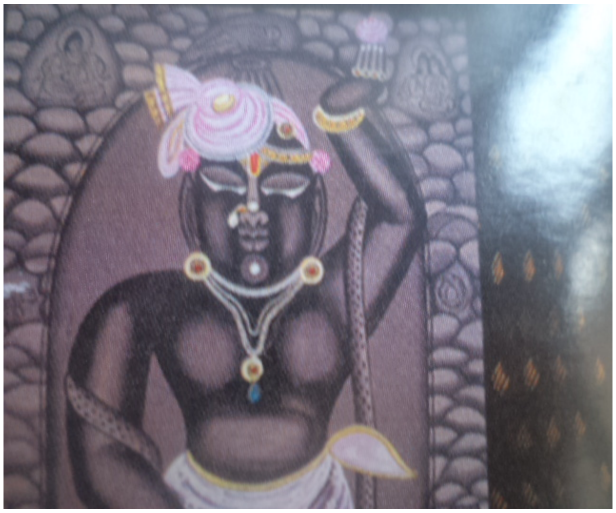

श्रीकृ-ण जन्म स्थल

मथुरा भगवान श्री कृ-ण के जन्म होने के कारण विश्व में प्रसिद्ध है. भगवान श्री कृ-ण का जन्म द्वापर के अंत में गोवंश के रक्षण एवं संवर्धन करने के लिए हुआ था इसलिए 11 साल 52 दिनों तक व्रज में रहने के बाद कंस का वध करने के लिए भगवान मथुरा आये थे.

मथुरा अपनी संपन्नता के लिए बहुत ही प्रसिद्ध था. श्रीमद भागवत में मथुरा के बारे में विस्तार से वर्णन दिया गया है.

मथुरा में कुछ समय रहने के बाद जरासंध के द्वारा लगातार 17 बार आक्रमण करने के कारण तथा भगवान से हारने के कारण वरदानी कालयवन के द्वारा जरासंध के कहने पर मथुरा में आक्रमण करने पर मुचकुन्द राजा से कालयवन को मरवाने के लिए मथुरा छोड़ना पड़ा था.

भगवान श्री कृ-ण के जन्म के तीर्थ के दर्शन करने के लिए लाखों भक्त विश्व से आते हैं. श्री कृ-ण जन्म तीर्थ पर प्रतिदिन हजारों भक्तों की भारी भीड़ मौजूद रहती है.

विशाल क्षेत्र में श्रीकृ-ण के जन्म के समय का इतिहास सुरक्षित रखा गया है. 5238 सालों से भगवान के प्रागट्य स्थल का अपना विशे-ा महत्व है.

मथुरा में गोमाता के दूध से बने पेड़े तथा बहुत सारे व्यंजन जन्म सील पर मिलते हैं. पूरे विश्व में यहां से गोमाता के दूध से बने व्यंजन बहुत बड़ी मात्रा में जाते हैं.

सरकारी बस

मथुरा से बाहर से आने वाले तीर्थयात्रा करने वालों के लिए परिक्रमा सरकारी बस की सेवा उपस्थित है.

मथुरा में चौबे यानी चतुर्वेदी ब्राहमण जो चारों वेदों के जानकार रह चुके हैं तथा बाहर से आने वाले भक्तों की सेवा करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं.

द्वारकाधीश का मंदिर

गोवंश के संवर्धन करने के लिए मथुरा में सुप्रसिद्ध केंद्र श्री द्वारकाधीश का मंदिर अपनी भव्यता के लिए जाना जाता है.

लीली परिक्रमा

चतुर्वेदी ब्राहमण

आज से 550 सालों पूर्व से ही व्रज की 84 कोस की लीली परिक्रमा करने के लिए आने वाले भक्तों के लिए मार्गदर्शक के रुप में चतुर्वेदी ब्राहमण महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं.

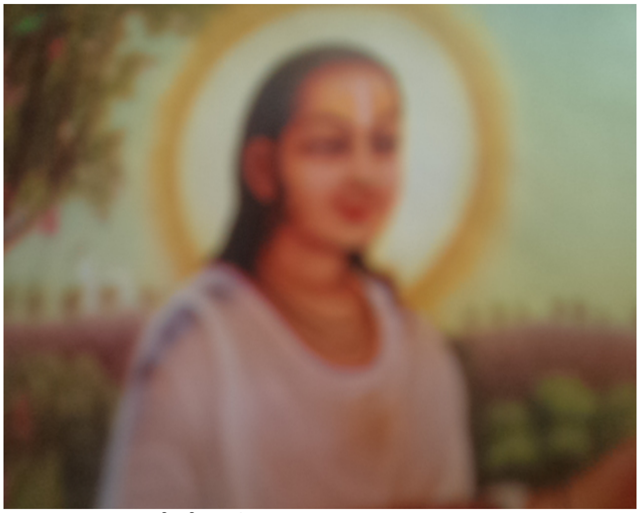

लीली परिक्रमा का प्रारम्भ

श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के द्वारा लीली परिक्रमा प्रारम्भ करने के कारण ही उनके वंशज हर साल उनके अनुयायी वै-णवों के साथ में 40 दिनों की परिक्रमा करने मथुरा में आते हैं. लीली परिक्रमा में नित्य उत्सव किये जाते हैं जिसमें गोमाता के दूध से बने व्यंजन भक्तगणों को प्रसाद के रुप में वितरित किये जाते हैं.

दूध पर ही रहकर कुछ भक्त परिक्रमा करते हैं. लीली परिक्रमा करते समय वै-णव गोवंश के संवर्धन करने के लिए उदारता के साथ में दान करते हैं. लीली परिक्रमा बरसात के समय में ही पैदल खुल्ले पैरों से बहुत ही कठोर नियम के साथ में की जाती है.

तपोभूमि

अखिल विश्व गायत्री परिवार के द्वारा मथुरा वृंदावन मार्ग पर तपोभूमि में गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए 1953 से पंडित श्री राम जी शर्मा के द्वारा कठोर नीव रखी गयी है. पूरे विश्व में यहां से मार्गदर्शन किया जा रहा है.

विश्व जननी गौ वीडियो सीडी विश्व हिंदु परि-ाद के द्वारा 58 मिनट की अवधि की तैयार की गयी थी जिसे पूरे भारत के हर गांव में पहुंचाने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार ने कार्य किया है.

जयति जय गो माता पुस्तक का प्रकाशन भी मात्र 15 रु. में किया गया है तथा युग चेतना साहित्य में भी 10 पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं. विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है.

विश्व के 84 देशों में गोवंश के संवर्धन करने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार पूरी तरह से सक्रिय है. 2011 से परिवर्तन करना संभव है इसलिए परिजन दीपयज्ञ के माध्यम से गांव गांव में जागृति उत्पन्न कर चुके हैं. बहुत ही कम मूल्य पर साहित्य की सामग्री परिजन खरीद कर ले जाते हैं तथा गांव गांव में ज्ञान रथ के माध्यम से पहुंचा रहे हैं.

अखिल विश्व गायत्री परिवार का केंद्र बिंदु हरिद्वार है लेकिन साहित्य के लिए मथुरा बहुत ही महत्वपूर्ण है. हजारों की संख्या में गायत्री शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ, ज्ञानमंदिरों के माध्यम से नियमित हवन सुबह गोमाता के घी से करवाया जा रहा है. वर्तमान में करोड़ों की संख्या में बिना धन लिए परिजन गोवंश संवर्धन करने के लिए बहुत ही कठिन तप कर रहे हैं.

मथुरा तथा वृंदावन मार्ग पर बहुत सारी गोशालाएं भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से चल रही हैं. युग निर्माण योजना के माध्यम से विचार क्रांति अभियान युवाओं के द्वारा हर गांव में चलाया जा रहा है. संध्या के समय में गोमाता के घी से दीपयज्ञ के माध्यम से हर गांव में गोवंश पालन करने के लिए बहुत ही जबरदस्त लहर उत्पन्न की गयी है.

युग निर्माण योजना मासिक पत्रिका में एक पन्ना गोवंश पर रहता है. गोवंश विशे-ांक भी 3 रु में प्रकाशित किया गया है. गोवंश पर युग चेतना साहित्य जो आसानी से जेब में रखा जा सकता है एवं मात्र 25 पैसे मूल्य पर उपलब्ध है में 91 से 100 तक, जयति जय गोमाता आदि बहुत सारा साहित्य प्रकाशित किया गया है.

गांव गांव में परिजनों के द्वारा गोवंश के संवर्धन करने के लिए जन जन को पूरी तरह से मोड़ने के लिए बहुत ही कठोर प्रतिज्ञा पत्र भरवाये गये हैं. दीवाल पर टंगाने के लिए गोवंश का कैलेंडर तैयार किया गया है. गांव गांव में पंचगव्य दवाओं के तैयार करने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है. जैविक खेती करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है. युवाओं के द्वारा गोवंश के जागरण करने के लिए रैली आयोजित की जा रही है. विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा में तपोभूमि की अहम भूमिका रहेगी.

23 दिसम्बर से 29 दिसम्बर 2001 तक पहली बार गोवंश संवर्धन पर वैज्ञानिक कार्यक्रम आयोजित किया गया था जिसमें 440 समर्पित लोगों के द्वारा भाग लिया गया है. परिजनों को मार्गदर्शन देने के लिए गोवंश के जानकारों को आमंत्रित किया गया है तथा गोवंश की जानकारी का प्रायोगिक ज्ञान भी दिया गया है. पंचगव्य तैयार कर सभी को पिलवाया गया है. 440 परिजनों के द्वारा इस शिविर में प्रेरणा लेकर वर्तमान में बहुत अच्छा कार्य किया जा रहा है.

मधुवन

श्री महाप्रभु जी की 6 वी बैठक मुकाम मधुवन महोलीजी जिला मथुरा

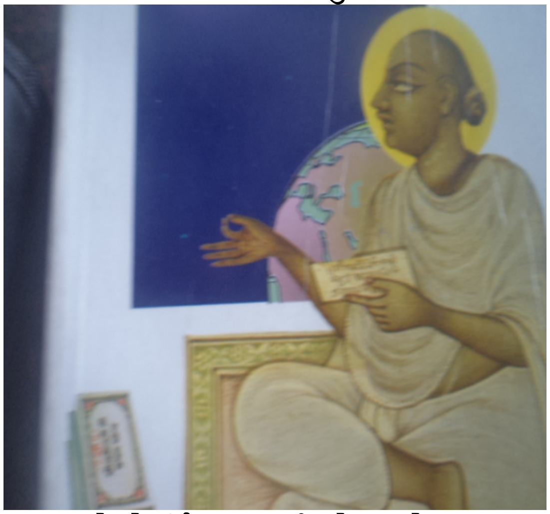

मधुवन में देवर्-ि नारद जी के कहने पर 5 साल के भक्त ध्रुव जी के द्वारा बहुत ही कठोर तप किया गया था जिसके कारण भगवान को साक्षात दर्शन देना पड़ा था. श्री महाप्रभुजी व्रजयात्रा के प्रारम्भ में मथुरा से मधुवन पधारे हैं. मधुवन बहुत ही पवित्र एवं दिव्य स्थान है तथा श्री महाप्रभु जी वल्लभाचार्य की बैठक कदंब के नीचे माधवकुंड कृ-णकुंड के उपर है.

श्री महाप्रभु जी यहां पर साक्षात बिराज रहे हैं. वै-णवों को यहां पर एक बार दर्शन करना चाहिए. श्री

महाप्रभु जी ने यहां पर बिराजकर सात दिनों तक श्रीमद भागवत का पारायण किया था.

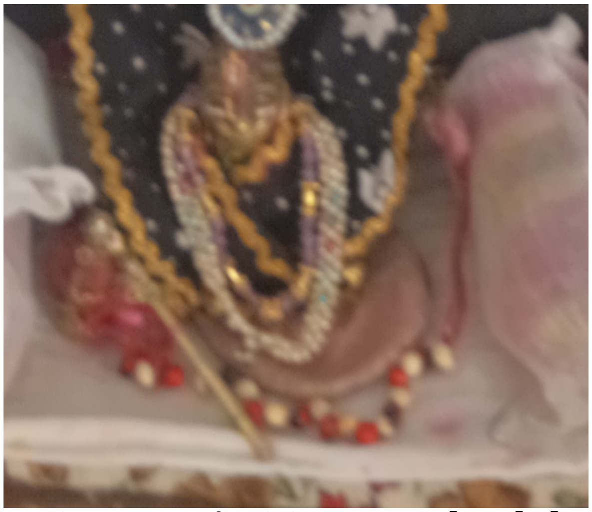

मधुवनिया ठाकुर जी प्रतिदिन कथा सुनने आते थे. महाप्रभुजी के साथ में व्रजयात्रा करने के लिए वासुदेवदास छकड़ा, यादवेंद्रदास, गोविंद दुबे, माधवभटट काश्मीरी, सूरदास जी, परमानंददासजी गये थे. मधुवन में वज्रनाभ के द्वारा ठाकुर जी स्थापित किये गये हैं.

कुमुदवन

श्री महाप्रभु की 7 वी बैठक मुकाम कुमुदवन जिला मथुरा

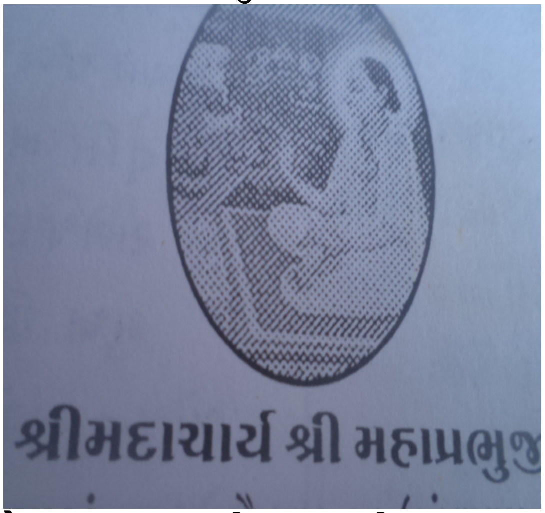

वै-णव परिक्रमा करते समय कमोदवन अवश्य ही आते हैं. परिक्रमा करते समय गोवंश के संवर्धन करने दान करते हैं. कमोदवन बहुत ही सुंदर है. यहां पर निवास कर कमोदवन में वै-णवों को दिव्य अनुभव होते हैं.

मधुवन से तालवन के कुंड में स्नान कर तालवन की परिक्रमा कर कमोदवन पधारे. कृ-णदास मेघन ने पूछा कि वन का नाम कमोदवन क्यों है? तब आचार्य जी ने कहा कि सामवेद में व्रज का महात्म्य है. एक समय श्रीठाकुर जी तथा स्वामिनी जी वन में पधारे उस समय शरद की चांदनी का प्रकाश बहुत था. तब स्वामिनी जी ने कहा कि कमोद और कमोदिनी का वन सिद्ध हो तो बहुत ही अच्छा है.

कमोदवन में श्री महाप्रभु जी वल्लभाचार्य जी की बैठक जी श्यामतमाल के नीचे है. श्री महाप्रभु जी साक्षात बिराज रहे हैं. यहां पर 3 दिन बिराज कर पारायण किया है.

सामवेद के अनुसार यहां पर शरद की चांदनी रात में कमोदवन श्री कृ-ण जी ने स्वामिनी जी की इच्छा के कारण प्रकट किया है. वै-णवों ने जब आचार्य जी से कमोद एवं कमोदनी के दर्शन करवाने के लिए विनंती की तब दिव्य नेत्र 2 धड़ी प्राप्त हुए तथा लीला के संपूर्ण दर्शन हुए.

बहुलावन

श्री महाप्रभु जी की 8 वी बैठक मुकाम बहुलावन डाकघर बाटीगांव जिला मथुरा

श्री महाप्रभुजी वल्लभाचार्य की बैठक कृ-णकुंड के उपर उत्तरदिशा में वड वृक्ष के नीचे है. यहां पर साक्षात बिराज रहे हैं. यहां से आप तोसगांव के आगे जिखिन गांव में बलदेव जी के दर्शन कर उनको श्रृंगार किया.

दामोदरदास से कहा कि दमला बलदेव जी ने यहां पर शंखचूड को मारा है.

यहां से दूसरे दिन मुखराई होकर श्रीकुंड पधारे.

बहुलावन में 3 दिन श्री महाप्रभु जी बिराजे हैं. श्रीमद भागवत पारायण किया है. यहां पर एक ब्राहमण के द्वारा श्री महाप्रभु जी को विनंती की कि यहां का हाकिम बहुला गाय की प्रतिमा की पूजा करने नहीं देता है.

हाकिम का कहना है कि हमारे सामने यदि गाय घांस खायेगी तो हम पूजा करने देंगे.

तब श्री महाप्रभु जी ने हाकिम को बुलवाकर उसके सामने ही बहुला गाय को घांस दाना डाला जिसे वह खाने लगी.

बहुला गाय का पूजन

हाकिम को बहुत ही आश्चर्य हुआ. हाकिम ने आचार्य को दंडवत प्रणाम किया तथा सेवक करने के लिए विनंती की. श्री महाप्रभुजी ने हाकिम को कहा कि तुमने गाय की पूजा बंद करवा दी है वह चालू करो. हाकिम ने चमत्कार देखकर गाय की पूजा फिर से चालू करवा दी.

श्री महाप्रभुजी ने हाकिम से कहा कि अगले जन्म में तुम्हारा अंगीकार होगा. हाकिम बहुत सालों तक जीया.

अगले जन्म में रावल के पास में गोपालपुर गांव में मल्हा के घर में मेहा ढीमर के नाम से जन्म लिया तब श्री गुंसाई जी ने श्री महाप्रभुजी का वचन सत्य करने के लिए उसका अंगीकार किया.

बहुलावन गोवंश के विकास करने महत्वपूर्ण है. विश्व से वै-णव परिक्रमा करने बहुलावन में आते हैं. बहुलावन दिव्य भूमि होने के कारण ही संत बहुला गायों का दूध पीकर यहां पर बहुत ही कठोर तपकर रहे हैं. बहुलावन में भगवान श्री कृ-ण के समय से ही बहुत सुंदर गायें रही हैं. रमणीय एवं पवित्र भूमि पर दिव्य दृ-टि मिलने पर महत्व समझ में आता है. बहुला गायें बहुलावन में बहुत प्राचीन समय से पायी जाती हैं. बहुला गायें मानव के लिए वरदान के समान हैं. बहुला गायों के चमत्कार विश्व में प्रसिद्ध हैं.

रमणरेती

परिक्रमा मार्ग पर रमणरेती का पवित्र धाम है. विश्व गुरु भारत के गौरव का यह तीर्थ दिव्यता के लिए सुप्रसिद्ध है. रमणरेती में कीर्तन, प्रवचन आदि सतसंग चल रहा है. वर्तमान में भगवान श्रीकृ-ण की रमणलीला निरन्तर चल रही है. संत हमेशा यहां पर ध्यान लगाकर रमण लीला का साक्षात दर्शन कर रहे हैं.

रमणरेती में बहुत ही सुंदर गोशाला मौजूद है. विश्व के कई देशों से गोवंश के लिए अपार धन मिल रहा है. 1100 से अधिक गोवंश की बहुत ही अच्छी सेवा की जा रही है.

गोमाता बहुत ही अधिक दूध प्रतिदिन दे रही है. प्रतिदिन ब्रहम मूहर्त में वैदिक मंत्रों के साथ में हवन गोमाता के घी से किया जाता है. बाहर से आने वाले भक्तों के लिए गोमाता के पवित्र दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी के स्वादि-ट व्यंजनों एवं भोजन की बहुत ही अच्छी व्यवस्था की गयी है. संत दूध पर रहकर बहुत ही कठोर तपकर रहे हैं.

अतिथियों के रहने की उत्तम व्यवस्था की गयी है. रमणरेती विश्व में भगवान कृ-ण के कारण ही बहुत ही प्रसिद्ध है. रमणरेती में विश्व से हजारों की संख्या में भक्तगण दर्शन करने आते हैं तथा रमणरेती में लोटकर अपने को धन्य अनुभव करते हैं.

श्री चंद्र सरोवर

श्री गुंसाई जी की 5 वी बैठक

श्री चंद्रसरोवर दिव्य भूमि है. चंद्रसरोवर में भगवान की नित्य दिव्य लीला चल रही है. वै-णवों को भी गोमाता का दूध पीकर श्री गुंसाई जी का आर्शीवाद प्राप्त हुआ है.

श्री महाप्रभु जी के पास में श्री गुंसाई जी की बैठक है. श्री गुंसाई जी 6 माह गोमाता का दूध पीकर चंद्र सरोवर में तपकर चुके हैं. 6 माह यहां पर आपने विप्रयोग का अनुभव किया है.

श्री गुंसाई की फुलघर की 6 वी बैठक

श्री गुंसाई जी यहां पर 6 माह बिराजकर फुलघर की सेवा की थी. गोवर्धन नाथ जी को यहां से नित्य एक मालाजी तैयार कर 6 माह तक भिजवायी थी. गोवंश के संवर्धन करने के लिए वै-णवों को प्रेरणा मिल रही है.

वै-णवों को उदारता के साथ गोवंश के संवर्धन करने के लिए दान देने के लिए मार्गदर्शन मिल गया है. श्री गुंसाई जी यहां पर नित्य साक्षात बिराज कर दैवी जीवों को अपनी सेवा में ले रहे हैं.

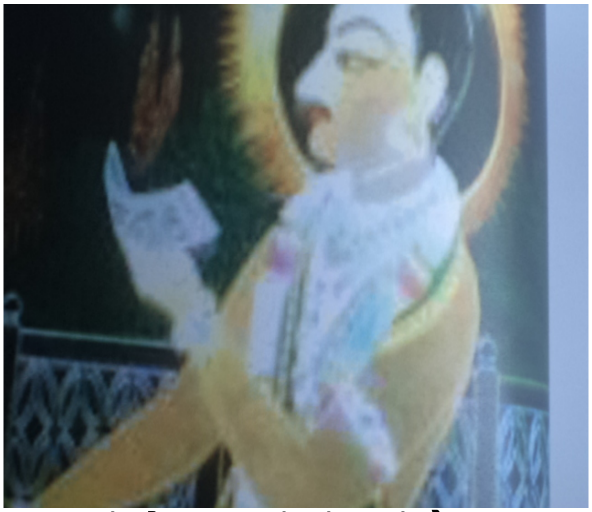

श्री गोकुलनाथ जी की 4 थी बैठक

श्री गोकुलनाथ जी की बैठक श्री गुंसाई जी की बैठक के पास में चंद्र सरोवर में है.

श्री गोवंश के महत्व को बढ़ाने के लिए ही यहां पर आप एक माह बिराज कर प्रथम दिव्य रास करवाया है. अलौकिक रास में चतुर्भुजदास ने कीर्तन गाया है. श्री गिरधर जी श्री गोवर्धननाथ जी सहित पधारे.

वर्तमान में वै-णव श्री गोकुलनाथ जी की बैठक में अलौकिक रास का अनुभव कर रहे हैं. रमणीय वातावरण में दिव्य लीला का दर्शन रोमांचित कर रहा है. श्री गोकुलनाथ जी ने बाद में श्री सर्वोत्तमस्त्रोत की टीका की है.

श्री प्रेमसरोवर

श्री गुंसाई जी की 9 वी बैठक

श्री गुंसाई जी की बैठक प्रेमसरोवर में है तथा यहां पर नित्य दर्शन दे रहे हैं. एक माह तक आप यहां पर रहकर गोविंदस्वामी को युगलस्वरुप के दर्शन करवाये हैं. श्रीस्फुरत्क-ण प्रेमामत की टीका की है. श्री गुंसाई जी के द्वारा गोवंश के लिए जो कार्य किया गया है उसके लिए अकबर के द्वारा गोसाई की उपाधि से सम्मानित किया गया है.

गुंसाई जी के समय में तथा बाद में उनके 7 लाल गोस्वामी के नाम से जाने जाते हैं. वै-णव श्री गुंसाई जी के अलौकिक दर्शन करने के साथ में दिव्य लीला का अनुभव करने के लिए बहुत ही उत्साह के साथ बहुत बड़ी संख्या में आ रहे हैं.

श्रीसंकेतबट

श्री गुंसाई जी की 10 वी बैठक

श्री गुंसाई जी की बैठक श्री संकेतबट में संकेत देवी के पास में है. वर्तमान में भी श्री गुंसाई जी के दर्शन बहुत ही मनोहर हो रहे हैं. आपके एक सेवक गुजराती ब्राहमण रेडा को दिव्य चक्षु देकर विवाह खेल के अलौकिक

दर्शन करवाये हैं. रेडा वै-णव तो दर्शन कर रस मग्न हो गया तथा देह का अनुसंधान नहीं रहा. तब श्री गुंसाई जी ने सावधान किया.

रीठोरा

श्री गुंसाई जी की 11 वी बैठक

श्री गुंसाई जी साक्षात यहां पर बिराज रहे हैं. बहुत ही अदभुत तथा अलौकिक बैठक है. श्री गुंसाई जी ने चंद्रावली कुंड में स्नान किया और आज्ञा की कि यह श्री चंद्रावली जी की निकुंज है. श्री गुंसाई जी ने चंद्रावली कुंड में स्नान किया. यहां पर श्री गुंसाई जी ने दानलीला ग्रंथ प्रकट किया है. 3 दिनों तक श्रीमद भागवत का पारायण किया है. महा अलौकिक सुख उत्पन्न हुआ.

श्री करहला

श्री महाप्रभुजी की बैठक

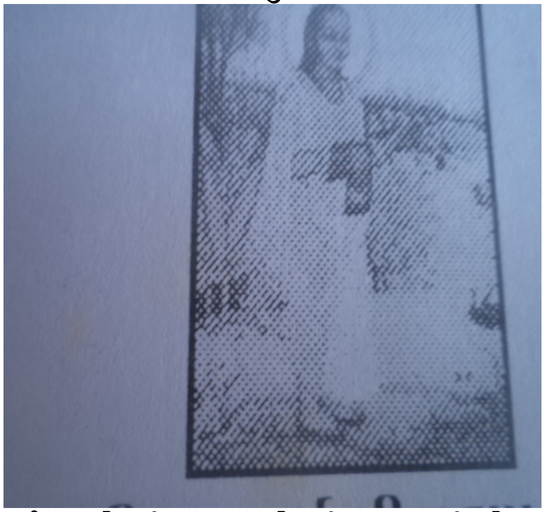

वर्तमान में भी साक्षात में श्री महाप्रभुजी के बहुत ही अदभुत दर्शन हो रहे हैं. पूरे विश्व से वै-णव यहां पर दर्शन करने के लिए आते हैं. गुजरात के वै-णवों के अंदर अपार उत्साह देखने मिलता है. श्री महाप्रभुजी ने दिव्य लीलाएं वै-णवों के लिए नित्य यहां पर की हैं. बैठक चरित्र में श्री महाप्रभुजी की बैठक के बारे में जानकारी उपलब्ध नहीं है. श्री महाप्रभुजी की बैठक श्री गुंसाई जी की बैठक एवं श्री गोकुलनाथ जी की बैठक कुंड पर साथ साथ हैं.

श्री गुंसाई जी की 12 वी बैठक

श्री गुंसाई जी की बैठक श्रीनाथ जी के जलधरा के पास में करहला में है तथा 3 दिनों तक यहां पर रुके हैं. यहां पर आपने श्री रासपंचाध्यायी की श्री सुबोधिनी जी पर श्री टिप्पणीजी ग्रंथ लिखकर प्रकट किया है. रासोली में श्री ललिता जी को स्वरुप है श्री गुंसाई जी ने एक पु-प की माला पहनाने लगे तब श्री ललिताजी ने माला न पहिन कर हाथ में ले ली. उस समय किसी ने देखी नहीं.

शाम के समय में जब गुंसाई जी दर्शन के लिए आये तब श्री ललिता जी ने कही कि तुम्हारी माला श्री स्वामिनीजी को पहनाई तब स्वामिनीजी ने प्रसादी कर माला मुझे दी है. स्वामिनीजी ने कहा कि यह माला गुंसाई जी को देना. श्री गुंसाई जी ने माला पहनकर एक अदभुत तथा दिव्य श्लोक कहा तथा बहुत प्रसन्न हुए. श्री ललिताजी भी बहुत ही प्रसन्न हुई. श्री गुंसाई जी ने वै-णवों को श्री गुंसाई जी के द्वारा साक्षात यहां पर दर्शन देकर अपनी शरण में लिया है.

श्री गोकुलनाथ जी की 7 वी बैठक

श्री गुंसाई जी की बैठक के पास में श्री गोकुलनाथ जी की बैठक है. वर्तमान में भी अदभुत आनन्द आता है. बहुत ही शांति तथा मन को प्रसन्न करने का वातावरण है.

एक बार यहां पर आने पर वापस जाने का म नही नहीं करता है. श्री गोकुलनाथ जी ने यहां पर वेणुगीत की सुबोधिनी जी का प्रसंग चलाया जिसमें सभी

को रसावेस हुआ. रसावेश के कारण देह का अनुसंधान न रहा. आपने सभी को सावधान किया. आपने यहां पर श्रीमद भागवत सप्ताह की है. वै-णवों को महा अलौकिक आनन्द हुआ.

रासौली

श्री गोकुलनाथजी की 8 वी बैठक

जाव से कोटवन जाते समय रासोल गांव आता है वहां पर थोड़े दूर चोतरे पर बैठक जी है. बैठक जी प्रगट नहीं है. व्रजवासी पूछने पर चोतरा बताते हैं. दूसरी बैठकों के समान सेवा का प्रबंध नहीं है. वर्तमान में श्री गोकुलनाथजी को मानने वाले अपार श्रद्धा के साथ में आते हैं.

कल्याणभटट ने भ्रमरगीत की श्री सुबोधिनीजी का प्रसंग श्री गोकुलनाथ जी से पूछा तो आपने तीन प्रहर तक प्रकाश डाला जिससे वै-णवों को अनिर्वचनीय सुख मिला है. यहां पर श्री गोकुलनाथजी ने श्रीमद भागवत सप्ताह की है. महा अलौकिक आनन्द प्राप्त हुआ है.

श्री कोटवन

श्री गुंसाई जी की 13 वी बैठक

श्री गुंसाई जी सभी के अलौकिक मनोरथों को पूरे कर रहे हैं. श्री गुंसाई जी की बैठक कोटवन में शीतलकुंड के उपर है तथा गोविंदस्वामी को आधी रात को युगल स्वरुप के दिव्य दर्शन करवाये हैं. गोविंदस्वामी भगवान के दर्शन के अधिकारी हैं.

भगवान ने स्वामिनी के मोती के हार को तोड दिया तथा फिर उसे अपने हाथ से तैयार कर स्वामिनी को पहनाया है. गोविंदस्वामी ने भगवान के अदभुत दर्शन कर पद गाये हैं. श्री गुंसाई जी साक्षात यहां पर बिराजकर वै-णवों को दर्शन दे रहे हैं. कोटवन में दिव्य लीला का अनुभव वै-णवों को हमेशा होता है.

श्रीचीरघाट

श्रीगुंसाई जी की 14 वी बैठक

श्री गुंसाई जी की बैठक चीरघाट परं है. 3 दिनों तक यहां पर आप रुके हैं. श्री गुंसाई जी की परम दया वै-णवों पर बरस रही है. चीरघाट बहुत ही मनोहर स्थान है.

चीरघाट पर अग्निकुमारीका को वरदान दिया कि शरद की रात्रि को रास का दान करुंगा. श्री गुंसाई जी ने व्रतचर्या ग्रंथ प्रकट किया है. चीरघाट भगवान कन्हैया की प्राचीन दिव्य एवं पवित्र भूमि है तथा यहां पर अदभुत दर्शन करने प्रतिदिन बहुत अधिक व्यक्ति आते हैं.

बच्छवन

श्री गुंसाई जी की 15 वी बैठक

श्री गुंसाई जी की बैठक बच्छवन में छोकर के पेड के नीचे है. वर्तमान में श्री गुंसाई जी की बैठक में अदभुत

आनन्द अनुभव होता है. आपने वेणुगीत पर टिप्पणी प्रकट की है. यहां पर ब्रहमा ने माया के प्रभाव में मोहित होकर भगवान पर अविश्वास कर बछडे चोरी किये हैं.

ब्रहमा ने अपने निवास पर बछडे छुपाये तथा भगवान को चुनौती दी थी. बाद में ब्रहमा को अपने कार्य पर शर्म आने पर भगवान की स्तुति की है. श्री गुंसाई जी वै-णवों को यहां पर दर्शन देने सदैव ही विद्यमान है.

नरीसेंवरी

श्री गिरधर जी की बैठक

बच्छवन से वृंदावन जाते समय यमुनाजी उतरने पर नरीसेंवरी गांव आता है. नरीसेंवरी में बलभद्रकुंड के पास में श्री दाउ जी के पास में श्री गिरधर जी की बैठक है. यहां आप खटमास बिराजे हैं. यहां आपने श्रीमद भागवत कथा की है. लीला के अवलोकन करने पर अनिर्वचनीय सुख मिला. भगवदीय को अलौकिक दर्शन करवाये. अनेक जीवों का उद्धार किया.

बेलवन

श्री गुंसाई जी की 16 वी बैठक

श्री गुंसाई जी की बैठक बेलवन में श्री यमुना के किनारे है तथा 3 दिनों तक रुककर भगवानदास को अदभुत रास के दर्शन करवाये हैं. पुरु-ोत्तम हुललास ग्रंथ प्रकट किया है. श्री गुंसाई जी दिव्य दर्शन दे रहे हैं.

राधाकृ-णकुंड

श्री महाप्रभु जी की 9 वी बैठक गोविंदकुंड,

डाकधर राधाकुंड जिला मथुरा

श्री महाप्रभु जी की बैठक राधाकृ-णकुंड में श्री स्वामिनीजी के महेल है वहां पर छोकर के वृक्ष के नीचे एक माह तक आप बिराजे हैं. आपकी बैठक के पास में श्री गुंसाई जी की बैठक है.

एक समय प्रातःकाल श्री महाप्रभुजी बिराजे तब श्रीनाथजी और श्रीस्वामिनीजी बांहजोटी किये श्री गिरीराज जी के शिखर पर पधारे. यह बात श्री आचार्य जी जान गये. तब श्रीकुंड होकर आप श्रीनाथजी के पास में पधारे. तब अंतरंग वै-णवों को दर्शन हुए.

श्रीनाथजी के संग वै-णव मूर्छित हुए. आचार्य जी तीसरे दिन वहां पर पधारे तब आचार्य जी ने मूर्छित वै-णवों पर जल छिड़ककर उनको सावधान किया.

आचार्य जी ने दामोदरदास से कहा कि यहां पर आठ दिशा में आठ कुंड आठ सखियों के नाम पर हैं. चंद्रभागाकुंड, चंपकलताकुंड, चंद्रावलीकुंड, ललिताकुंड, विशाखाकुंड, बहुलाकुंड, संध्यावलीकुंड, चित्रावलीकुंड. आचार्य जी ने आठों कुंडों में स्नान किया.

श्रीकृ-ण ने वेणु से कृ-णकुंड तथा स्वामिनीजी ने नख से राधाकुंड खोदा है. कृ-णकुंड तथा स्वामिनीकुंड में बहुत अधिक जल है.

जल के अंदर स्वामिनीजी का महेल हे तथा महेल में नित्य लीला कर रहे हैं. यहां से आगे आचार्य जी कुसुमोखरी पधारे. कुसुमोखरी में आचार्य जी ने स्नान किया.

उद्धवजी गुल्मलता होकर बिराज रहे हैं. उद्धवजी ने आचार्य जी से विनंती की कि सुबोधिनी में से भ्रमरगीत सुनावे. आचार्य जी ने कहा कि एक श्लोक सुनाउंगा. बारह प्रहर में एक श्लोक का अर्थ कहा.

इसके बाद में नारदकुंड में स्नान कर ग्वालपोखर में स्नान कर मानसीगंगा चक्रतीर्थ के नीचे आकर बिराजे.

साक्षात बिराजकर नित्य दर्शन देकर अनेक दैवी वै-णवों को अपनी शरण में लिया है

श्री गोकुलनाथ जी की 3 री बैठक

श्री गोकुलनाथजी की बैठक श्री राधा–कृ-णकुंड पर श्री गुंसाई जी की बैठक के पास में है. श्री गोकुलनाथजी श्री राधाकृ-णकुंड में स्नान करके बिराजे. आपने कल्याणभटट से कहा कि श्रीठाकोर जी श्री स्वामिनी जी के साथ में नित्य रमण करते हैं तथा श्री स्वामिनीजी के रत्नजटित महेल हैं इसलिए यहां पर सप्ताह करेंगे. यहां पर श्रीमद भागवत सप्ताह के कारण महाअलौकिक आनन्द सभी वै-णवों को मिला है.

श्री गुंसाई जी की 4 थी बैठक

एक दिन के लिए श्री गुंसाई जी यहां पर बिराजे हैं. श्री गुंसाई जी की बैठक श्री महाप्रभुजी की बैठक के पास में राधाकृ-णकुंड पर मौजूद है. यहां पर रधुनाथदास गोडिया आया तथा श्री गुंसाई जी को सा-टांग दंडवत प्रणाम कर श्री गुंसाई जी से पूछा कि स्वामिनीजी को स्वकीय माने है.

तब श्री गुंसाई जी ने कहा कि हां हां स्वकीयत्व माने हैं. तब श्री गुंसाई जी ने एक कोरा कागज मंगवाकर कुंड में डलवाया तथा कहा कि स्वामिनीजी अपने हस्ताक्षर करें तो प्रमाण है.

कागज निकुंज में पहुंचा तब ललिता जी ने स्वामिनीजी से कहा कि श्री गुंसाई जी के साथ में गोडिया का वाद हुआ है इसलिए श्री गुंसाई जी ने कागज भिजवाया है. स्वामिनीजी ने एक श्लोक लिखकर कागज श्री गुंसाई जी के पास में भिजवाया.

स्वामिनीजी की इच्छा से कागज जल में गिला नहीं हुआ. श्री गुंसाई जी ने कागज कुंड में से मंगवाया तथा श्लोक पढ़ा. सभी गोड़िया निरुत्तर हो गये तथा सभी ने जाना कि श्री कृ-ण तथा श्री स्वामिनी जी श्री गुंसाई जी के वश में हैं.

श्री गुंसाई जी साक्षात बिराजकर वै-णवों को दर्शन दे रहे हैं. अनेक दैवी जीवों को अपनी शरण में लिया है. वै-णवों को भगवान की दिव्य लीला का अनुभव यहां पर होता है.

मानसीगंगा

श्री महाप्रभु जी की 10 वी बैठक वल्लभधाट
डाकधर गोवर्धन ता. मथुरा

श्री महाप्रभु जी की बैठक मानसीगंगा में है. यहां पर आप 7 दिन बिराजे हैं. यहां पर कृ-ण चैतन्य 6 माह बिराजे हैं. कृ-णचैतन्य ने सवालक्ष भगवतनाम लेने का संकल्प किया. भगवतनाम पूरे होने के बाद में बात करुंगा ऐसा संकल्प लिया था.

कृ-ण चैतन्य ने श्री महाप्रभुजी के दर्शन कर दंडवत कर विंनती की. पुराण में कहा गया है कि मानसीगंगा दूधमय है कृपया दर्शन करायें. दर्शन कर जगन्नाथ जी के दर्शन करने जाउंगा. मानसी गंगा ने आज रात्रि को कहा कि आप पधारेंगे तब सभी मनोरथ पूरे होंगे.

आचार्य जी ने कमंडल में से जल लेकर सभी वै-णव के नेत्रों पर छिड़क दिये. दिव्य नेत्रों से मानसीगंगा का दिव्य स्वरुप दिखाई दिया. मानसीगंगा दूधमयी दिखाई दी. आपने यहां पर श्रीमद भागवत सप्ताह की है. चक्रेश्वर

महादेव जी नित्य भागवत सुनने के लिए आते थे. मानसीगंगा में श्री महाप्रभु जी सदैव विद्यमान हैं.

परासोली

श्री महाप्रभुजी की 11 वी बैठक डाकधर गोवर्धन जिला मथुरा

श्री महाप्रभु जी की बैठक परासौली में चंद्र सरोवर के पास में छोकर के वृक्ष के नीचे है. बंसीवट के रास के दर्शन किये हैं तथा चंद्रकूप में स्नान किये हैं.

यहां पर आपने श्रीमद भागवत पारायण सात दिनों तक किया है. भगवदीयन को रासलीला के दर्शन करवाये हैं.

एक वै-णव ने आपश्री से पूछा कि श्री गिरीराज जी के दर्शन साक्षात कैसे होंगे? तब आपने कहा कि एक दिन में तीन परिक्रमा बिना कहीं बैठे करे.

तब वै-णव ने आपको सा-टांग दंडवत कर गिरीराजजी की तीन परिक्रमा की.

सबसे पहले सफेद सांप देखा. वै-णव असगुन जानकर एक धड़ी वहां पर खड़ा रहा. आगे पूंछरी के पास में एक ग्वाल मिला तथा उसने सिंह खड़ा है इसलिए आगे जाने से मना किया. श्री आचार्य जी को ध्यान करने के कारण सिंह अंतर्धान हो गया. सुंदरशिला के पास में गाय देखी तो उसकी परिक्रमा की.

आचार्य जी को कहा कि मुझे श्री गिरीराज जी के साक्षात दर्शन हुए हैं. आचार्य जी ने कहा कि वेद में श्री गिरीराज जी के पांच स्वरुप का वर्णन किया गया है.

यहां पर श्री महाप्रभु जी साक्षात बिराज रहे हैं. श्री महाप्रभु जी अनेक दैवी जीवों को अपनी शरण में लिया है.

वै-णवों को दिव्य लीला का अनुभव हमेशा यहां पर होता है. परासोली से दीवाली का उत्सव जानकर सुंदरशीला से पेंठोगांव पधारे. सामवेद के अनुसार यहां पर श्रीनारायण ने तपस्या की है. तब व्रजलीला में प्रवेश हुआ है.

लक्ष्मी जी ने लक्ष्मीकूप पर तपस्या की है. लक्ष्मीकूप में आपने स्नान किया है. वहां से आन्योर पधारे.

आन्योर

श्री महाप्रभु जी की 12 वी बैठक सदुपांडे के मकान में मुकाम आन्योर दूरभा-ा 05652815547, 2815059

श्री महाप्रभु जी की बैठक आन्योर में सदुपांडे के निवास में है. आप वृंदावन परासोली होकर सदुपांडे के निवास के चोतरे पर बिराजे हैं.

सदुपांडे तथा उसके परिवार के सभी सदस्यों को आपने सेवक किया है. सेवक करने के बाद में आपने सदुपांडे के घर का अंगीकार किया है. सदुपांडे श्रीनाथजी की सेवा के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए तत्पर रहे.

श्रीनाथजी ने अपने समय पर नरो को जब दूध के लिए आवाज लगायी तब आचार्य जी ने दामोदरदास को कहा कि यह आवाज तो श्रीनाथ जी की है. दूसरे दिन गिरीराज पर्वत पर जब आचार्य जी पधारे तब सामने से श्रीनाथजी पर्वत से नीचे उतर कर मिलने आये.

यहां पर श्री महाप्रभु जी तथा श्रीनाथजी का प्रथम मिलन हुआ है. आचार्य जी ने श्रीनाथ जी को मंदिर बनवाकर पाट पर बिठाया था. श्रीनाथजी की इच्छा अनुसार सेवाक्रम भी चालू करवाया.

तीन दिन बिराजकर श्रीमद भागवत पारायण किया.

गोविन्दकुंड

श्री महाप्रभुजी की 13 वी बैठक गोविन्दकुंड गिरीराजजी के सामने मथुरा 0565-2815731

श्री महाप्रभुजी की बैठक गोविंदकुंड पर है. श्री कृ-णदास मेधन ने आचार्य जी से विनंती की कि व्यापी वैकुंठ तथा लीला सामग्री के दर्शन गिरीराज जी में करायें. गोविंदकुंड के पास में गिरीराज जी पर एक शिला आचार्य जी ने दिखाई तथा कहा कि शिला को हटाकर अंदर चले जाओ. 3 दिनों तक चलने के बाद में व्यापी वैकुंठ एवं लीला सामग्री के दर्शन हुए.

लीला में सहचरी एक तोते के दर्शन किये जो सारस्वतकल्प से श्री स्वामिनीजी के सीखाने पर माधुरि के वृक्ष पर बैठकर लगातार श्रीकृ-ण का अ-टाक्षर मंत्र का नाम ले रहा है. जप में अंतराल न पड़े इसलिए जल भी नहीं पी रहा था. तीन बार कृ-णदास मेधन ने तोते को

श्रीकृ-ण स्मरण किया तब तोते ने तीन बार जल पिया. उसके बाद में तोते की योनी छूट गयी.

सुंदरशीला

श्री महाप्रभुजी की 14 वी बैठक श्री मुखारविंद

तरेटी जतीपुरा जिला मथुरा

सुंदरशिला के सामने छोकर के वृक्ष के नीचे आचार्य श्री बिराज रहे हैं. प्रथम गोवर्धन की पूजा कर दीपमालिका तथा अन्नकूट उत्सव किया. सवासेर भात को अन्नकूट के दर्शन श्रीगुंसाईजी ने श्री गोकुलनाथजी तथा श्रीशोभाबेटीजी को अदभुत अलौकिक कराये.

श्री आचार्यजी जब छोकर के वृक्ष के नीचे श्री दामोदरदास की गोद में मस्तक रखकर विश्राम कर रहे थे तब श्रीनाथजी पधारे. श्रीनाथजी के नूपूर सुनकर श्रीआचार्यजी जाग गये तथा श्रीनाथजी को अपनी गोद में बिठाकर कपोल पकड़कर मुख चुम्बन किया.

जतीपुरा

श्री महाप्रभु जी की 15 वी बैठक

श्री महाप्रभुजी की बैठक श्री नाथ जी के मंदिर में दक्षिण भाग में जतीपुरा में है. सेवा के अवकाश में आप यहां पर बिराजते थे. एक समय श्रीनाथजी के सिंगार कर चोतरे पे बिराज रहे थे तब सामग्री सिद्ध नहीं हुई थी. गोपीवल्लभ में ढील हुई.

स्वामिनी जी से ढील सहन नहीं हुई इसलिए स्वामिनी जी थार लेकर पधारी. यहां पर श्री महापभु जी ने दो बार श्रीमद भागवत पारायण किया है. देवप्रबोधिनी एकादशी तक आप यहां पर बिराजे हैं. श्री गिरीराज जी की एक परिक्रमा श्री महाप्रभु जी ने की है. यहां से गुलालकुंड, बिलछूकुंड, परमदरो जो श्रीदामासखा का गांव है एक रात्रि विश्राम कर दूसरे दिन इंद्रकूप में आचमन कर कामवन पधारे.

श्री गिरीराज जी का दिव्य स्वरुप श्री महाप्रभु जी ने दर्शन करवाया है. श्री महाप्रभु जी साक्षात यहां पर बिराज रहे हैं. वै-णव सात दिनों तक रहकर नित्य महाप्रभु के दर्शन करते हैं.

श्री गुंसाई जी की 7 वी बैठक

वै-णव श्री गुंसाई जी के दिव्य दर्शन करने अवश्य आते हैं. पवित्र मन से अर्चना करते हैं. प्रकट में श्री गुंसाई जी वै-णवों को अनुभव करवा रहे हैं.

श्री गुंसाई जी की बैठक मथुरेश जी के मंदिर में है एवं यहां पर श्री गुंसाई जी बिराजते थे. यहां पर श्री गोकुलनाथ जी ने श्री गुंसाई जी से विनंती की कि महाप्रभुजी ने सवा शेर भात का अन्नकूट कराया? श्री गुंसाई जी ने हां कही. श्री महाप्रभुजी की लीला नित्य अखंड है. श्री महाप्रभु जी के द्वारा सवा शेर भात को

अन्नकूट के दर्शन गोकुलनाथ जी और श्री शोभाबेटी जी को श्री गुंसाई जी ने करवाये हैं.

श्री गोकुलनाथ जी की 5 वी बैठक

श्री गोकुलनाथ जी की बैठक श्री गोकुलनाथ जी के मंदिर में जतीपुरा में है. उद्धव त्रवाडी आपका सेवक आठो प्रहर हाजिर रहतो तथा आप उस पर बहुत ही कृपा करते थे. श्री गोकुलनाथ जी नित्य वै-णवों को दर्शन दे रहे हैं. वै-णव बहुत ही उत्साह के साथ में उत्सव मनाते हैं.

श्री गोकुलनाथ जी ने भोजन करते समय दो चार बार जल पिया तब सेवक ने पूछा कि आपने जल इतना अधिक क्यों पीया? खिचड़ी में नमक ज्यादा पड़ जाने के कारण ही अपने सेवक को भगवान की सेवा बहुत ही सावधानी से करने की आज्ञा की.

श्री गिरधर जी की 2 री बैठक

श्री गिरधर जी की बैठक श्री मथुरेश जी के मंदिर में श्री गुंसाई जी की बैठक के पास में जतीपुरा में है.

श्री गिरधर जी ने तीन बार श्रीनाथ जी की आज्ञा होने पर श्री गुंसाई जी से आज्ञा लेकर सातों स्वरुप पधराकर अन्नकूट किया. भगवान श्री श्री कृ-ण की अन्नकूट की परम्परा को श्री गिरधर जी ने वै-णवों के बीच में कर गोवंश का महत्व बढ़ाया है.

गोवर्धन पर्वत पर 500 साल पूर्व भगवान श्री गोवर्धन धरण का प्राकटय होने के कारण ही जतीपुरा का महत्व कलियुग में सर्वोपरि है. 500 साल पूर्व श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य जी का जन्म भी ठीक उसी समय चम्पारण में हुआ था. श्री महाप्रभु जी तथा श्री गोवर्धन धरण का प्रथम मिलन गोवर्धन पर्वत पर हुआ था.

भगवान श्री कृ-ण व्रज से नाथद्वारा पधारकर वर्तमान में वहीं पर विराज रहे हैं. जतीपुरा व्रज का मुख्य आकर्-ाण का केंद्र है तथा भगवान कृ-ण के समय से ही परम्परागत देवराज इंद्र के पूजन को भगवान श्री कृ-ण ने बंद करवाकर पहली बार गोवर्धन पूजा करने के कारण बहुत ही चर्चा में रहा है. भगवान श्री कृ-ण के द्वारा गोवर्धन पूजा प्रारम्भ करने के बाद लगातार यह परम्परा विश्व में चल रही है.

इंद्र के द्वारा व्रज में अचानक व्रजवासियों के द्वारा अपनी पूजा बंद होने के कारण नाराज होकर भयंकर व-र्ा करवायी गयी थी जिससे बचने के लिए भगवान श्री कृ-ण ने अपनी सबसे छोटी अंगुली पर गोवर्धन को धारण कर 7 दिनों तक व्रजवासियों की रक्षा की थी. भगवान ने विश्व के सामने गोवर्धन का महत्व साबित किया था.

इंद्र का अंहकार दूर करने के लिए भगवान कृ-ण ने यह लीला की थी. समय के साथ में गोवर्धन पर्वत का आकार लगातार कम होता चला गया है. गोवर्धन पर्वत को दिव्य पर्वत माना जाता है. गोवंश के वर्धन करने के लिए गोवर्धन में अनेकों झरने तथा दिव्य वनस्पतियां मौजूद हैं. जतीपुरा में बहुत सारे यात्री गोवंर्धन की परिक्रमा करने आते रहते हैं.

5, 7, 9 कोस की परिक्रमा बिना रुके भक्त करते हैं. सुबह 4 बजे से परिक्रमा प्रारम्भ करते हैं. रात्रि के समय में भी परिक्रमा करते हैं. दंडवती परिक्रमा भी अनेकों भक्त करते हैं. दंडवती परिक्रमा करने पर समय बहुत ही अधिक लगता है. दंडवती परिक्रमा करने पर मन के विकार पूरी तरह से दूर हो जाते हैं. सिर्फ गोमाता के दूध पर रहकर परिक्रमा करने पर भगवान के दर्शन होते हैं. परिक्रमा दूध की निरन्तर धारा के साथ में की जाती है. परिक्रमा मार्ग पर बहुत सारी गोशालाएं मौजूद हैं. परिक्रमा मार्ग पर यात्रिओं के द्वारा गोवंश के दर्शन कर उदारता के साथ में दान किया जाता है. जतीपुरा में आज भी गोवर्धन पर्वत विश्व के भक्तों के आकर्-ाण का मुख्य केंद्र है. जतीपुरा में मुखारविंद पर प्रतिदिन भक्तों के द्वारा गोमाता के दूध से स्नान करवाया जाता है.

कामवन

श्री महाप्रभु जी की 16 वी बैठक श्रीकुंड पर मुकाम कामवन

श्री महाप्रभु जी की बैठक सुरभिकुंड यानी श्रीकुंड में छोकर के वृक्ष के नीचे कामवन में है. आप यहां पर सात दिनों तक बिराजकर चोराशीकुंडों में स्नान कर श्रीमद भागवत को पारायण किया. सुरभिकुंड में ब्रहमपिशाच रहता था. रात्रि में जो भी सुरभिकुंड में रहता था उसका भक्षण करता था. वहां के तीर्थगुरु ने आपसे विनंती की कि आप दिन में यहां पर रहें तथा रात्रि के समय में गांव में चले जायें. आचार्य जी रात्रि में सुरभिकुंड में रुके रहे. आधी रात को ब्रहमपिशाच निकला.

उस समय वै-णव अपनी धोती अपरस में सुका रहा था. वै-णव ने आचार्य से विनंती की तब आचार्य श्री ने बताया कि ब्रहमपिशाच ब्राहमण था तथा कामवन में राज कर रहा था. ब्राहमण को बहुत भूमि दान की थी वह वापस ले ली थी जिसके कारण ही ब्रहमपिशाच बन गया है. अपरस की धोती का जल छिड़कने पर ब्रहमपिशाच मुक्त हो गया. श्री महाप्रभु जी साक्षात बिराजकर दैवी जीवों का उद्धार यहां पर कर रहे हें.

श्री गिरधर जी की बैठक

श्री महाप्रभुजी की बैठक के साथ में श्री गिरधर जी की बैठक है. वै-णव दर्शन एवं सेवा करते हैं. बैठक चरित्र में वर्णन नहीं मिलता है.

श्री गुंसाई जी की 8 वी बैठक

श्री गुंसाई जी की बैठक कामवन में सुरभिकुंड श्रीकुंड के उपर है. वर्तमान समय में श्री गुंसाई जी नित्य यहां पर अलौकिक आनन्द दे रहे हैं. यहां पर श्री गुंसाई जी के सेवक श्री मधुसूदनदास जो सिर्फ गोमाता का दूध पीते थे तथा श्री महाप्रभुजी की नित्य सेवा करते थे. श्री सर्वोत्तम जी को जप करते थे. श्री गुंसाई जी ने श्री महाप्रभुजी के साक्षात दर्शन करवाये. यहां पर बिराजकर अनेकों वै-णवों को अपनी शरण में लिया है.

श्री गोकुलनाथ जी की 6 वी बैठक

श्री गोकुलनाथजी कामवन में श्री कुंड में वर्तमान में साक्षात बिराज रहे हैं. श्री गोकुलनाथ जी ने आज्ञा कि कामवन लीलात्मक है इसलिए कामवन में लीला स्थल अनेक हैं. यहां श्री ठाकोर जी सदैव रमण करते हैं. आपने यहां पर श्रीमद भागवत सप्ताह की. वै-णवों को अनिर्वचनीय सुख मिला.

कामवन परिक्रमा मार्ग पर स्थित है इसलिए कामवन में पूरे विश्व से जिज्ञासु आते हैं तथा दिव्य भूमि में अपना जीवन सार्थक कर रहे हैं. कामवन में भक्त की हर मनोकामना पूरी हो रही है.

कामवन जिसे कामा के नाम से भी लोग जानते हैं एवं भगवान श्री कृ-ण के समय से ही यह तीर्थ जाना जाता है तथा आज भी भगवान श्री कृ-ण की नित्य लीला चल रही है में श्री वल्लभ आचार्य जी जिन्हे प्यार से विक्की बावा कहा जाता है 8000 से अधिक गोवंश की सेवा बहुत ही प्रेम से कर रहे हैं. उनके कार्यों से प्रभावित होकर संतों एवं नागा साधुओं के द्वारा उनका सम्मान छत्र देकर किया गया है. कामवन में नित्य बहुत ही भव्य एवं सुंदर उत्सव मनाये जाते हैं. उत्सवों में गोमाता के दूध से तैयार व्यंजन प्रसाद के रुप में भक्तों को दिये जाते हैं.

कामवन में 3 करोड़ वै-णव गोकुल चंद्रमा जी के दर्शन करने के लिए आते हैं. महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य के वंशज श्री वल्लभ आचार्य वर्तमान में 200 से अधिक पु-टिमार्गीय मंदिरों में गोवंश की सेवा पूरे भारत में कर रहे हैं.

गहरवन

माताजी गोशाला

श्री रमेश बाबा के द्वारा 6 जून 2007 को माताजी गौशाला श्रीमान मंदिर सेवा संस्थान, गहवर वन, बरसाना में स्थापित कर चुके हैं. भावी योजना विस्तार की है.

वर्तमान में 32 करोड़ का कुल खर्च है तथा कुल प्राप्ति से खर्च चलता रहता है. वर्तमान में जमीन की आवश्यकता है.

बायो गैस प्लांट लगाने की आवश्यकता है. जमीन के अभाव में गोबर गोमूत्र का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं.

श्री ब्रजशरण जी संचालक 9927396087 वर्तमान में 40 एकड़ भूमि पर 18,000 देशी तथा दोगले एवं विदेशी गोवंश की सेवा 180 कर्मचारियों से करवा रहे हैं.

श्री महाप्रभु जी की 17 वी बैठक श्री राधाजी के मंदिर के आगे, मोरकुटी के नीचे बरसाना जिला मथुरा मोबाइल 09917492855

श्री महाप्रभु जी की बैठक गहरवन में कुंड के उपर है. आप यहां पर सात दिनों तक बिराजे हैं. आपने यहां पर श्रीमद भागवत सप्ताह की है. एक दिन आप गहरवन देखने के लिए गये तब वहां पर आपने बहुत सारे सिंह, व्याध्र देखे. आगे एक अजगर देखा जिसे बहुत सारे चीटे काट रहे हैं. अजगर को देखकर आचार्य जी को बहुत ही दया आ गयी.

आपने दामोदरदास को कहा कि यह अजगर पिछले जन्म में वृन्दावन का मंहत था तथा अपने उदर भरने के लिए बहुत सारे सेवक किये थे एवं बहुत द्रव्य एकत्र किया था. द्रव्य सभी वि-ाय में लगाया तथा भगवदभजन नहीं किया. सेवक चीटे के रुप में मंहत को काट रहे हैं और कह रहे हैं कि अधर्मी तूने अपना जीवन तो बरबाद किया लेकिन हमारा जन्म क्यों व्यर्थ किया.

व्रज में वास करने के कारण ही व्रज में रहने मिला है. व्रज में अपने कर्मों का दंड भोग रहा है. श्री आचार्य जी ने अपने अंगु-ट का चरणोदक अजगर तथा कीटों पर छिड़कवाया. अजगर तथा कीटों के शरीर छूट गये तथा विमान से वैकुंठ चले गये. यहां से आप संकेतवन पधारे.

संकेतवन
बरसाना

श्री महाप्रभुजी की 18 वी बैठक संकेतवन बगीचे में कृ-णकुंड डाकधर बरसाना जिला मथुरा

श्री महाप्रभु जी की बैठक संकेतवन में कृ-णकुंड के उपर छोकर के वृक्ष के नीचे है. वर्तमान में श्री आचार्य जी साक्षात बिराजकर वै-णवों को दर्शन दे रहे हैं. यहां पर आपने सात दिनों तक श्रीमद भागवत का पारायण किया था. प्रतिदिन भागवत के प्रारम्भ में 16 साल की सुंदरी अनेक आभू-ाण धारण कर रत्नजटित डंडी के चमर से आचार्य जी की सेवा करने लगी. कथा समाप्ति के बाद में अंतर्धान हो जाती थी.

एक दिन आचार्य जी से वै-णव ने पूछा कि यह स्त्री कौन है? आचार्य जी ने मुस्कुरा कर बताया कि संकेतदेवी हमारे दर्शन तथा सेवा करने के लिए आती थी. संकेतवन भगवान श्री कन्हैया की भूमि है.

बरसाना भगवान के गोलोक धाम का दिव्य तीर्थ है तथा बरसाना में संत श्री राधा जी की कृपा पाने के लिए सिर्फ गोमाता का दूध पीकर कठोर तपकर रहे हैं. श्री वृ-ाभानु वर के पास बरसाने में 50 लाख गोवंश मौजूद था. उनके 6 भाइयों वृ-ाभानुओं के पास प्रत्येक के पास 10 लाख गोवंश मौजूद था. श्री राधा जी भगवान श्री कृ-ण की अपार प्रेरणा है.

भगवान श्री कृ-ण के समय में गोवंश चरम सीमा पर था. बरसाने की होली विश्व में आज भी प्रसिद्ध है.

बरसाना परिक्रमा मार्ग पर स्थित है. बरसाना में परिक्रमा में हजारों वै-णव प्रतिदिन आते हैं. गोवंश के लिए बहुत ही उदारता के साथ में दान देते हैं.

बरसाना में श्री राधा जी के तीर्थ में गोवंश के संवर्धन करने के लिए विशे-ा प्रयत्न किया गया है. बरसाना श्री राधाजी का गांव है. बरसाना वर्तमान में विश्व में श्री राधाजी के लिए सुप्रसिद्ध है. बरसाना में प्रतिदिन भक्तगण पूरे विश्व से दर्शन करने के लिए आते हैं.

नंदगांव

श्री महाप्रभु जी की 19 वी बैठक पानसरोवर सड़क के सामने पार डाकघर नंदगाम श्री बांकेबिहारी मुखिया जी 9358758750, 9917755788

श्री महाप्रभु जी की बैठक नंदगांव में है. श्री उद्धवजी यहां पर खटमास तक बिराजे हैं इसलिये महाप्रभुजी भी खटमास बिराजे हैं. श्री नंदरायजी को भागवत सुनायेंगे तथा यहां के क्रीडास्थल के दर्शन करेंगे. पानसरोवर में एक मुगल ने अपने धोड़ा को पानी पिलाया

तो पेट में कुरकुरी दोरी जिससे घोड़ा मर गया तथा चतुर्भुज स्वरुप धारण कर वैकुंठ में गया. श्री महाप्रभुजी ने यह देखकर माथा धुनाया तब वै-णव ने कारण पूछा. श्री आचार्य जी ने वै-णवों को दिव्य दृ-िट दी.

मुगल ने आचार्य जी से अपने शरण में लेने के लिए विनंती की तब आचार्य जी ने कहा कि दूसरे जन्म में तुम्हारा अंगीकार होगा. आठ प्रहर के बाद मुगल की देह छूट गयी. नवानगर में मोची के घर में संगजीभाई के नाम से जन्म लिया तथा श्री गुंसाई जी के सेवक हुए.

श्री महाप्रभु जी यहां पर साक्षात बिराज रहे हैं. नंदगांव में गोवंश के संवर्धन का कार्य भगवान श्रीकृ-ण के समय से ही किया जा रहा है. नंदगांव में आज भी भगवान श्री कृ-ण अपनी गोचारण लीलायें करते हैं. नंदगांव में सिर्फ गोमाता के दूध पीकर आज भी संत अपनी तपस्या से लीला का साक्षात दर्शन कर रहे हैं.

भगवान श्री कृ-ण के समय में नंदराज के पास 1 करोड़ गोवंश मौजूद था. उनके 9 भाइयों नंद के पास 9-9 लाख गोवंश मौजूद था. 9 उपनंदों के पास में 5-5 लाख गोवंश मौजूद था. प्रत्येक गोप के पास में 1 लाख गोवंश मौजूद था. नंदगांव के नाम से कंस जैसे दु-ट कांपते थे. नंदगांव परिक्रमा मार्ग पर है इसलिए परिक्रमा करने वाले वै-णव प्रतिदिन नंदगांव में आते हैं तथा गोवंश के संवर्धन करने के लिए वित्तीय सहयोग कर रहे हैं.

वर्तमान में गोवंश संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए गोशाला मौजूद है. नंदगांव में भगवान के दर्शन करने के लिए पूरे विश्व से भक्त प्रतिदिन आते हैं.

कोकिलावन

श्री महाप्रभु जी की 20 वी बैठक मुकाम जाव,
डाकधर बठैल, जिला मथुरा

श्री महाप्रभु जी की बैठक कोकिलावन में श्रीकृ-णकुंड के छोकर के वृक्ष के नीचे है. यहां पर आप एक माह तक बिराजे हैं. कोकिलावन में निम्बार्क संप्रदाय को चतुरानागा जिसके साथ में सदैव 1000 नागा साथ रहते थे रहता था. चतुरानागा ने आचार्य श्री महाप्रभुजी को सा-टांग दंडवत प्रणाम कर विनंती की कि आप वि-णुस्वामी के मत के आचार्य हैं तथा मायामत को खंडन कर भक्ति मार्ग को स्थापन कर आपने विजय कियो है. आप हम 1000 साधुओं को खीर का भोजन करवायें.

आपने कृ-णदास को आज्ञा की कि 5 सेर दूध कहीं से ले आओ. कृ-णदास ने 5 सेर दूध नंदगांव से लाये. आचार्य जी ने वासुदेवदास छकड़ा को कहा कि इसकी खीर करके 1000 बैरागियों को खिला दो. जब खीर सिद्ध हुई तब आपने अपनी दृ-िट करके खीर को अक्षय कर दिया.

1000 नागाओं के भोजन करने के बाद में 5 सेर खीर वैसी की वैसी रही. फिर वै-णवों ने भी खीर खायी. उसके बाद में बंदर तथा मोरों को भी खीर खिलायी. चतुरानागा ने जब यह चमत्कार देखा तो अपनी भूल के लिए क्षमा मांगी तथ सेवक करने के लिए विनंती की.

आपने आज्ञा की कि गोकुलनाथ तुमको सेवक करेंगे. तुम अभी 40 साल के हो. 110 साल के बाद तुम्हारा अंगीकार किया जायेगा. तुम्हारी आयु 150 साल है. चतुरानागा की जटा वृक्ष में उलझ गयी तथा तीन दिनों तक उलझी रही तब श्रीनाथजी ने स्वयं आकर उसकी जटा वृक्ष से अलग की.

बादशाह ने जब सभी की माला उतराई तब एक दिन गोकुलनाथ जी की दृ-िट चतुरानागा के सूने गले पर पड़ी. आपने कहा अरे चतुरानागा हम गृहस्थी माला नहीं उतार रहे हैं और तू बैरागी होकर माला उतार रहा है. चतुरानागा के आंखों में आंसू आ गये और विनंती की कि आप कृपा करके माला पहनाये तो पहनूं. महाप्रभुजी के वचन के अनुसार गोकुलनाथजी ने माला देकर सेवक किया.

150 साल की आयु में चतुरानागा गोविंदकुंड में समाधि लगाकर लीला में पहुंच गये.

कामरी

श्री गिरधर जी की 3 री बैठक

कोकिलावन से आगे चलकर बठेन होकर दो मील पर कामरीवन आता है. वहां कदमखंडी है. एक कदमखंडी में नीचे जमीन में एक गुप्त गुफा है जिसमें श्री गिरधर जी की बैठक है. यहां पर एक मायावादी था. वह बहुत ही महात्मिक था. सभी का खंडन करता था.

जब गिरधर जी पधारे तब मायावादी पंडित आया एवं उसने आपसे चर्चा की. आपने दो धड़ी में निरुत्तर कर दिया. तब पंडित ने आपको सा-टांग दंडवत कर विनंती की कि सेवक करें. तब आपने आज्ञा की कि रुद्राक्ष तोड़कर चंद्रभागा कुंड में स्नान कर आओ. आपने पंडित का अंगीकार किया. यह महात्म्य देखकर अनेक जीव आपकी शरण में आये.

भांडीरवन

श्री महाप्रभु जी की 21 वी बैठक श्री यमुना जी के सामने किनारे मुकाम भांडीरवन, तालुका मांट जिला मथुरा

वृज परिक्रमा करते हुए श्री महाप्रभु जी कोकीलावन से बड़ीबैठन, छोटी बैठन, कोटवन, शे-ाशाई, रामधाट, गोपीघाट, गुंजावन, निवारनवन, चीरधाट, नंदघाट होकर यहां पर पधारे थे. माधवाचार्य संप्रदाय के व्यासतीर्थ मंहत आपश्री के पास में पधारे तथा आपको अपना अंहकार बताकर गादी पर बैठाने के लिए अनुरोध किया. आपने कल जवाब देने को कहा.

रात्रि के समय मंहत को चार जने मुगदर से बहुत मारने लगे. मंहत के पूछने पर बताया कि तू आचार्य जी को गादी पर बैठायेगा. तू कल उनसे माफी मांग ले नही तो हम बहुत मारेंगे. मंहत सुबह आचार्य जी के पास में माफी मांगने आया.

मंहत ने अंगीकार करने के लिए विनंती की तब मंहत का अंगीकार किया. यहां से आप मानसरोवर को पधारे हैं. दैवी जीवों को अपनी सेवा में लेने के लिए ही यहां पर श्रीमद भागवत पारायण किया है. दिव्य एवं पवित्र क्षेत्र में भगवान की नित्य लीला चल रही है.

मानसरोवर

श्री महाप्रभु जी की 22 वी बैठक श्री यमुना जी के सामने किनारे डाकधर मांट जिला मथुरा

श्री महाप्रभु जी की बैठक मानसरोवर में है. यहां पर तीन दिनों तक आप बिराजे हैं. आपने श्रीमद भागवत का पारायण किया है. दामोदरदास को अर्धरात्रि के समय महाप्रभुजी दिखाई नहीं दिये. एक प्रहर के बाद में दामोदरदास को पुरु-ोत्तमकांति स्वरुप को दर्शन दिये. आपने दामोदरदास को आज्ञा की आज श्री स्वामिनीजी ने गाढ़ो मान किया था इसलिए मानमोचन करवाकर श्रीनाथजी के पास में पधराय के आया हूं. मानसरोवर रमणीय एवं बहुत ही दिव्य है. वै-णवों को श्री महाप्रभु जी सदैव दर्शन देने विद्यमान हैं.

सोरम जी

श्री महाप्रभु जी की 23 वी बैठक श्रीसुकरक्षेत्र सौरमघाट डाकघर सौरी दूरभा-ा 05744-233673

श्री महाप्रभुजी की बैठक सोरमघाट पर है. आचार्य के शि-य श्री कृ-णदास मेघन आपकी आज्ञा बिना अपने उपदे-टा गुरु के पास में दर्शन करने गये. तब गुरु ने कृ-णदास से पूछा कि तुमने मेरे होते हुए आचार्य के सेवक क्यों हुए? कृ-णदास ने कहा कि आप ही मेरे गुरु हैं. आपकी कृपा से ही आचार्य जी पूर्णपुरु-ोत्तम को प्राप्त किया हैं.

गुरु ने कहा कि तुम्हारे कहने से आचार्य जी पूर्णपुरु-ोत्तम कैसे हुए? तब कृ-णदास ने अग्नि हाथ में लेकर कहा कि यदि आचार्य जी पूर्णपुरु-ोत्तम हैं तो मेरा हाथ न जले. अन्यथा अग्नि मुझे भस्म कर दे. एक मूहर्त तक अग्नि हाथ में रखी. गुरु ने आचार्य जी का प्रताप देखकर कृ-णदास के हाथ से अग्नि गिरवा दी.

आचार्य जी के बड़े भाई श्री केशवपुरी ने यहां पर पृथ्वी परिक्रमा करते हुए मिले. नाव बिना गंगाजी के उस पार जाकर संध्यावदन कर वैसे ही चले आये तथा आचार्य जी के पास में अपनी सिद्धि दिखाकर खड़े रहे. यह बात आचार्य जी को अच्छी नहीं लगी.

तब आचार्य जी ने कहा कि सच्ची सिद्धि तो भगवत सेवा है. भगवत सेवा तो की नहीं सिद्धि से क्या होना है? दूसरे दिन आपने श्री केशवपुरी की सब सिद्धि हर ली. केशवपुरी जब गंगापार वैसे ही जाने लगे तब डूबने लगे. श्री आचार्यजी का नाम लेकर पुकारने लगे. उस समय आचार्य जी गंगा किनारे पर संध्यावदन कर रहे थे. आपने अपनी भुजा बढ़ाकर गंगा की मध्य धारा में से केशवपुरी को निकाल लिया. यह चमत्कार देखकर केशवपुरी आचार्य के पांव पड़े तथा कहा कि आप तो ईश्वर के अवतार हैं.

श्री गुंसाई जी की 20 वी बैठक

श्री गुंसाई जी की बैठक श्री महाप्रभुजी की बैठक के पास में है. वर्तमान में श्री गुंसाई जी नित्य दर्शन देकर सभी मनोरथ पूरे कर रहे हैं. सोरमघाट पर आपने स्नान किया तथा अपनी बैठक में पधार कर श्रीमद भागवत सप्ताह की है. वै-णवों को महा अलौकिक आनन्द मिला. आपने अपनी कृपा कटाक्ष से अनेक जीवों का उद्धार किया है.

श्री गोकुलनाथ जी की 9 वी बैठक

सोरम जी वै-णवों की आस्था में दिव्य तथा अदभुत स्थान है. वै-णव यहां पर अवश्य ही आते हैं. श्री गंगाजी में स्नान कर आपने यहां पर श्रीमद भागवत सप्ताह की है. श्री गोकुलनाथ जी ने कल्याणभटट को आज्ञा की कि गंगाजी को भगीरथ राजा पधराकर लाये हैं. गंगाजी में स्नान करने से आगे के प्रायश्चित का नाश होता है. श्री यमुना जी में भक्ति एवं मुक्ति मिलती है. यहां पर कृपा कटाक्ष कर अनेक जीवों का उद्धार किया है.

श्री गोकुलनाथ जी की बैठक श्री महाप्रभु जी एवं श्री गुंसाई जी की बैठक के पास में सोरम जी में है तथा गोवंश के लिए श्री गोकुलनाथ जी के समय से ही बहुत ही अच्छी तरह से कार्य चल रहा है.

अयोध्या

श्री महाप्रभु जी की 25 वी बैठक नवाघाट के पास में तुलसी उद्यान रामघाट मुकाम अयोध्या मुखिया जी श्री हरिशरन मोबाइल 9415460280 दूरभा-ा 05278-232033

श्री महाप्रभु जी वल्लभाचार्य की बैठक अयोध्या में सरयू के तीरे गुंसाई घाट पर है. आचार्य जी एक स्थान पर दर्शन करने के लिए पधारे तब वहां पर बाल्मिकी रामायण चल रही थी. हनुमान जी कथा सुन रहे थे. हनुमान जी ने आचार्य जी से पूछा कि आप कृ-ण के उपासक होकर रामचंद्र की पुरी में आये हो.

तब आचार्य जी ने कहा कि हम तो अपने कृ-ण के ससुराल में आये हैं. हनुमान जी ने पूछा कि अयोध्या कृ-ण भगवान का ससुराल कैसे हुआ? तब आपने बताया कि अयोध्या का राजा अग्निजित था. उसकी बेटी सत्या थी. भगवान श्रीकृ-ण ने सात बैल नाथकर सत्या से विवाह किया था.

हनुमान जी को उन्होंने समझाया कि नग्न होकर कथा सुनते हो? लंगोट लगाओ. तब से राम कथा के समय लंगोट के रुप में एक वस्त्र बिछाया जाता है. श्री रामचंद्र जी से मिलने के लिए आचार्य जी बैठक में पधारे. आचार्य जी ने कहा मर्यादापुरु-ोतमाय नमः तब हनुमान जी को यह सुनकर संदेह हुआ.

श्री रामचंद्र जी ने हनुमान जी के संदेह की बात जानकर आचार्य जी को सामग्री देने के लिए भिजवाया. हनुमान जी ने आचार्य जी को रामचंद्र का रुप धारण किए देखा. रामचंद्रजी के पास आकर हनुमान जी ने पूछा तब रामचंद्र जी ने कहा कि आचार्य जी मेरा स्वरुप धर सकते हैं लेकिन मैं इनका रुप नहीं धारण कर सकता हूं. श्री रामचंद्र जी तो श्रीपुरु-ोत्तम के हास्य अवतार हैं. आचार्य जी पूर्णपूरु-ोत्तम के मुखारविंद की अधि-ठाता अलैकिक आनंद समय की अग्नि रुप हैं.

यह स्थान बहुत ही सिद्ध एवं दिव्य है. कलियुग में गोवंश के संरक्षण करने के लिए अयोध्या बहुत ही उपयुक्त है. श्री महाप्रभु जी यहां पर साक्षात बिराज रहे हैं. वै-णव महाप्रभु के दर्शन करने आते हें तब उदारता के साथ में गोवंश के संवर्धन करने के लिए दान करते हैं.

भगवान श्री राम जी के जन्म के समय में महाराजा श्री दशरथ जी ने ब्राहमणों को अपार गोवंश का दान किया था. भगवान श्री राम ने बाल्य काल में गोवंश की पूंछ पकड़ कर बहुत सुंदर लीला की थी. भगवान श्री राम के विवाह के समय पर भी महाराजा दशरथ ने जनक

जी के अनुरोध पर ब्राहमणों को लाखों गोवंश का दान किया था.

भगवान श्री राम ने अपने संपूर्ण जीवन काल में गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए निरन्तर कार्य किया था. सांढ का विकास करने पर विशे-ा बल दिया जाता था. गोचर भूमि के कारण ही गोवंश आनन्द में था. भगवान श्री राम के समय में गोवंश अयोध्या में चरम सीमा पर था. गोमाताएं बहुत ही अधिक दूध देती थी. गोमाताएं कामधेनु के समान ही मानव की इच्छा पूर्ति करती थी.

गोमाता के दूध के निरन्तर सेवन करने के कारण ही प्रजा निरोगी तथा दीर्घायु थी. नारद जी के अनुसार भगवान श्री राम ने अपने जीवन में अग्निहोत्री ब्राहमणों को दस हजार करोड़ गोवंश का दान किया था. भगवान श्री राम का जन्म गोवंश एवं ब्राहमणों के हित के लिए हुआ था. अयोध्या में हमेशा ही देवत्व प्रमुख रहा है. वर्तमान में भी राम जन्म भूमि के लिए जबरदस्त संघ-र्ा जारी है.

अयोध्या को अवधपुरी भी कहा जाता है. अयोध्या में वर्तमान में गोवंश के संवर्धन करने के लिए गोवंश संवर्धन केद्र गोशालाओं के रुप में विद्यमान हैं. अयोध्या में गाय की अच्छी सेवा करने के कारण ही गायें बहुत ही अधिक दूध देती हैं. अयोध्या में गोवंश के संवर्धन करने के लिए बाहर से आने वाले भक्त अपार दान देते हैं. विश्व हिंदु परि-ाद एवं बजरंग दल के कार्यकर्ता गोवंश रक्षा करने के लिए पूरी तरह से सक्रिय हैं. अयोध्या में भगवान श्री राम के जन्म के कारण ही पूरे विश्व से प्रतिदिन दर्शन करने आते हैं.

श्री महाप्रभु जी की 26 वी बैठक वेदव्यास आश्रम के सामने जिला सीतापुर धर्मेन्द्र मुखिया जी मोबाइल 09935800215

नेमी-ारण्य में गोविंद कुड पर छोकर के वृक्ष के नीचे श्री महाप्रभु जी की बैठक मौजूद है. यहां पर श्री महाप्रभु जी साक्षात बिराज रहे हैं. बाहर से आने पर वै-णवों को सभी सुविधाएं है. वै-णवों को नित्य दिव्य एवं अदभुत दर्शन दे रहे हैं.

यहां पर आपने श्रीमद भागवत पारायण किया है. श्री महाप्रभु जी के द्वारा 88000 ऋ-ियों के द्वारा गुप्त रुप से यज्ञ करने पर वहां पर पधारे थे. तब सभी ब्राहमणों ने प्रशंसा की तथा आसन पर पधरा कर उनकी पूजा की तथा एक श्लोक कहा जिसका उत्तर तीन प्रहर तक महाप्रभु जी ने दिया है.

जिला वाराणसी

वाराणसी

काशी में श्री गुंसाई जी भी पधारे थे. श्री गुंसाई जी एक बार जब गंगा स्नान करने के लिए पधारे थे तब पुरु-ोत्तमदास सेठ की पुत्री भी मदनमोहन जी की सेवा में समय न मिलने के कारण ही अपने जीवन में पहली बार गंगा स्नान के लिए पधारी थी. श्री गुंसाई जी ने कहा कि गंगा जी आज धन्य हुई हैं.

श्री महाप्रभु जी की 27 वी बैठक जतनवड चेतनरोड वाराणसी ओंकारनाथ पंडया मुखिया जी मोबाइल 9335485457

श्री महाप्रभु जी की बैठक सेठ पुरु-ोत्तमदास जी के घर में है. यहां पर महाप्रभु साक्षात बिराज रहे हैं. सेठ पुरु-ोत्तमदास जी के पास में अपार सम्पत्ति थी. महाप्रभुजी ने सेठ पुरु-ोत्तमदास को नाम देने की आज्ञा की थी.

काशी में रहकर सेठ पुरु-ोत्तमदास कभी विश्वनाथ जी के दर्शन करने नहीं जाते थे. एक बार स्वप्न में काशी विश्वनाथ ने सेठ पुरु-ोत्तमदास से प्रसाद मांगा था. काशी विश्वनाथ को प्रसाद देने के लिए सेठ को पहली बार मंदिर में जाते देखकर सभी को बहुत ही आश्चर्य हुआ.

श्री महादेवजी ने कालभैरव को सेठ पुरु-ोत्तमदास के यहां पर पहरा देने के लिए आज्ञा दी थी. कालभैरव सेठ पुरु-ोत्तमदास के वै-णवों के यहां पर सत्संग में जाने पर पहरा देता था.

श्री महाप्रभु जी के द्वारा श्री पुरु-ोत्तमदास के घर में नंदमहोत्सव करवाया गया है.

नंदमहोत्सव के अलौकिक आनन्द का वर्णन करना संभव नहीं है. नंदमहोत्सव में श्री नंदराय जी, यशोदा, वृ-भान जी, ग्वाल, व्रजभक्त साक्षात पधारे थे. नंदमहोत्सव में स्वयं श्री महादेव जी पधारे थे.

बहुत दिनों तक बिराजकर महाप्रभु जी ने पत्रावलंबन ग्रंथ प्रकट कर श्री कृ-ण पुर्ण पुरु-ोत्तम हैं यह स्थापित किया है. तीस श्लोकों में मायावाद का खंडन किया है.

श्री महाप्रभु जी की 28 वी बैठक बी 4/40 हनुमानघाट वाराणसी मोबाइल 9936182535

श्री महाप्रभु जी की बैठक हनुमानघाट पर है. एक शिला पर एक माह तक बिराजकर आपने सन्यास ग्रहण किया है. अन्न जल सब त्याग दिया. उस समय बहिर्मुख ब्राहमण ने पूछा कि सन्यास ग्रहण उपदेश कौन सा लिया? तब आपने सन्यास निर्णय ग्रंथ लिख दिया. यह पढकर निरुत्तर हो गया.

फिर बहुत सारे ब्राहमण मिलकर आये तब अग्नि का तेज प्रकाश देखकर भय के मारे वापस चले गये. अ-ाढ 2 एवं 3 के दिन गंगाजी में जल में कटि तक बिराजे. 40 हाथ के तेज को पूंज आकाश तक दो मूहर्त तक छा गया. तब सबने कहा हमने श्री आचार्य जी को स्वरुप जाना नहीं. आचार्य जी सब के देखते स्वधाम पधारे. यहां पर श्री महाप्रभु जी सदैव साक्षात बिराज रहे हैं.

हरिहर यानी हाजीपुर

श्री महाप्रभुजी वल्लभाचार्य की 29 वी बैठक मगरहटटा चौक हरीहर क्षेत्र श्री शिव कुमार मिश्रा जी मुखिया मोबाइल 9955007128 दूरभा-ा 06224-276224

हरिहर सही नाम है जिसे मुसलमानों के द्वारा बदलकर हाजीपुर कर दिया गया है. हरिहर के विकास करने के उददेश्य से वै-णवों के माध्यम से निरन्तर सहयोग दिया गया है. रमणीय एवं मनोहर क्षेत्र में हाजीपुर में महाप्रभुजी श्री वल्लभाचार्य जी की बैठक श्री गंगाजी तथा गल्लकी नदी के संगम पर भगवानदास जी के निवास में मौजूद है.

भगवानदास जी को महाप्रभु जी ने अपनी पादुकाएं पधरा दी हैं जिसके कारण सदैव भगवानदास जी के घर में महाप्रभु जी बिराज रहे हैं. आसुरव्योम लीला काशी में करने के बाद एक वै-णव के द्वारा श्री महाप्रभु जी के बारे में पूछने पर भगवानदास जी के द्वारा अपने निवास पर वै-णव को महाप्रभु जी के दर्शन करवाने पर वै-णव का संदेह दूर हो गया था.

हाजीपुर महाप्रभुजी की 84 बैठकों में से एक है. यहां पर साक्षात महाप्रभु जी बिराज रहे हैं. श्री महाप्रभुजी के द्वारा 3 बार गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए पृथ्वी की खुले चरणारविंद से परिक्रमा की गयी थी. यहां पर श्री महाप्रभुजी के द्वारा श्रीमद भागवत पारायण

किया गया था. गोवंश का पालन बहुत ही अच्छी तरह से मुखिया जी के परिवार के द्वारा किया जाता है. फलों का सुन्दर बगीचा है.

वै-णवों के द्वारा जीवन में कम से कम एक बार दर्शन करने के लिए आने की इच्छा रहती है. गोवंश के महत्व को समझकर पूरे विश्व से आने वाले वै-णवों के द्वारा उदारतापूर्वक दान दिया जा रहा है.

जनकपुर

श्री महाप्रभु जी की 30 वी बैठक माणेक तलाव जनकपुर श्री चन्दन मुखिया जी मोबाइल 93374102193

भगवानदास के बाग में मानिकतलाव के उपर श्री महाप्रभुजी की बैठक है. केवलराम नागा जो वि-णुस्वामी संप्रदाय के थे के साथ में 500 नागा जनकपुर की यात्रा के लिए आये थे. श्री आचार्य जी को सा-टांग दंडवत प्रणाम कर सेवक करने की विनंती की. तब आपने नाम सुनाये. रामनोमी का दूसरा दिन था इसलिए सेवक ने प्रसाद की मांग की. आचार्य जी ने बासोंदी का डबरा केवलराम नागा को दिया.

500 नागाओं ने भरपेट बासोंदी का प्रसाद लिया था. बासोंदी का प्रसाद फिर भी बच गया था. वै-णव बैरागिन की बची बासोंदी नहीं लेंगे इसलिए मालीन को पिवाई दी. फिर भी बासोंदी बच गयी तो गांव वालों को पिला दी. यह चरित्र माली ने भगवानदास जी को कही. तब भगवानदास जी ने आकर सा-टांग दंडवत प्रणाम किया तथा सेवक बन गये.

भगवानदास जी अपने घर में आचार्य जी को ले गये. 1 साल तक आचार्य जी यहां पर बिराजे थे. श्रीमद भागवत सप्ताह यहां पर आपने भगवानदास के बाग में की थी. यहां पर श्री रामचंद्र जी की बारात उतरी थी तथा यहां पर श्री रामचंद्र जी ने सीता जी के साथ स्नान किया था.

अडेल

श्री महाप्रभु जी की 83 वी बैठक देवरुख त्रिवेणी संगम के सामने डाकधर नैनी जिला इलाहाबाद दूरभा-ा 0532-2666108 मोबाइल 09335134029, 09336500620, पप्पू 09333736202

श्री महाप्रभु जी की बैठक अडेल में है तथा महाप्रभु जी साक्षात बिराज रहे हैं. अडेल श्री वल्लभाचार्य महाप्रभु जी का मुख्य क्षेत्र होने के कारण यहां पर दर्शन करने पूरे विश्व से 3 करोड़ वै-णव आते हैं. श्री महाप्रभुजी के सुपुत्र श्री गोपीनाथ जी का जन्म यहां पर होने के कारण ही इस क्षेत्र का विशे-ा महत्व रहा है.

श्री वल्लभाचार्य जी के द्वारा अपने प्रथम पुत्र के जन्म होने पर ब्राहमणों को उत्तम गोवंश का दान सोने एवं चांदी के पात्रों के साथ में दिया गया था. रमणीय क्षेत्र में भव्य उत्सव मनाया गया था. उत्सव में भाग लेने के लिए देवता भी आये थे.

इस क्षेत्र में आज भी लीला का साक्षात दर्शन एवं अनुभव सात्विक वै-णवों को होता है.

550 सालों पूर्व यह क्षेत्र गोवंश के चरम विकास होने के कारण ही सम्पन्न था. अपरस में रहकर श्री महाप्रभुजी की झारी जी भरने वाले वै-णव दूध पीकर उपवास एक दिन का करते हैं. बाहर से आने वाले वै-णवों के लिए रहने तथा भोजन की उत्तम व्यवस्था की गयी है.

गोमाता के दूध से उत्सव के लिए सुंदर सामग्री तैयार की जाती है. वै-णव गोवंश के लिए उदारता के साथ में धन देते हैं. अडेल में गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए प्रयत्न किये जा रहे है

श्री गुंसाई जी की 18 वी बैठक

श्री गुंसाई जी की बैठक अडेल में है तथा साक्षात श्री गुंसाई जी यहां पर बिराज रहे हैं. यहां पर आपने

बालक्रीडा की है. श्री महादेव जी आपको नित्य खिलौना लेकर खिलाने आते थे तथा सींगीनाद बजाते एवं नृत्य करते थे जिसे देखकर श्री गुंसाई जी बहुत ही प्रसन्न होते थे.

आपके कृपापात्र भगवदीय आपको नित्य खिलाते थे. आप हावभाव कटाक्ष कर रसदान करते थे.

आपकी कृपा कटाक्ष द्वारा आपने सहस्त्रावधि जीवों का अंगीकार किया. आपके अदभुत प्रताप को देखकर आपकी जयजयकार हुई. श्री विठठलनाथ जी ने यहां से गोवंश के विकास करने के लिए वै-णवों को मार्गदर्शन दिया था.

श्री गोकुलनाथजी की 10 वी बैठक

श्री गोकुलनाथजी की बैठक अडेल में है. वर्तमान में भी श्री गोकुलनाथजी वै-णवों को निरन्तर सुख दे रहे हैं. यहां पर आपने श्रीमद भागवत सप्ताह की है.

एक बार जब श्री गुंसाई जी तथा श्री गिरिधर जी सेवा में नहाकर लाड लडा रहे थे तब आप बैठक में बिराज रहे थे. उस समय मायावादी पंडित चर्चा करने के लिए आया था.

आपने चर्चा कर दो धड़ी में उसको निरुत्तर कर दिया. तब वह पंडित आपको सा-टांग दंडवत कर अपने स्थान पर चला गया.

चरनाट

श्री महाप्रभु जी की 84 वी बैठक मुकाम चुनार
मिरजापुर मुखिया जी श्री लालाजी 09336958097

आचार्य श्री ने सबसे पहले यहां पर श्रीमद भागवत सप्ताह की. एक ब्राहमण जो प्रतिदिन वि-णु सहस्त्रनाम पढ़ता था आपके पास आया तथा श्री ठाकोर जी का स्वरुप पधरा गया. बाद में श्री गुंसाई जी का प्राकटय यहां पर हुआ था. श्री महाप्रभु जी की बैठक चरनाट में है तथा यहां पर साक्षात नित्य बिराज रहे हैं.

श्री गुंसाई जी की 17 वी बैठक

चरनाट यानी चुनार श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य जी का प्रमुख केंद्र रहने के कारण ही वै-णवों के लिए आक-र्ण का मुख्य केंद्र है. यहां पर नित्य दिव्य लीला निरन्तर चल रही है इसलिए पूरे विश्व से वै-णव रमणीय वातावरण में अपने आप को पवित्र करने के लिए आते हैं. क्षेत्र की दिव्यता एवं सुंदरता के कारण ही आनन्द का अनुभव होता है.

यहां पर श्री वल्लभाचार्य जी के द्वितीय सुपुत्र श्री विठठलनाथ जी यानी गुंसाई का जन्म बहुत ही रमणीय वातावरण में हुआ है. गुंसाई जी के जन्म के समय में ब्राहमणों को बहुत ही सुंदर गोवंश का दान श्री महाप्रभुजी के द्वारा किया गया था.

बहुत ही सुंदर दिव्य मनोरथ एवं उत्सव का आयोजन किया गया था. नये नये पकवान तथा व्यंजन गोमाता के दूध से तैयार किये गये थे. गुंसाई जी को भगवान श्रीकृ-ण का ही स्वरुप माना गया है. गो के साई का जन्म यहां पर होने के कारण ही गोवंश के विकास करने के लिए कार्य चल रहा है. 550 सालों पूर्व गोवंश का विकास चरम सीमा पर हुआ था.

कोसी

कोसी में कोसी नस्ल के गोवंश संवर्धन का कार्य किया जा रहा है.

बाराबांकी

श्री अशोक कुमार सृजन गोशाला ग्राम गोड़ारी डाकघर पल्हरी बाराबांकी निवास ग्राम दादरा जिला बाराबांकी दूरभा-ा 05248-320097 एवं श्री सुरेश चंद्र वानप्रस्थी ग्राम सफदरगंज जिला बाराबांकी गोवंश संवर्धन कर रहे हैं.

मुरादाबाद

श्रीमती संतो-ा नारंग कान्हा गोसेवा मिलन विहार दिल्ली रोड मुरादाबाद मोबाइल 09412240341 गोवंश संवर्धन कर रही हैं.

रायबरेली

रायबरेली में गायत्री शक्तिपीठ मौजूद है. अखिल विश्व गायत्री परिवार बहुत ही अधिक सक्रिय है. परम पूज्य गुरुदेव के अनुसार कार्य करने के लिए पूरी तरह से सक्रिय हैं.

श्री किस्मतराय शर्मा जी गोपाल गोशाला सेवाश्रम ग्राम सिघौना, अमावा जनपद रायबरेली 229001 निवास ए-33, सेक्टर प्रथम, दूरभा-ानगर रायबरेली मोबाइल 09450064825 वर्तमान में 5 व्यक्तियों के साथ में 29 गोवंश रखकर उनके मूत्र का उपयोग कर 2 प्रकार की घनवटी, हरडे चूर्ण जैसी पंचगव्य दवा बनाकर गोवंश संवर्धन कर रहे हैं. रायबरेली जिले में 13 गोशालाएं पंजीकृत है लेकिन एकमात्र गोपाल गोशाला ही कार्य कर रही है. श्री राजीव दीक्षित जी को 2 बार संबोधन करने के लिए रायबरेली में 6 माह के समय में बुलवा चुके हैं.

रायबरेली में एक मात्र गोशाला चलने के बावजूद गोवंश के लिए जनसहयोग नहीं मिल रहा है. 5 लाख रु. अपना लगाकर गोशाला का निर्माण कर गोशाला चलाने के लिए हर माह लगभग 5 हजार लगाना आवश्यक हो गया है. नयी सरकार के द्वारा वित्तीय सहयोग नहीं मिल रहा है. दवा बनाने का लायसेंस न मिलने के कारण गुणवत्ता के नाम पर दवा बेचने में बहुत ही अधिक परेशानी आ रही है. सरकार के द्वारा गोवंश कटने से बचाकर गोशाला में भेज दिया जाता है. गायत्री शक्तिपीठ लंका में दवा बेचने के लिए दे रहे हैं.

नगलावेल

श्री बंगाली बाबू त्यागी माता भगवती देवी गोशाला नगलावेल बरहन आगरा 283201 में गोवंश संवर्धन का कार्य किया जा रहा है.

आगरा

आगरा में विश्व के आठ आश्चर्य में ताजमहल मौजूद है जिसे देखने के लिए प्रतिदिन बहुत बड़ी संख्या में पर्यटक आते रहते हैं. आगरा में बहुत सारे संगठन बहुत ही अधिक सक्रिय हैं तथा वर्तमान में विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा के बाद में जागृति बढ़ रही है.

विश्व हिंदु परि-ाद

आगरा में गोवंश के संवर्धन करने के लिए विश्व हिंदु परि-ाद पूरी तरह से सक्रिय है. विश्व हिंदु परि-ाद समय समय पर गोवंश रक्षा तथा संवर्धन करने के लिए बाहर से विद्वानों को आंमत्रिक कर रहा है जिसके कारण वे आकर प्रेरणा दे रहे हैं. रा-ट्रीय स्वयं सेवक संघ, बजरंग दल के माध्यम से आक्रामक तरीके से कार्य किया जा रहा है.

अखिल विश्व गायत्री परिवार

अखिल विश्व गायत्री परिवार के द्वारा गोवंश के संपूर्ण विकास करने के लिए आगरा में गायत्री शक्तिपीठ में परिजन तैयार होकर प्रज्ञापीठों तथा गायत्री ज्ञान मंदिर में दीपयज्ञ एवं नियमित हवन करके सक्रियता के साथ में कार्य कर रही है.

घर घर में देवत्व लाने के लिए साहित्य एवं सीडी तथा डीवीडी के माध्यम से परम पूज्य श्री गुरु देव के विचार योजनाबद्ध तरीके से पहुंचाकर सदबुद्धि पर बल दिया गया है. 2011 तक लक्ष्य रखकर आवश्यक तैयारियां की गयी हैं.

नस्ल सुधार करने के लिए विशे-ा अभियान चल रहा है. किसानों को जैविक खेती करने के लिए प्रेरित किया गया है.

गोवंश के वैज्ञानिक महत्व को जन जन में लोकप्रिय करने के लिए ज्ञानरथ चल रहे हैं. निःशुल्क पंचगव्य तैयार करने के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है. गोमूत्र के माध्यम से असाध्य रोगों का उपचार किया जा रहा है.

स्वदेशी गो सेवा संस्थान

श्री पुरु-ोत्तम जी अग्रवाल मुख्य संचालक स्वदेशी गो सेवा संस्थान 54 ए, संजय पेलेस आगरा के द्वारा गोवंश संवर्धन करने के लिए 2000 से कार्य दिल्ली, मथुरा, आगरा में किया जा रहा है. गो कथा, अन्य सार्वजनिक कार्यक्रमों में स्टोल लगाकर जागृति उत्पन्न की जा रही है.

गोबर से टाइल्स

गोबर से टाइल्स बनाने का कारखाना 25 लाख की लागत लगाकर प्रारम्भ किया गया है.

जैविक खाद

जैविक खाद बहुत बड़े स्तर पर निर्माण किया जाता है.

समाचार पत्र

3 लाख समाचार पत्र 8 पन्नों के गोवंश के बारे में वैज्ञानिक जानकारी प्रकाशित करवाकर निःशुल्क वितरित किये गये हैं.

पंचगव्य चिकित्सा केंद्र

हरिपर्वत चौराहा के पास में पंचगव्य चिकित्सा केंद्र खोलकर उसमें पंचगव्य चिकित्सक श्री सुनील जी अग्रवाल के द्वारा सुबह 9 बजे से रात्रि 9 बजे तक असाध्य रोगों के मरीजों को पूरी तरह से ठीक करने के लिए गहन पूछताछ की जाती है. पंचगव्य दवाएं नियमित तैयार कर उसकी बिक्री बहुत बड़े स्तर पर की जाती है.

अग्निहोत्र

अग्निहोत्र प्रतिदिन सुबह एवं संध्या के समय किया जाता है. 800 रु. किलो गोमाता का बिलौने का घी बहुत बड़ी मात्रा में बेचा जाता है.

श्री आसाराम जी बापू के गुरु की एक गोशाला भी मौजूद है जिसमें से श्री आसाराम जी 1 रु. लीटर के मूल्य पर गोमूत्र बहुत बड़ी मात्रा में खरीद रहे हैं.

आंवलखेड़ा

आंवलखेड़ा परम पूज्य गुरुदेव के कारण ही बहुत महत्वपूर्ण तीर्थ है. आंवलखेड़ा में पूरे विश्व से परिजन एक बार आकर उदारता के साथ में तन, मन, धन से सहयोग कर अपना जीवन सफल कर रहे हैं.

आंवलखेड़ा में अखिल विश्व गायत्री परिवार के द्वारा गोवंश के विकास करने के लिए बहुत ही लंबे समय से समर्पित कार्यकर्ताओं के द्वारा संगठित होकर प्रशिक्षण देने के लिए कार्य किया जा रहा है.

विश्व में 84 देशों में अखिल विश्व गायत्री परिवार गोवंश के लिए जबरदस्त अभियान चला रहा है. पूरे भारत से परिजन पंचगव्य दवाओं को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं. गोपालन के बारे में बहुत ही विस्तार से जानकारी मिलने के कारण गोवंश पालन करने के लिए प्रेरणा मिल रही है. जैविक खेती, गोबर गैस, सी. एन.जी. तैयार करने एवं गोवंश की बीमारियां एवं उनके उपचार करने के लिए मार्गदर्शन मिल रहा हे. अधिक जानकारी के लिए आप 0562-2752022, 2752024 संपर्क कर सकते हैं.

जिला गोरखपुर

प्रेमानंद जी मोबाइल 9889381419, संपादक युगांतकारी, कृ-ण कोम्प्लेक्स, शिवपुर सहवाजगंज, डाकधर जंगलशालिग्राम, जिला गोरखपुर उ.प्र. राखी के पावन पर्व पर गाय की ओर से समर्पित कामधेनु सेवकों को रक्षा भेजकर सदस्यता फार्म भरवाकर संगठित परिणाम लाने के लिए प्रयत्नशील हैं.

गोरखपुर

श्री गोरखनाथ गोशाला

यह गोशाला बहुत ही प्राचीन है तथा गोरखनाथ मंदिर के द्वारा इस गोशाला का संचालन किया जाता है. आज भी आदर्श गोशाला के रुप में इसकी चर्चा की जाती है. गायों के दूध का उपयोग साधु, संतों, आगतुकों के लिए किया जाता है. गोशाला में देशी गायें ही रखी जाती हैं. गोशाला का उददेश्य भी गोवंश संवर्धन, संरक्षण करना है. गायों के स्वास्थय का परीक्षण समय समय पर विशे-ज्ञों के द्वारा होता है. गायों के रहने के लिए साफ एवं हवादार हर मौसम में अनुकूल बनाया गया है. गायों के पीने के लिए साफ जल एवं पो-क आहार मिल रहा है. 125 गोवंश रखा गया है. गोवंश की सेवा करने के लिए 25 से 30 व्यक्ति रखे गये हैं. गोवंश की सेवा बहुत ही प्रेम से की जाती है.

गोरखपुर विश्व में आध्यात्मिक उत्थान करने के कारण बहुत ही प्रसिद्ध है. गोरखपुर में वर्तमान में गोवंश के विकास करने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार, विश्व हिंदु परि-द जैसी अनेकों संस्थायें कार्य कर रही हैं.

आरोग्य मंदिर

स्वर्गीय श्री विठठलदास जी मोदी प्राकृतिक चिकित्सक एवं विपश्यना के जानकार के द्वारा आरोग्य मंदिर में गोमाता के दूध से बीमार व्यक्तियों के असाध्य रोगों को पूरी तरह से दूर करने के लिए काया कल्प 70 सालों से करवाया गया है. संपूर्ण कायाकल्प विज्ञान के लिए बहुत ही आश्चर्य की चीज है. काया का नवीनीकरण प्राचीन समय से किया गया है. काया के नवीनीकरण करने में दूध एवं छाछ का प्रयोग परिणाम दे रहा है. प्राकृतिक चिकित्सा का केंद्र श्री विठठलदास जी मोदी के द्वारा गोरखपुर में आरोग्य मंदिर के नाम से प्रारम्भ किया गया था.

दुग्ध कल्प करने के पूर्व अधिकतम 57 दिनों का उपवास स्वयं श्री विठठलदास मोदी जी के द्वारा किया गया है. 57 दिनों के उपवास के बाद में दुग्ध कल्प के सबसे अच्छे परिणाम मिले थे. श्री विठठलदास मोदी जी के द्वारा दुग्ध कल्प करने के कारण बहुत ही लंबी आयु प्राप्त हुई

थी. दुग्ध कल्प करने के कारण नयी काया मिलने के कारण विश्व में सबसे अधिक लोकप्रिय है.

गोमाता के दूध में मौजूद 5300 रसायनों के मानव के अंदर होने वाले प्रभाव का अध्ययन आरोग्य मंदिर में वैज्ञानिक ढंग से किया गया है. विश्व के अनेकों वैज्ञानिकों के द्वारा आरोग्य मंदिर में रुककर दुग्ध कल्प का वैज्ञानिक संपूर्ण अध्ययन कर आश्चर्य व्यक्त किया गया था. आरोग्य मासिक पत्रिका में पूरे विश्व के जिज्ञासुओं के द्वारा प्रश्नों के उत्तर दिये गये हैं.

दुग्ध कल्प वर्तमान में फिल्मी सितारे भी अपनी आयु को 10 साल कम करने के लिए कर रहे हैं. आरोग्य मंदिर में चमत्कार के कारण ही दुग्ध कल्प करवाने के लिए सभी लालायित रहते हैं.

पूरे भारत के प्राकृतिक चिकित्सक वर्तमान में असाध्य रोगों को दूर करने के लिए दुग्ध कल्प करवाया जा रहा है. अपने अनुभव के आधार पर एक पुस्तक दुग्ध कल्प 64 पन्नों की पुस्तक प्रकाशित की गयी है. विश्व में दुग्ध कल्प पर वैज्ञानिक अध्ययन कर उसके क्रांतिकारी परिणाम विकसित देशों में देखे गये हैं. विश्व में दुध कल्प को डाक्टर विठठलदास जी मोदी के द्वारा पहुंचाया गया है.

उनके सुपुत्र डाक्टर श्री विमल मोदी जी के द्वारा श्री विठठलदास जी की परम्परा को चलाते हुए वर्तमान में दुग्ध कल्प करवाया जा रहा है. गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए दुग्ध कल्प सबसे महत्वपूर्ण है. दुग्ध कल्प में सबसे अधिक दूध की आवश्यकता रहती है.

गीताप्रेस

गीताप्रेस के द्वारा गोवंश के संरक्षण एवं संवर्धन करने के लिए 84 सालों से बहुत ही संगठित अभियान चलाया गया है. धर्म के प्रति संपूर्ण जागरुकता उत्पन्न करने के लिए स्वर्गीय श्री हनुमान प्रसाद जी पोददार के द्वारा गीताप्रेस में सस्ता साहित्य लोगों को उपलब्ध करवाया गया है.

कल्याण मासिक पत्रिका का प्रकाशन कर गोवंश के प्रति भावना उत्पन्न करने के लिए विद्वान लेखकों के द्वारा हर माह अनुभव प्रकाशित करने के कारण गोअंक प्रकाशित करने का विचार उत्पन्न हुआ है.

हर साल विशे-ांक के रुप में एक ग्रंथ निःशुल्क देने का कार्य प्रारम्भ किया गया था. मात्र 5 रु. में विशे-ांक मिलने के कारण ही पाठकों की संख्या में वृद्धि हुई.

लगातार अनुसंधान के बाद में पूरे विश्व से विद्वानों के लेख आमंत्रित कर अंग्रेजों के कानूनों को ध्यान में रखकर पहली बार गो अंक 1945 में 760 पन्ने मात्र 4 रु. मूल्य पर विशे-ांक के रुप में तथा लगातार मांग रहने के कारण ही उसका द्वितीय संस्करण नवम्बर 2007 में 120 रु. में प्रकाशित किया गया था.

गो अंक के प्रकाशन होने के कारण ही आम आदमी सरकार के गोवंश विरोधी नीतियों के बारे में जानकार धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज के आहवाहन पर 7 नवम्बर 1966 में गोवंश हत्या बंदी कानून बनाने के लिए 20 लाख लोगों के द्वारा संसद के सामने आंदोलन किया था.

1995 में गो अंक के समान ही ग्रंथ के प्रकाशन की प्रबल मांग के कारण 50 सालों के बाद में गोसेवा अंक मात्र 65 रु. में 470 पन्ने उसके बाद उसका द्वितीय एवं तृतीय संस्करण बहुत ही कम मूल्य पर प्रकाशन की गयी है.

गो सेवा अंक के प्रकाशन के कारण गोवंश प्रेमियों के मन में नयी प्रेरणा उत्पन्न हुई है. साथ में गोवंश के संवर्धन करने के लिए बहुत ही मेहनत कर गो सेवा के चमत्कार को बहुत ही कम मूल्य पर प्रकाशित किया गया था.

गो अंक एवं गो सेवा अंक के कारण गो प्रेमी लोगों में नयी चेतना का संचार हुआ था. सरकार पर बहुत ही अधिक दबाव बन गया था. गोवंश पर पोस्टर बहुत ही कम मूल्य पर उपलबध है.

गोसेवा के चमत्कार के साथ में बच्चों के लिए रंगीन पुस्तकें भी प्रकाशित की गयी हैं. गोवंश से संबंधित बहुत सारी सामग्री भी बहुत ही कम मूल्य पर प्रकाशित की गयी है.

गोवंश से जुड़ा हुआ बहुत सारा प्रमाणिक साहित्य भी कम मूल्य पर प्रकाशित किया गया है. कल्याण मासिक पत्रिका के नियमित प्रकाशन के साथ पूरे भारत में गोवंश के सम्मान करने के लिए ठोस उदाहरण देकर कार्य किया जा रहा है.

गोविन्द गोशाला गीताप्रेस गोरखपुर दूरभा-ा 0551-2333030, 2334721 के द्वारा गोवंश पर गहन अनुसंधान बहुत ही लंबे समय से कर सीएनजी गैस से वाहन चलाने के कार्य को प्रहलाद ब्रहमचारी जी के द्वारा किया गया है. श्री प्रहलाद ब्रहमचारी जी की पहल के कारण ही देश में सीएनजी से वाहन चलाने के लिए लहर उत्पन्न हुई है.

गोवंश के नस्ल सुधार का कार्य करने के लिए नंदी तैयार किया जाता है. वर्तमान में गीताप्रेस के सभी वितरकों को गोमूत्र अर्क बहुत ही कम मूल्य पर वितरित किया जाता है.

असाध्य रोगों के उपचार में अर्क के बहुत ही अच्छे परिणाम मिलने के कारण ही अर्क की बहुत ही अधिक मांग भी है. गोमूत्र अर्क जड़ीबूटी खाने वाली काली बछियाओं से ऋ-िाके-ा उत्तरांचल में बहुत बड़ी मात्रा में तैयार किया जाता है.

इलाहाबाद

श्री अशोक तिवारी 9410201883, 9455004933, श्री मनोज श्रीवास्तव जी 9839148501 विश्व हिंदू परि-ाद कार्यालय केसर भवन, 14 पन्नालाल ममार्ग, राज नर्सिंग होम के निकट, इलाहाबाद 211002 में कुंभ मेले में आने वाले संतो के लिए आवास तथा भोजन का आयोजन किया गया है. कुंभ का मुख्य स्नान मौनी अमावस्या 10 फरवरी को है.

7 फरवरी 2013 गोरक्षा पर पूर्ण कानून बनाने के लिए तथा सरकार के द्वारा हिंदू संस्कृति को समाप्त करने के लिए जो नीतियां तैयार की गयी हैं उसे पूरी तरह से बंद करने के लिए हिंदू जनता को जागृत करने के लिए सन्त महा सम्मेलन मेला क्षेत्र में दोपहर 3 बजे से संध्या 7 बजे तक होगा.

इलाहाबाद धार्मिक एवं पवित्र नगरी है तथा कुंभ के लगातार आयोजन होने के कारण ही गोवंश के लिए लोगों को प्रेरणा मिल रही है. इलाहाबाद में दूध पीकर ही तप करने वाले बहुत से संत निवास करते हैं.

ईसा से 300 साल पूर्व इलाहाबाद से 37 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में जनपद वात्सा में यमुना नदी के पास में कौशम्बी राजधानी में सेना के केंद्र में स्थित वराहस्पति मित्र के द्वारा तांबे के सिक्के बायें ओर मुंह किए हुए बैल का अंकन किया गया है. सिक्कों का गहराई के साथ अध्ययन करने पर बहुत सारी बातें पता चल जाती हैं. राजा स्वयं गोवंश के बहुत अच्छे जानकार थे.

इलाहाबाद गोमाता के दूध के लिए प्रमुख केंद्र है. इलाहाबाद में गोपालन सुंदर तरीके से किया जा रहा है. इलाहाबाद में अखिल विश्व गायत्री परिवार गोवंश के लिए सबसे अधिक सक्रिय है. रा-ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वारा संगठित स्तर पर कार्य चल रहा है. इलाहाबाद में गोवंश संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए बहुत ही संगठित स्तर पर कार्य चल रहा है.

आजादी बचाओ आंदोलन

श्री बनवारीलाल जी शर्मा संस्थापक आजादी बचाओ आंदोलन 1989 से इलाहाबाद में गैर सरकारी संगठन प्रारम्भ कर विदेशी बहुरा-ट्रीय कंपनियों को भारत से बाहर करने के लिए चलाया जा रहा है 1 करोड़ कार्यकर्ता पूरे भारत में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं. गांव गांव में नियमित बैठक कर किसानों को जागृत किया जा रहा है. किसान सम्मेलनों में भी आत्महत्या रोकने के लिए प्रयत्न जारी है.

नई आजादी उदघो-ा मासिक पत्रिका हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती में प्रकाशित की जा रही है. दक्षिण भारत एवं पश्चिम बंगाल के लोगों के लिए अंग्रेजी भा-ाा सरल है. गुजरात में गुजराती ही सरल है.

भारतीय गोवंश के संरक्षण एवं संवर्धन करने के लिए संगठित प्रयत्न किये गये हैं. गोचर की भूमि को सुरक्षित रखने के लिए पूरे भारत में बहुत ही जबरदस्त आंदोलन जारी है. भारत में वर्तमान में गांवों में गोचर की भूमि पहले की तुलना में नाम मात्र की बची है. गोचर भूमि पर कब्जा करने के लिए अंग्रेजों का बनाया हुआ कानून भूमि अधिग्रहण कानून 1884 को बदलना बहुत ही आवश्यक है.

गुजरात में श्री वेलजी भाई देसाई के द्वारा नई आजादी उदघो-ा का प्रकाशन किया जा रहा है.

आजादी बचाओ आंदोलन के द्वारा ओडियो कैसेटें 48 घंटों के प्रवचन की तैयार की गयी है जो वर्तमान में ओडियो डीवीडी में उपलब्ध है.

साथियों की चिठठी

साथियों की चिठठी 15 दिन में 4 पन्ने की प्रकाशित की जा रही है. साथियों की चिठठी 25000 प्रकाशित की जा रही है जो 1 लाख तक पहुंच जायेगी. साथियों की चिठठी से आजादी बचाओ आंदोलन की हर गतिविधि की नियमित सूचना समय पर मिल रही है. 20 रु. साल का सेवा सहयोग लिया जा रहा है.

आजादी बचाओ आंदोलन के द्वारा डायरी प्रकाशित कर बहुत सारी उपयोगी जानकारी मात्र 75 रु. में पहली बार दी गयी है. ओडियो एवं वीडियो सीडी भी तैयार की गयी हैं. विद्यार्थियों, व्यापारियों, उद्योगपतियों, सरकारी अफसरों, नेताओं, किसानों को लेकर जबरदस्त आंदोलन चलाया जा रहा है जिसमें मौन धरना, आमरण अनशन, सत्याग्रह, पदयात्रा, रोड शो आदि बहुत सारे प्रयत्न किये जा रहे हैं. विदेशी बहुरा-ट्रीय कंपनियों के खिलाफ ठोस प्रमाण एकत्र कर साहित्य प्रकाशित कर जनसाधारण का ध्यान आकर्-ित करने का प्रयत्न किया गया है. 19 सालों में 19 रा-ट्रीय एवं क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित कर लोगों को जोड़ने का प्रयत्न किया गया है. पूरे भारत में मानव श्रंखला 2 बार आयोजित कर गोवंश के संवर्धन करने के लिए विदेशी बहुरा-ट्रीय कंपनियों के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है.

प्रयाग

प्रयाग में गोवंश संवर्धन का कार्य बहुत ही उत्साह के साथ में किया जा रहा है.

झूसी

डा. आर सी गुप्ता एम. डी. हडडी प्रयाग सेवा निवृत हडडी के सर्जन के द्वारा गोवंश संवर्धन का कार्य झूसी में किया जा रहा है.

टंड़िया

श्री प्रकाशसिंह जी के पिताजी भी किसानों के लिए बीज का कार्य कर रहे थे. श्री प्रकाश सिंह जी काफी समय से बीज का कार्य कर रहे थे. 1998 से श्री प्रकाशसिंह जी रघुवंशी बाबा जी के नाम से किसानों में प्रसिद्ध हैं रघुवंशी कृ-ि शोध समिति ग्राम टंडिया डाकघर जक्खिनी जिला वाराणसी 221305 मोबाइल 09415643838, 09956941993, 0542 2107011 भारतीय गोवंश के संपूर्ण संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए भारतीय नस्ल को लुप्त होने से बचाने के लिए 13 सालों से बछड़े एवं सांढ़ किसानों को वितरित कर रहे है. वर्तमान समय में गंगातीरी नस्ल के बछड़ों को कटने से बचाकर सुरक्षित रख रहे हैं.

श्री प्रकाशसिंह जी किसानों को पूरी तरह से आत्म निर्भर करने के लिए बीज बनाने के कार्य पर पूरा जोर दे रहे हैं. रथ बीजदान के लिए तैयार किया गया है. कानपुर में भी बीजदान के लिए कार्यालय खोला गया है. बीजदान के अभियान से प्रभावित होकर काशी विश्वविद्यालय भी बीज दान करने के लिए नीतियां तैयार कर चुकी है.

गेंहू का बीज किसानों को स्वयं तैयार करना है. गेंहू का बीज तैयार कर 30 रु. किलो तक बेच रहा है. गेहूं का दाना किसानों को पंतनगर से ही आ रहा है. पंतनगर वर्तमान में बहुत ही मंहगा दाना देता है. पंतनगर का दाना गोबर से नहीं होता है. संस्कारित नहीं होने के कारण कम आवक है. वर्तमान में 2000 करोड़ के बीज भारत सरकार के द्वारा आयात किये गये हैं. 2000 करोड़ यदि भारत सरकार आयात करने के बजाय देशी बीज तैयार करने में खर्च करे तो किसान सम्पन्न बन सकता है.

महारा-ट्र में अरहर का बीज तैयार कर किसान 1000 रु. किलो के मूल्य पर बेच रहा है. श्री प्रकाशसिंह जी बीज तैयार कर बेच कर 20 प्रतिशत लाभ कमा रहे हैं. वेदविज्ञान अनुसंधान संस्था अक्कलकोट में भी बीज दे चुके हैं. माधव आश्रम बैरागढ़ सिहोर मार्ग भोपाल मध्यप्रदेश में गेंहूं एवं अरहर के बीज दिये गये हैं. बीज के परिणाम देखकर माधव आश्रम के द्वारा 24 अप्रेल से 29 अप्रेल तक किसानों के उत्थान करने के लिए जैविक अग्निहोत्र कृ-ि सम्मेलन आयोजन करने जा रहे हैं जिसमें पूरे भारत के किसान भाग लेंगे.

भारत के जागरुक लाखों किसानों के साथ में मिलकर जैविक खेती करने के लिए कई सालों से बहुत ही जबरदस्त संघर्-ा कर रहे हैं. इंडिया टू डे में बीजदान के अभियान के बारे में प्रकाशित किया गया था. आसाराम जी के द्वारा इंडिया टू डे में पढ़कर मिलने के लिए बुलवाया गया था. विश्व में होने वाले प्रगतिशील किसानों के स्लोफूड द्वारा आयोजित अंतरा-ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने श्री रघुवंशी जी पिछले साल में इटली गये थे. गोवंश के गोबर का उपयोग कर जैविक खादें तैयार कर नयी नस्लें खेती करने के लिए विकसित की गयी हैं. गेंहू की 80, धान की 25, अरहर की 10, सरसों, भिंडी, पपीता, मूंग, मटर, बैंगन की आश्चर्यजनक प्रजातियां विकसित की गयी हैं. पूरे भारत के 45 करोड़ किसानों को जागरुक करने के लिए समाचार पत्रों में प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से अभियान चलाया जा रहा है.

किसानों के लिए विडियो सीडी तथा डीवीडी भी तैयार की गयी है जिसमें किसानों को संपूर्ण मार्गदर्शन दिया गया है. विशाल किसान सम्मेलन में किसानों को आत्महत्या से बचाने के लिए प्रयत्न जारी हैं.

15 फरवरी से 15 मार्च तक विशे-ा प्रदर्शनी का आयोजन किसानों के लिए किया जा रहा है. उनके बीजदान महादान के असाधारण कार्य के कारण ही डा. एपीजे कलाम रा-ट्रपति के द्वारा सम्मानित किया गया है. श्रीमती प्रतिभा देवी पाटिल जी रा-ट्रपति भारत सरकार के द्वारा 18 नवम्बर 2009 को रा-ट्रीय पुरुस्कार से सम्मानित किया गया है. 14 मार्च 2010 को रा-ट्रपति भवन में आमंत्रित किया गया था.

पूरे भारत में निःशुल्क बीज 25 लाख किसानों को उनके खेतों में देकर रघुवंशी बीज विद्यापीठ समिति अपनी खेती अपना बीज, बीजदान महादान का नारा लगाकर विदेशी कंपनियों के खतरनाक कार्य को पूरी तरह से बंद करने में सफल हैं. उनके कार्य को देखकर ही उनके साथ आर्ट आफ लिविंग के श्री रविशंकर जी, हिंद स्वराज अभियान के श्री राजीव जी दीक्षित एवं श्री महेन्द्र सिंह जी टिकैत तथा अन्य किसान नेता हैं.

किसानों के अंदर ही गोवंश के लिए सबसे अधिक भावना है तथा किसान ही गोवंश के लिए अपने खेतों में अनुसंधान कर अग्निहोत्र के माध्यम से जैविक कृ-ि कर अच्छे आहार को तैयार कर कार्य कर उसे सुरक्षित रखने में सफल भी हैं.

बीएचयू

काशी प्राचीन समय से ही हिंदू संस्कृति के लिए जाना जाता है. भगवान शिव की नगरी काशी भारत का गौरव है. काशी से प्राचीन ग्रंथों का फिर से प्रकाशन किया गया है. बनारस यानी वाराणसी यानी काशी विदवानों की नगरी है. हर वि-ाय के पंडित यहां पर बसे हैं. काशी में विस्तार से गंभीर चर्चा करने विदवान आते हैं.

श्री मदन मोहन मालवीया जी ने पंडित श्री राम जी शर्मा को काशी में ही दीक्षा दी थी. श्री मदनमोहन मालवीया जी ने विश्व में परिवर्तन करने श्री राम शर्मा को शि-य बनाया था.

विश्व में क्रांति करने बीएचयू की स्थापना बहुत बडे भाग में की है. विश्व से समय समय पर विशे-ाज्ञ आंमत्रित कर पर्यावरण आदि वि-ायों पर कोन्फ्रेन्स करवाये गये हैं.

बनारस में प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन करने तथा पंचगव्य महो-ाधियों से असाध्य रोगों के उपचार करने की थी.

दूर दूर से रोगी बहुत ही आशा के साथ में बनारस में उपचार करवाने आते हैं. रोगियों की कतार बीएचयू के डाक्टरों के पास में सुबह से रहती है. आयुर्वेद के विदवान असाध्य रोगों का उपचार पंचगव्य से करते हैं. पंचगव्य महो-ाधियों के चमत्कार के कारण विश्व में बीएचयू का नाम है.

आधुनिक विज्ञान से असाध्य रोगों के उपचार करने रोगी को वार्ड में आवश्यकता पडने पर भरती कर दिया गया है.

श्री मदन मोहन मालवीया जी के द्वारा गोवंश के संपूर्ण विकास करने के लिए काशी विश्वविद्यालय की नीव रखी है. यहां से नयी नयी शोध विश्व में स्थापित हुई हैं. आधुनिक अनुसंधान करने अपार धन निवेश किया गया है.

बनारस में अशुद्ध दूध का उत्पादन बहुत बडी मात्रा में होने के कारण दूध दही छाछ पनीर मिठाई एवं घी की बहुत ही गंभीर समस्या है. भैंस का दूध 80 रु. तक बनारस में गर्मी में विशे-ा मांग के समय में बिक रहा है. कुछ समय बाद में 200 रु. तक दूध बिक सकता है.

वर्तमान में बहुत बडी डेयरी दूध के उत्पादन करने विकसित की गयी है. डेयरी के दूध की अपनी पहचान है. कम कीमत पर सही दूध दिया गया है. डेयरी में भैंस गाय वर्णसंकर गाय अधिक दूध के उत्पादन करने विकसित किये गये हैं. उनको भरपेट नियमित हरी घांस देने बहुत बडे चारागाह विकसित किये गये हैं. डेयरी विभाग पर बहुत अधिक धन व्यय किया गया है. पंचगव्य महो-ाधियां बीएचयू में बहुत अधिक मांग के साथ में बिक रही हैं.

श्री मदनमोहन मालवीया जी ने अपना पूरा जीवन ही गोवंश के विकास करने के लिए लगा दिया है. वर्तमान समय में काशी विश्वविद्यालय का नाम पूरे विश्व में प्रसिद्ध है. असाध्य रोगों का उपचार करने के लिए आयुर्वेद विभाग की नीव रखी गयी है. जैविक कृ-ि करने के लिए कृ-ि विभाग में कार्य चल रहा है. देशी नस्ल के गोवंश के विकास करने के लिए अनुसंधान किये गये हैं.

लंका

बनारस का एक मात्र गायत्री शक्तिपीठ नगवा लंका के द्वारा विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा के समय में गोवंश संवर्धन करने के लिए निरन्तर जबरदस्त अभियान चलाया गया है. गायत्री शक्तिपीठ के पास में जोनल कार्यालय मौजूद है. बाहर से आने वाले परिजनों के रुकने तथा भोजन की अच्छी व्यवस्था है. नियमित सेवा देने वाले परिजनों की संख्या 5 है. प्रथम मंझिल पर विद्वानों के द्वारा युवाओं का मार्गदर्शन किया जाता है. 150 युवा जुलाई से फरवरी तक सक्रिय रहकर कार्य कर रहे है.

श्री हरिशंकर जी मौर्य अखिल विश्व गायत्री परिवार के उर्जावान कार्यकर्ता हैं.

डा. श्री सुरेश पांडे जी 58 साल आयु संस्कृत में विशे-ा योग्यता प्राचार्य गायत्री शक्तिपीठ 12, शिवपुरी कोलोनी, नगवा लंका वाराणसी 221005 दूरभा-ा 0542–2367106 रात्रि 8 से 9 बजे तक मार्गदर्शन मिल सकता है. गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए वर्तमान में सरकार के द्वारा वित्तीय सहायता लेकर विभिन्न पहलुओं पर बहुत ही गहराई से कार्य करने के लिए प्रेरणा दे रहे हैं.

श्री गणेश जी मौर्य अखिल विश्व गायत्री परिवार चिलबिला बड़ागांव मोबाइल 9721403994 अभी तक 100 पेड़ लगाकर लोगों को अदभुत प्रेरणा दे रहे हैं.

श्री वृजनाथ सिंह ग्राम मिटकुरी जिला वाराणसी मोबाइल 9452917017 अखिल विश्व गायत्री परिवार के समर्पित कार्यकर्ता हैं.

डा. रोहित गुप्ता जी ट्रस्टी के द्वारा सक्रियता के साथ में कार्य किया जा रहा है. रायबरेली से गोपाल गोशाला से पंचगव्य दवाएं खरीदकर विक्रय की जा रही है. अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज के प्रतिनिधि समय समय पर आकर प्रशिक्षण दे रहे हैं. गायत्री प्रज्ञापीठों, गायत्री ज्ञान मंदिरों एवं महिला प्रको-ठ में महिलाओं के द्वारा घर घर में गोवंश के महत्व को पूरी तरह से भरने के लिए दीप यज्ञ आदि के माध्यम से बहुत ही मेहनत की जा रही है. गांव गांव में किसानों के बीच में गोवंश पालन की लहर उत्पन्न करने के लिए साहित्य एवं सीडी वितरण चल रहा है. गोवंश के जानकार को बुलवाकर उनका संबोधन किया जाता है.

आराजीबाग

राजकीय पशुपालन तथा कृषि फार्म आराजीबाग में गंगातीरी नस्ल का संवर्धन किया जा रहा है.

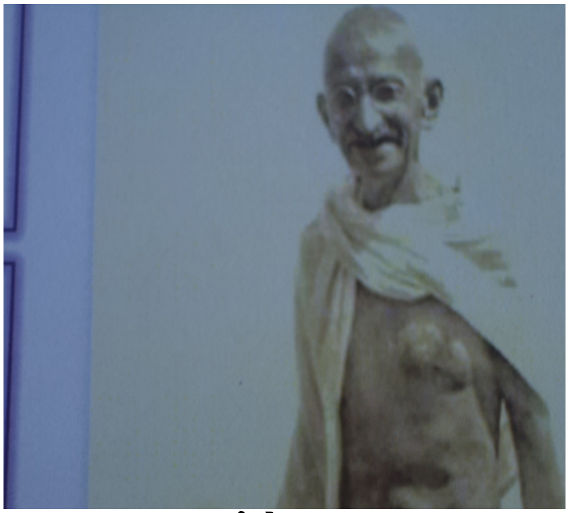

सर्व सेवा संघ

सर्व सेवा संघ राजघाट वाराणसी भारत में गोवंश संवर्धन करने के लिए गांधीवादी विचारधारा के लोगों का मुख्य केंद्र है तथा पूरे भारत में गोवंश संवर्धन करने के लिए आंदोलन बहुत ही संतुलित चल रहा है. वाचनालय, ग्रंथालय, प्रकाशन केंद्र चलाकर गोवंश संवर्धन करने के लिए गांधीवादी विचारधारा के लोगों के द्वारा बहुत ही लंबे समय से कार्य किया जा रहा है.

सुरभि शोध संस्थान

श्री सूर्यकांत जी झालान कानूबाबू सुरभि शोध संस्थान रविन्द्रपुरी वाराणसी में 65,000 गोवंश का संवर्धन एवं संरक्षण आदिवासियों को गोवंश देकर एवं उसके बदले में हर माह उनके निवास पर जा कर दूध एकत्र कर दूध से दही जमाकर बिलौने का मक्खन निकालकर घी तैयार किया जा रहा है. विश्व गो सम्मेलन एवं विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा जैसे कार्यक्रम में सबसे सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं. गोवंश को हर निवास पर सम्मानपूर्वक रखने के लिए सरकार पर भारी दबाव भी तैयार कर रहे हैं.

पांच गोशालाओं में गोवंश की सेवाएं बहुत ही लंबे समय से समर्पित की जा रही हैं. दूध से पेड़े बहुत समय से तैयार किये जा रहे हैं. छाछ गरीब लोगों को निःशुल्क वितरित की जा रही है. हर साल गोवंश का महत्व बताने के लिए बहुत ही सुंदर स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है. 6 माह तक गोवंश के वैज्ञानिक महत्व को बताने के लिए पूरे भारत के समर्पित लोगों को निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जा रहा है. गोपा-टमी के दिन 2 लाख लोगों को एकत्रित कर बहुत ही उत्साह के साथ गोवंश का पूजन कर उनका सम्मान किया जाता है.

सेवापुरी

गायत्री शकितपीठ के माध्यम से क्षेत्रों में गोवंश के संवर्धन करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से लंबे समय से कार्य किया जा रहा है. किसानों को पूरी तरह से जगाने के लिए मुहिम चलायी गयी है. सेवापुरी बहुत ही जाग्रत एवं सक्रिय क्षेत्र है.

सेवापुरी में 2011 से 100 सालों के लिए कार्य योजना तैयार की गयी है. पूरी तरह से समर्पित अनेकों कार्यकर्ताओं के द्वारा सेवापुरी में अखिल विश्व गायत्री परिवार के द्वारा प्रज्ञा पुराण 5 दिनों तक आयोजित कर संगठित स्तर पर गोवंश संवर्धन कर रहे हैं.

मिरजापुर

अखिल विश्व गायत्री परिवार के द्वारा मिरजापुर में प्रज्ञा पुराण 5 दिनों के तथा दीप यज्ञ जैसे कार्यक्रम नगर के बीचो बीच में 300 बड़े स्पीकर लगाकर भव्य आयोजित कर गोवंश संवर्धन का अभियान चलाया जा रहा है. केंद्रीय व्यवस्था के कारण ही परिजन अपने उददेश्य में पूरी तरह से सफल हैं. सम्पन्नता बहुत ही अच्छी होने के कारण ही परिजन संगठित होकर हर घर में देवत्व लाने के लिए प्रयत्नशील हैं. 2011 से होने वाले परिवर्तनों के लिए तैयारियां की गयी हैं.

मिरजापुर में गोवंश की भावना चरम सीमा पर है इसलिए परिजनों के द्वारा बहुत ही उत्साह के साथ भाग लिया जाता है. मुसलमानों की संख्या बहुत ही अधिक होने के कारण तार काटने जैसे विरोध का सामना भी करना पड़ रहा है.

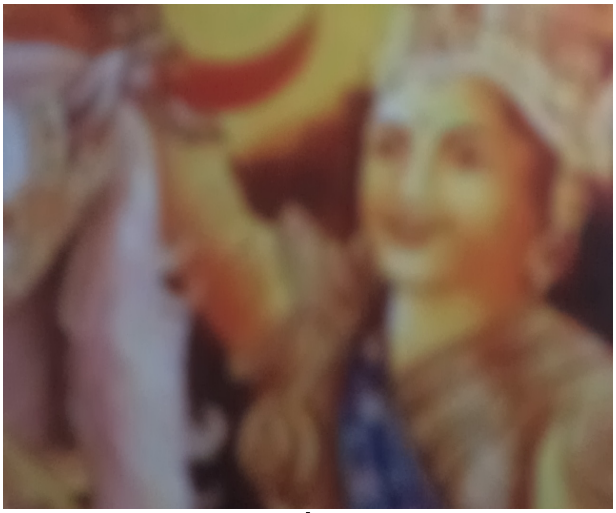

झांसी

संभागीय कृ-ि परीक्षण एवं प्रदर्शन केंद्र

श्री वी.के. सचान जी कृषि वैज्ञानिक संभागीय कृषि परीक्षण तथा प्रदर्शन केंद्र, कृषि विभाग, कृषि भवन, सिविल लाइन झांसी उत्तरप्रदेश मोबाइल 09451936061 परिवर्तन करने के लिए पूरी तरह से सक्रिय हैं.

कामधेनु का सम्मान

कामधेनु का सम्मान करने के लिए किसानों को प्रशिक्षण दे रहे हैं. समाधि खाद तैयार करने के लिए पुस्तक प्रकाशित कर चुके हैं.

कठोर कानून

महारानी लक्ष्मीबाई ने अपने संपूर्ण जीवन में गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए झांसी में बहुत ही कठोर कानून बनाये थे. रानी लक्ष्मी बाई के द्वारा झांसी राज्य बचाने के लिए अंग्रेजों के विरोध में संगठित प्रयत्न करने के कारण ही झांसी पूरे विश्व में प्रसिद्ध है. वर्तमान समय में जी टीवी में झांसी की रानी धारावाहिक भी दिखाया जा रहा है जिसमें भारत की जनता को रानी लक्ष्मीबाई के जीवन के बारे में बहुत ही रोमांचक तरीके से बताया जा रहा है.

भरारी

थारपारकर नस्ल का विकास

उत्तरप्रदेश में देशी नस्ल की गायो की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है. मात्र साढ़े दस रु. में एक लीटर गोमाता का दूध झांसी में लोगों को उपलब्ध करवाया जा रहा है. गोपालन को बढ़ावा देने के लिए सरकारी जमीन पर उत्तरप्रदेश सरकार के द्वारा बहुत ही अच्छा प्रयत्न किया गया है. बहुत बढ़िया सांढ सूरतगढ राजस्थान से लाये गये हैं.

हरा चारा उत्पन्न कर भरपेट गोवंश को खिलाया जाता है. दूध देने वाली गोमाता को बहुत ही अच्छा दाना खिलाया जाता है. भरारी में भी राजस्थान की सुप्रसिद्ध थारपारकर नस्ल का विकास कई सालों से किया जा रहा है. भरारी फार्म में थारपारकर गोमाता के द्वारा दूध अधिकतम 20 लीटर तक एक दिन में देने का किर्तीमान है.

ग्रासलैंड

झांसी में 1400 एकड़ भूमि पर ग्रासलेंड में गीर, साहीवाल, लाल सींधी, थारपारकर नस्ल का सुधार का कार्य सरकार के द्वारा किया जा रहा है. बहुत बढ़िया सांढ विकसित किये जा रहे हैं. कोमल हरा चारा गोवंश के विकास करने के लिए उगाया जाता है.

अग्निहोत्र

आचार्य श्री श्याम बिहारी गुप्त जी 9889196787 आयु 48 साल विद्युत अभियंता, अपने ससुर श्री राधेश्याम गुप्ता के साथ में रहकर कामधेनु कल्याण किसान भवन, राजघाट कोलोनी के पास में, नन्दनपुरा, झांसी में कामधेनु

विश्वविद्यापीठ की स्थापना 2006 में झांसी से 20 किलो मीटर दूर अम्बवाय जिला झांसी 9455638288, 9473618517 में कर चुके हैं.

श्री जगदीशजी तथा श्री विनोद जी, लोकेन्द्र विनोद यादव, प्रमोद चोरसिया, बानसिंह अहिरवार एवं 10 सहयोगियों के साथ में बुंदेलखंड में हर गांव में कामधेनु विश्व विद्यापीठ की इकाई की स्थापना करने के लिए सक्रिय हैं. रहने की व्यवस्था नहीं है इसलिए गांव गांव में जाकर किसानों को प्रशिक्षण दे रहे हैं.

वर्तमान में 2.33 एकड़ भूमि पर 200 गोवंश रख सकते हैं. 200 पेड़ उगाकर एक एकड़ में उड़द, मूंग, तिल, ग्वार, ज्वार, बाजरा, गेहूं, सब्जियां उगाते हैं.

5 कर्मचारी वर्तमान में 61 देशी गोवंश को 2 स्थानों में रखकर कुल 6 लाख खर्च कर 50 उत्पाद बनाते हैं. 5 लाख साल भर में पंचगव्य महो-ाधियों से प्राप्त कर रहे हैं.

वर्तमान में आचार्य जी स्वयं नियमित अग्निहोत्र करते हैं तथा योग, ध्यान, प्राणायाम, अग्निहोत्र बच्चों के बीच में नियमित करवा कर जागृति उत्पन्न कर रहे हैं.

रा-ट्रीय अहिंसा मंच के अंतर्गत लोकसभा चुनाव सोनिया गांधी के विरोध में रायबरेली में लड़ चुके हैं.

15 सालों से रा-ट्रीय स्वयं सेवक संघ के साथ में संघ-र् कर रहे हैं. किसानों के साथ में रहकर उनके यहां पर गाय रखवा कर गोबर का संपूर्ण उपयोग करने के लिए गोबर गैस संयंत्र स्थापित कर गोबर गैस स्लरी का उपयोग खेती में करवाने के लिए समझा रहे हैं.

गोवंश संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए पंचगव्य औ-ाधियों को बहुत बड़ी मात्रा में तैयार कर झांसी तथा भोपाल में विक्रय कर तथा जैविक खेती एवं अग्निहोत्र कृ-ि के बारे में किसानों को संपूर्ण मार्गदर्शन करने के लिए सभी प्रकार की जैविक खादें, अग्निहोत्र से संपूर्ण चिकित्सा करवाने के लिए पूरी तरह से सक्रिय हैं.

गायत्री शक्तिपीठ

गायत्री शक्तिपीठ आंतियाताल झांसी के द्वारा गोवंश संवर्धन करने के लिए जड़ीबूटी खाने वाली काली बछियाओं का ताजा गोमूत्र सुबह उठकर वितरित किया जाता है. गोमूत्र से रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होने के कारण ही गोमूत्र की मांग निरन्तर तेजी से बढ़ रही है. हर घर में गोमाता के घी से नियमित रुप से हवन करवाने का कार्य वैदिक मंत्रों के साथ में किया जा रहा है. विद्यालयों के अंदर अध्ययन करने वाले छात्रों के अंदर गोवंश के प्रति प्रेम की भावना विकसित करने के लिए प्रतियोगिता करवायी जा रही है.

भरारी से मात्र 10 रु. 30 पैसे लीटर गोमाता का दूध खरीदकर दूध तथा पंचगव्य वितरित किया जा रहा है. गायत्री शक्तिपीठ में साहित्य गोवंश के संवर्धन का उपलब्ध है. गोवंश रक्षण करने के लिए भी जागरुकता के साथ संगठित प्रयत्न किया जा रहा है. श्री रमेश उपाध्याय जी गोवंश के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं तथा वर्तमान में गोवंश के महत्व को पूरी तरह से परिजनों में भरने के लिए गोमूत्र की दवाएं तैयार करवा रहे हैं. श्री रमेश जी सम्मेलनों, सेमिनारों, प्रदर्शनी, शिविरों में सक्रिय रहकर कार्य कर रहे हैं.

कानपुर

पंचगव्य

मोबाइल 09984211112 में राजस्थान पथमेड़ा की पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. की सभी वस्तुए उपलब्ध हैं.

गोवंश का विकास

अखिल विश्व गायत्री परिवार

कानपुर में अखिल विश्व गायत्री परिवार के द्वारा गोवंश के विकास करने के लिए दीपयज्ञ एवं नियमित हवन के माध्यम से प्रयत्न जारी है.

गोविन्दनगर

स्वर्गीय श्री निहाल जी तनेजा ब्रहमचारी के द्वारा कानपुर में गोविन्दनगर में गोरक्षा प्रकल्प विश्व हिंदु परि-ाद के द्वारा चलाया जा रहा है जिसके अंतर्गत गोरथ में बहुत बड़े क्षेत्र में गोवंश के बारे में विस्तार से बहुत सारे पत्रक एवं पुस्तकें वितरित की जा रही हैं. बाहर से आने वाले गोवंश सेवकों के रुकने एवं भोजन एवं प्रशिक्षण के लिए बहुत ही सुंदर व्यवस्था है.समय समय पर बैठकें कर गोवंश के विकास करने के लिए संगठित प्रयत्न किये जाते हैं. भारत में होने वाले सम्मेलनों में भाग लेने के लिए प्रतिनिधि यहां से जाते हैं. श्री निहाल जी तनेजा ने गोवंश संरक्षण करने के लिए आमरण अनशन कई बार किया है. श्री उमेश पोरवाल जी जैसे बजरंग दल के कई कार्यकर्ताओं के सहयोग से गोवंश को कटने से बचाकर गोवंश रक्षा केंद्रों की भी नींव रखी है.

कानपुर गोशाला सोसायटी

अनुसंधान

कानपुर में भी श्री पुरु-ोत्तम जी तो-ानीवाल के नेतृत्व में 12 सालों से गोवंश के विकास करने के लिए कार्य चल रहा है.

कामधेनु साहित्य, स्मारिका, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, सीडी, डीवीडी के माध्यम से गोवंश की वैज्ञानिक जानकारी दी जा रही है. गोवंश के रक्षण करने के लिए वैज्ञानिक आधार तैयार करने में भौती की प्रमुख भूमिका है. भौती में बहुत बड़े क्षेत्र में अनुसंधान के कार्य चल रहे हैं. भौती में बहुत सारे समर्पित गोवंश सेवकों को नियमित रोजगार मिल रहा है.

गोशालाओं के स्वावलंबन करने के लिए साल भर कम से कम 7 दिनों का प्रशिक्षण भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से दिया जा रहा है. बाहर से आने वाले व्यक्ति के लिए हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध है.

प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद में कार्य करने के लिए अनुकूल अवसर उपलब्ध हैं. खादी ग्रामोद्योग, कपार्ट जैसी अनेकों संस्थाएं भौती में प्रशिक्षण के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध करवा रही हैं.

पूरे भारत के समर्पित कार्यकर्ता गोशाला के स्वावलंबन का प्रशिक्षण ग्रहण करने के लिए आते रहते हैं.

वर्तमान में गोवंश के गोमूत्र एवं गोमय का अधिकतम उपयोग करने के लिए सबसे अधिक उत्पाद तैयार करने का कार्य किया जा रहा है. गोवंश को उसके गोमूत्र एवं गोमय से ही पूरी तरह से आत्म निर्भर बनाना संभव हो गया है जिससे जीवन भर गोवंश आराम से जीवित रह सकता है.

कामधेनु प्रसाद

गोमाता के दूध से पेड़े तैयार कर बहुत ही मंहगे बिक्री किये जाते हैं. 400 से 600 रु. तक आराम से बिक रहे हैं. गोमाता के दूध से मिठाई तैयार करने की परम्परा है. सामान्य दूध के पेडे वर्तमान में बाहर सस्ते हैं. गोमूत्र 80 प्रतिशत उपयोग कर हानिरहित फिनाइल तैयार की गयी है.

पंचगव्य महो-ाधियां

गोमूत्र का उपयोग कर घरेलू कार्य करने के लिए रिचार्ज करने वाली बेट्री तैयार की गयी है. गोमूत्र का उपयोग फिनाइल में करने पर गोमूत्र की मांग बढ़ रही है.

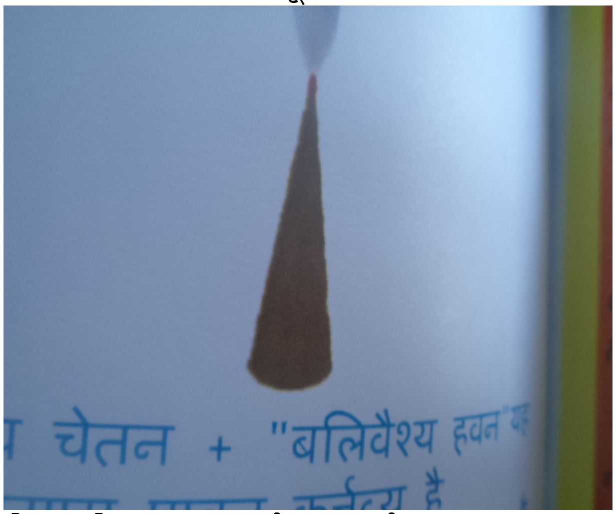

गोमय से कागज, पर्यावरण वर्धक धूप, मच्छर मारने की कोइलें, परमाणु विकिरण को सोखने वाला डिस्टेम्पर, टाइल्स, कवेलू, सीएनजी गैस, गोबर गैस, जैविक खादें, बर्तन मांजने की राख, गोवंश के दूध, मूत्र एवं गोबर से 50 लाख रु. के अनुसंधान केंद्र में अनुसंधान कर बैल से चलने वाले संयंत्र, पंचगव्य दवाएं, तैयार की जा रही हैं. गोमूत्र से ठंडा पेय तैयार किया गया है.

भारत के हर कोने में होने वाले सम्मेलन, प्रदर्शनी, भागवत कथा जैसे अनेक कार्यक्रम में स्टाल लगाये जाते हैं. स्वामी रामदेव जी कानपुर गोशाला के ही उत्पाद बहुत बड़ी मात्रा में खरीद रहे हैं.

देशी नस्ल के विकास करने के लिए कानपुर गोशाला सोसायटी 55/112, जनरलगंज, कानपुर 208001 दूरभा-ा 0512-2540526, 23116335, मोबाइल 09415050805 की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है.

बरेली

श्री विशाल अग्रवाल 09267225094 पता सी-78, चंद्रपुरी प्रेमनगर, बरेली दसवी पढ़ रहे हैं तथा 14 साल की आयु में गाय को कटने से बचने के लिए संगठित प्रयत्न पर जोर दे रहे हैं तथा गंगा की रक्षा के लिए भी विचार कर रहे हैं.

इज्जतनगर

दूध उत्पादन में वृद्धि

1889 से गोवंश को बढ़ावा देने के लिए एशिया की सबसे बड़ी संस्था की नींव भारत सरकार ने रखी है. दूध उत्पादन के लिए लगातार अनुसंधान किए गये हैं. उत्तरप्रदेश में डा. अतुल कुमार सिंह तोमर वरि-ठ वैज्ञानिक व प्रभारी पशुअनुवांशिकी एवं प्रजनन अनुभाग भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान इज्जतनगर बरेली 243122 मो. 09412288343 में 85 गोवंश थारपारकर तथा 7 सांड जैसलमेर से लाये गये हैं उनके लगातार प्रयत्नों के कारण ही 4 सालों में दूध का उत्पादन बहुत बढ़ गया है.

किसान मेला

हर साल किसान मेला 1 से 3 नवम्बर 2007 को आयोजित किया गया है जिसमें उत्तरप्रदेश के किसानों को गोपालन के बारे में 40 विभाग के द्वारा 3 दिनों तक सम्मेलन करके समझाया जायेगा. वीडियो सीडी, डीवीडी, पुस्तकें, स्मारिकाएं, पत्रक, मासिक पत्रिकाएं आदि के माध्यम से देशी गोवंश के बारे में विस्तार से समझाया जायेगा.

सम्मेलन

6 एवं 7 मई 2007 को गोवंश में जैव विविधता एवं उसकी पंचगव्य चिकित्सा में उपयोगिता पर सम्मेलन भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान इज्जतनगर बरेली में किया गया था. सम्मेलन में 300 वैज्ञानिकों को आमंत्रित किया गया था. 2 दिनों तक जबरदस्त विचार विमर्श किया गया था. 2 वीडियो सीडी का विमोचन किया गया था. गोवंश एवं पंचगव्य पुस्तक का विमोचन किया गया था.

द इंडियन काउ

जुलाई 2004 से इंडियन काउ त्रैमासिक पत्रिका का संपादन डा. रामस्वरुपसिंह जी चौहान संयुक्त निदेशक कैडरेड के द्वारा प्रारंभ किया गया है. द इंडियन काउ का प्रकाशन श्रीमती आशास्वामी जी के द्वारा किया जा रहा है.

इंटरनेशनल जनरल ओफ काउ सांइस

द इंटरनेशनल जनरल ओफ काउ सांइस का प्रकाशन डा. रामस्वरुप सिंह जी चौहान के द्वारा 2005 से प्रारंभ किया गया है. 6 माह में एक बार अंक अंग्रेजी में प्रकाशित किया जाता है. विश्व में भारतीय गोवंश के माध्यम से परिवर्तन करना संभव है यह बात वैज्ञानिक आधार पर इंटरनेट पर भी रखी गयी है.

लखनउ

श्री राधेश्याम गुप्ता जी मोबाइल 9415062474 पता ए-17, सेक्टर-जे, अलीगंज, लखनउ आयु 72 साल में गाय पर पुस्तक लिख चुके हैं. गो सेवा आयोग के अध्यक्ष रह चुके हैं.

गाय को अर्थ व्यवस्था से जोड़ने के लिए तथा गोबर एवं गोमूत्र के औद्योगिक प्रयोग करने के लिए गोवंश विकास प्रको-ठ का 2008 में गठन किया. उसके अध्यक्ष हैं.

श्री शिव नरेश सिंह मोबाइल 9415302662 पता राजीवनगर, धोसियाना, आयु-ी गेस्ट हाउस, लखनउ मेजर पद से सेवा निवृत होने के बाद में गोसेवा करते हैं.

डा. रुद्र प्रताप मोबाइल 9935263123 निदेशक, पशुपालन विभाग, पशुपालन निदेशलय, बादशाह बाग, लखनउ 54 साल की आयु में कान्हा उपवन गायों के लिए शेल्टर है जिसमें सहयोग करते हैं.

श्री उमा कान्त गुप्ता मोबाइल 9415577197 पता आर्यनगर, मलीहाबाद, जिला लखनउ 42 साल की आयु में गोशाला का निर्माण करना चाहते हैं.

कसाइयों से तथा वाहन दुर्घटना से धायल गोवंश की सेवा करते हैं. पंचगव्य के महत्व का प्रचार करते हैं.

श्री अभि-ोक गुप्ता मोबाइल 9026265577 पता श्री अरुण गुप्ता, मिर्जा गंज, मलिहाबाद, लखनउ ने गोशाला की स्थापना की है.

गोशाला को आत्मनिर्भर बनाने के लिए देशी सांड व पंचगव्य महो-ाधियों के निर्माण करने के लिए मार्गदर्शन तथा सहयोग चाहते हैं.

श्री ज्ञान प्रकाश सिंह एवं श्रीमती अमिता सिंह मोबाइल 9839212481 पता 32, स्वरुप विहार, इंद्रानगर डाकघर सीमैप, लखनउ 226015 गोमाता की महिमा जन जन तक पहुंचाने के लिए गोपालमणि जी की गोकथा करा चुके हैं तथा श्री संजय पंडा जी की गो कथा करा रहे हैं.

जीवन में अधिक से अधिक गो कथा कराने के लिए लक्ष्य रखकर सहयोग कर रहे हैं.

श्री गोपेश्वर गोशाला समिति

19 फरवरी 2002 को श्री प्रेमनारायणजी, श्री राधेश्यामजी, श्री दुर्गा प्रसाद जी, स्व. श्री रामबाबूजी के द्वारा श्री गोपेश्वर गौशाला समिति दिन्नी शाह का तालाब पक्का तालाब, मलिहाबाद लखनउ में स्थापित कर चुके हैं.

श्री उमाकान्त गुप्ताजी प्रबन्धक 9415577197 वर्तमान में 125 गाय रखने की क्षमता वाली गोशाला में गोबर से खाद बनाते हैं.

श्री सुनील जी अध्यक्ष 9450019622 52 सदस्यों के साथ में मिलकर 91 देशी गोवंश, 13 दोगले गोवंश, 1 विदेशी गोवंश का विकास करने के लिए संकल्पित हैं.

श्री विश्वनाथजी को-ाध्यक्ष 9935225930 वर्तमान में 3.5 बीघा भूमि पर 100 पेड़ उगाकर 2 क्विंटल हरा चारा प्रतिदिन उगाकर पंचगव्य औ-ाधि से गौशाला को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं.

श्री अभि-ोक गुप्ताजी महामंत्री 9026265577 1,58,000 रु. मासिक खर्च कर कुल 8,10,000 रु. साल में प्राप्त कर 18,000 लीटर दूध उत्पन्न कर प्रयत्न कर रहे हैं.

श्री शैलेन्द्र पांण्डेयजी उपाध्यक्ष 9935065630 कामधेनु सेवा करने के लिए संकल्पित हैं.

सुरभि शोध संस्थान

श्री सूर्यकांत जालान के द्वारा भारतीय गोवंश के संवर्धन करने के लिए, किसानों को बैल उपलब्ध करवाने के लिए, जैविक खेती का प्रशिक्षण देने के लिए राजधानी के कारण ही सुरभि शोध संस्थान की यहां पर स्थापना की गयी है. गाय के दूध के पेड़े, घी, पंचगव्य महो-ाधियां उपलब्ध हैं.

कामधेनु कृपा

श्री राजेश जी दुबे प्रकृति भारती लखनउ के द्वारा कामधेनु कृपा मासिक पत्रिका का प्रकाशन यहां से किया जा रहा है.

किसान सम्मेलन

किसानों को प्रोत्साहन देने के लिए यहां पर सरकार के द्वारा वैज्ञानिक जैविक कृ-ि सम्मेलन 2 से 5 दिनों का हर साल करवाया जाता है.

प्रदर्शनी

सरकार के द्वारा गोवंश को प्रोत्साहन देने के लिए उत्तरप्रदेश के सभी जिलों से गोवंश की प्रदर्शनी पुरुस्कार

वितरण के साथ में हर साल यहां पर 2 दिनों के लिए लगायी जाती है.

गो सेवा आयोग

उत्तरप्रदेश गो सेवा आयोग का मुख्य कार्यालय यहां पर स्थित है. गोवंश के संवर्धन करने के लिए नीति निरधारण किया जाता है.

श्रीमती निधि दीनानी आरोग्यधाम गोशाला सीतापुर रोड लखनउ 09335273438 गोवंश संवर्धन कर रही हैं.

अग्निहोत्र कृ-ि

डा. श्रीमती अंजली पाठक जी लखनउ मोबाइल 09450540363 के द्वारा अग्निहोत्र कृ-ि के माध्यम से किसानों के बीच में जैविक खेती करने के लिए लहर उत्पन्न की गयी है. किसान परिवर्तन करने के लिए पूरी तरह से तैयार है. डा. श्रीमती अंजली पाठक की निरन्तर प्रेरणा से ही युवा किसान श्री प्रकाशसिंह रघुवंशी जी के द्वारा वर्तमान में पूरे भारत में किसानों के लिए निरन्तर अनुसंधान कर चमत्कार किया गया है.

जैविक यात्रा

पूरे भारत में किसानों को आत्महत्या करने से रोकने के लिए अदभुत प्रयत्न किया गया है. उनकी प्रेरणा के कारण ही गांव गांव में जैविक यात्रा आयोजित की गयी है. जैविक यात्रा में बैलों का उपयोग करने के लिए जोर दिया गया है. वर्तमान में किसानों के द्वारा अपनी सुविधा के लिए सूमों का उपयोग किया जा रहा है. गोवंश के विकास करने के लिए सीडी, डीवीडी एवं साहित्य तैयार किया गया है. प्रतियोगिता गांव गांव में करने के लिए तैयारियां की गयी है. 25 लाख किसानों को बीजदान महादान अभियान से जोड़कर नई दिशा दी गयी है. माधव आश्रम भोपाल में सबसे पहले अग्निहोत्र कृ-ि के लिए पहल की गयी थी. माधव आश्रम में किसानों के लिए 24 से 29 अप्रेल 2010 तक जैविक सम्मेलन का आयोजन किया गया है.

प्रकृति भारती

2002

प्रकृति भारती लखनउ के द्वारा 2002 से भारतीय गोवंश को बढ़ावा देने के लिए साल में 1 बार अखिल भारतीय सम्मेलन लगातार आयोजित किये जा रहे हैं.

पहला प्रकृति सम्मेलन दिल्ली में आई. आई. टी. कोम्प्लेक्स में किया गया था जिसमें 23 लाख रु. खर्च किये गये थे. आई आई टी दिल्ली के छात्रों ने बहुत ही उत्साह के साथ में प्रकृति के संतुलन के प्रयत्नों को सराहा था तथा बाहर से आये अतिथियों के स्वागत सत्कार के लिए जी जान से सेवा का कार्य किया था.

केंद्र सरकार के द्वारा अमेरिका में पहला पेटेंट गोमूत्र पर केंसर को दूर करने के लिए किया गया था जिसका पेटेंट नं लगभग ढेड़ साल के बाद जून में मिलने पर सभी में अपार उत्साह मौजूद था.

पहले सम्मेलन में पूरे भारत से आये गोवंश प्रेमी एवं प्रकृति प्रेमी बहुत ही उत्साह के साथ भाग लेने आये थे. सभी ने एक दूसरे से मिलकर अपने अनुभव बताये थे. सभी का पंजीयन कर उन्हें हर साल होने वाले सम्मेलनों में आमंत्रित किया गया है.

सामुहिक चर्चा

अलग अलग वि-ायों पर सामुहिक चर्चा करने के लिए अलग अलग कक्षों की व्यवस्था की गयी थी. प्रत्येक वर्ग में 3 घंटे तक विस्तार से विचार प्रस्तुत किये गये थे. 2002 से गोवंश के विकास में परिवर्तन प्रारम्भ हुए हैं. सामुहिक प्रयत्न से गोवंश का सम्मान प्रारम्भ हुआ है. सामुहिक चर्चा के कारण ही गोवंश संवर्धन करने के लिए दिशा तय हो.

प्रकृति प्रमियों के लिए निःशुल्क स्मारिका का प्रकाशन किया गया था जिसमें गोवंश के हर पहलू को बताया गया है. स्मारिका बिक्री के लिए वर्तमान में लखनउ में श्री राजेश दुबे जी के पास में उपलब्ध है. गोवंश रक्षा करने के लिए नये उपाय पर चिंतन किया गया है. निःशुल्क स्टोल पर पूरे भारत के गोवंश अनुसंधान करने वालों ने पंचगव्य दवाओं, जैविक खादों, फसलरक्षक, बैल चालित संयंत्र, गोवंश आहार, अन्य साहित्य आदि का विक्रय किया गया है.

2003

दूसरा सम्मेलन दिल्ली में ही 2003 में एक बार फिर से किया गया था. प्रकृति 2002 में भाग लेने वालों को आमंत्रित किया गया था. प्रकृति भारती के द्वारा

आयोजित दूसरे सम्मेलन में भाग लेने वालों में बहुत ही अधिक उत्साह था.

गोवंश की रक्षा करने के लिए विद्वान संगठित होकर प्रयत्न करने का संकल्प लिया. प्रदर्शनी में गोवंश आधारित उद्योगों को बताने का प्रयत्न किया गया था.

पहले सम्मेलन में किये गये परिणामों के बाद में नये लक्ष्य रखकर कार्य प्रारम्भ किया गया था. परिवर्तन लाने के लिए प्रगति को बतलाने के लिए स्मारिका का प्रकाशन किया गया था.

2004

2004 में 80 लाख रु. खर्च कर तीसरा गोवंश आधारित प्रकृति भारती का सम्मेलन भोपाल में दशहरा मैदान में आयोजित किया गया था. गोवंश के विकास करने अपने आप में अच्छा प्रयत्न था.

देश भर से विद्वानों को आमंत्रित किया गया था. सरकार के भरपूर सहयोग के कारण ही प्रकृति के संतुलन करने के लिए गोवंश आधारित उद्योगों की संभावनाओं पर बहुत ही विस्तार से चर्चा की गयी थी.

स्मारिका का प्रकाशन कर निःशुल्क वितरण किया गया था. स्मृति चिन्ह के रुप में प्रत्येक भाग लेने वाले को बैग दी गयी थी. रहने तथा नाश्ते एवं भोजन की बहुत ही सुंदर व्यवस्था की गयी थी. प्रत्येक भाग लेने के लिए आये प्रतिनिधि से भी 200 रु. लिए गये थे.

प्रदर्शनी में स्टोल का 2000 रु. न्यूनतम गोशालाओं के मालिकों से उनके उत्पादों के प्रदर्शन करने के लिए लिया गया था. गोमूत्र से तैयार पंचगव्य दवाओं का महत्व जनसाधारण में लोकप्रिय हुआ.

2005

2005 में भी प्रकृति भारती के द्वारा सरकार के सहयोग से रा-ट्रीय स्तर पर प्रकृति 2005 आयोजित किया गया था. स्मारिका का प्रकाशन किया गया था. स्मारिका के माध्यम से प्रकृति भारती के प्रयत्नों की समीक्षा करना संभव था.

हर साल की तरह ही पूरे भारत के चिंतक एकत्रित होकर सामुहिक मंथन करने लगे. ओजोन परत में तेजी से बढ़ रहे छेद के कारण महाविनाश को रोकने के लिए संगठित स्तर पर प्रयत्न करने के लिए गंभीरता के साथ चिंतन किया गया था.

2006

2006 में भी प्रकृति भारती के द्वारा प्रकृति 2006 का आयोजन किया गया था.

2007

2007 में भी प्रकृति भारती के द्वारा प्रकृति 2007 का आयोजन किया गया था.

2008

इंदिरा गाधी कृ-ि विश्वविद्यालय रायपुर छतीसगढ़

23 एवं 24 जनवरी 2008 में छतीसगढ़ में श्री राजेश दुबे जी के द्वारा इंदिरा गांधी कृ-ि महाविद्यालय रायपुर में सम्मेलन किया गया था. गोवंश के विकास में कमी को गंभीरता के साथ में उठाया गया था.

प्रकृति 2008 का संपूर्ण खर्च इंदिरा गांधी कृ-ि विश्व विद्यालय के द्वारा उठाया गया था. हर साल की तरह ही पूरे भारत के विशे-ज्ञों के द्वारा जागरुकता के साथ में भाग लिया गया था.

प्रकृति के द्वारा मानव की गलतियों के कारण विनाश के कारण गंभीर चिंतन किया गया था. गोवंश की रक्षा करने के लिए संगठित होकर वैज्ञानिक अनुसंधानों पर पूरा जोर दिया गया है.

50 से अधिक स्टोल प्रदर्शनी में निःशुल्क लगाये गये थे. गोमाता का पवित्र घी, पंचगव्य एवं महापंचगव्य घी उपलब्ध करवाया गया था. दूर दूर से चिंतक आये थे. कामधेनु साहित्य एवं सीडी डीवीडी के माध्यम से प्रकृति के विनाश को रोकने के लिए प्रयत्न किया गया था.